ऋग्वेद के सम्वाद सूक्तों का आलोचनात्मक अध्ययन
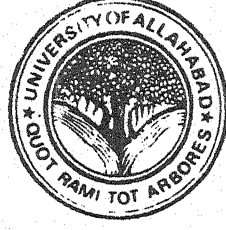
शोध-प्रबन्ध

[इलाहाबाद – विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि हेतु प्रस्तुत]

निर्देशन

डा० हरिशङ्कर त्रिपाठी
एम०ए०डी०फिल०
रीडर, संस्कृत-विभाग
इलाहाबाद – विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता

अनूप कुमार सिंह
(एम०ए०बी०एड०)
संस्कृत-विभाग
इलाहाबाद – विश्वविद्यालय

१९९०

संवाद सूक्तों की सूची

पुरोवाक्

फलागम किसी भी कार्य की अन्तिम परिणति होती है। निरन्तर कठिन अध्यवसाय, चिन्तन व मनन के फलस्वरूप आज शोध कार्य अपनी अन्तिम परिणति के रूप में प्रस्तुत है।

विश्वविद्यालयी छात्रजीवन में प्रवेश करते ही यशस्वी प्राध्यापकों के व्याख्यानों एवं उनके सान्निध्य से सारस्वत उपासना करने की निरन्तर प्रेरणा मिलने लगी और शनैः शनैः सारस्वत उपासना की पवित्र भावना भी दृढ़ होती गयी।

यह सर्वविदित है कि विश्ववसुधा पर भारतवर्ष की गौरवमयी प्रतिष्ठा में वैदिक एवं संस्कृत वाङ्मय तथा भारतीय संस्कृति का अद्वितीय योगदान रहा है। तथा यह भी सत्य है कि भारतीय साहित्य और संस्कृति के सर्वोन्मुखी विकास में प्रयाग की पावनी वसुन्धरा, त्रिपथगा की अनिर्वचनीय महिमा, भरद्वाज, कुमारिलभट्ट सारस्वत उपासकों का विश्वविश्रुत योगदान सर्वातिशायी रहा है। यही नहीं आज भी भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में प्रयाग एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय का स्थान

अद्वितीय है । सौभाग्य से ऐसे पुण्यित ज्ञानमयी प्रयाग में शिक्षा प्रारम्भ करके तथा इलाहाबाद-विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि को प्रथम श्रेणी में अर्जित करने के पश्चात् सारस्वत उपासना के अग्रिम चरण के रूप में चिरकाल से अपरिमित तथा अध्ययन काल से ही वैदिक वाङ्मय के अनुशीलन में विशेष रुचि जागृत होने के फलस्वरूप ज्ञानरश्मियों मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की प्रतिभा जैसी वाक् की ज्योतिर्मयी ज्ञानराशि ऋग्वेद पर शोध करने की उत्कण्ठा सहसा: जाग ही उठी और श्रद्धेय गुरुवर्य डा० हरिशङ्कर त्रिपाठी (रीडर, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के निर्देशन में "ऋग्वेद के संवाद सूक्तों का आलोचनात्मक अध्ययन" पर शोध कार्य प्रारम्भ करने का निर्देशन मिला ।

शोध प्रबन्ध के लेखन में पूज्यनीय गुरुवर डा० हरिशङ्कर त्रिपाठी के प्रति मैं कृतावनत हूँ जिन्होंने यथा समय अपेक्षित वैदुष्यपूर्ण निर्देशन के द्वारा शोधकर्ता के मार्ग को न केवल प्रशस्त किया अपितु शोध प्रबन्ध में अपेक्षित संशोधन एवं परिवर्तन करके सुयोग्य निर्देशक एवं गुरु के महनीय दायित्व का पूर्णरूपेण निर्वाह किया । अतएव एतदर्थ पूज्यतम श्रीगुरुदेव के पुनीत चरणों में अतीव कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ ।

अध (डॉ० सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) की उदारता एवं अनुकम्पा के लिए एक विनीत शिष्य के रूप में विनम्रतापूर्वक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

मैं श्रद्धेय कुलपति जी के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ तथा उन समस्त गुरुजनों (विभागीय) के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय समय पर अपने बहुमूल्य परामर्शों एवं सत्प्रेरणाओं के द्वारा शोधकर्ता के मार्ग को प्रशस्त किया ।

मैं अपने पूज्य पिता एवं माता (श्री मुनीश्वर सिंह एवं श्रीमती प्रभारानी) के प्रति विशेष रूप से श्रद्धावनत हूँ जिन्होंने समुचित शिक्षा दीक्षा की सुव्यवस्था करने का महत्वपूर्ण दायित्व वहन किया और जिनकी परम कृपा एवं वात्सल्यमयी प्रेरणा से ही यह शोध कार्य पूर्ण करने में मैं समर्थ हो सका हूँ । एतदर्थ मैं उनके अनिर्वचनीय ऋण वात्सल्य का आजीवन ऋणी रहूँगा ।

अब मैं अपने अग्रज प्रकाश श्री अनिल कुमार सिंह, भाभी श्रीमती शशि सिंह एवं भगिनी द्वय (किरण सिंह एवं ऊषा सिंह) एवं अपनी भार्या श्रीमती मिथिलेश सिंह के सहयोग का आभारी हूँ जिन्होंने समय समय पर हमें वाचिक प्रेरणा प्रदान की ।

इस शोध प्रबन्ध के सम्पादन में जिन मनीषियों के ग्रन्थों का मैंने उपयोग किया है उन सबके प्रति मैं कृतज्ञावनत हूँ ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय लाइब्रेरी, गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, केन्द्रीय पुस्तकालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पब्लिक लाइब्रेरी आदि के माध्यम से शोध कार्य में जो पुस्तकीय सहायता उपलब्ध हुई है उनके अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अन्ततः शोध प्रबन्ध के स्वच्छ, सुन्दर एवं आकर्षक टंकण के लिए श्री सत्यनारायण यादव, वरिष्ठ सहायक, सेवा अनुभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय को भी साधुवादपूर्वक धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ ।

अतः संकटग्रस्त वैदिक वाङ्मय की अस्मिता को दृष्टिपथ रखते हुए बौद्धिक आलोचना भाषा की प्रगति के उद्देश्य एवं प्रस्तुत तथ्य को संस्कृत प्रेमी जनों की सेवा में सस्नेह समर्पित करता हूँ ।

विनयावनत

दिनांक 15-5-92

अनूप कुमार सिंह

(अनूप कुमार सिंह)

विषय-सूची

तृतीय-भाग

प्रथम-भाग

(इन्द्र-मरुत्)

यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 165वाँ सूक्त है। इस सूक्त में इन्द्र मरुतों से वाद विवाद करते हैं। जिन्होंने वृत्रासुर के विरुद्ध रण संघर्ष में इन्द्र का साथ छोड़कर अपने को उनकी दृष्टि में अपमानित कर लिया था, किन्तु वो अन्ततोगत्वा उनके क्रोध को शान्त करने में सफल हुए थे।[1]

सन् 1869 ई० में मैक्समूलर[2] ने इस सूक्त के प्रसंग में एक अद्भुत ही रोचक सूक्ति प्रस्तुत किया था। उनका अनुमान है कि "मरुतों की आराधना में किये गये यज्ञों के अवसर पर इस संवाद का पाठ होता था अथवा सम्भवतः दो दलों द्वारा इसका अभिनय किया जाता था, एक दल इन्द्र का प्रतिनिधित्व करता था और दूसरा मरुतों एवं उनके अनुयायियों को"। 1990 ई० में इस सूक्ति को प्रोफेसर लेवी ने अनुमोदन के साथ दोहराया।"[3]

1- संस्कृत नाटक - ए०बी० कीथ

2- SBE, XXXII. 182 f

3- TI. 1.307.f

इन्द्र और मरुतों का अटूट सम्बन्ध है । इन्द्र मरुतों के बल से ही वृत्र को मारते हैं । शतपथ ब्राह्मण (4/3/3/7) में इन्द्र मरुतों को बुलाते हुए कहते हैं कि तुम मेरे पास ही रहो, तुम्हारे बल से मैं वृत्र को मारूँगा —

"उप मा वर्तध्वम् । युष्माभिर्बलेन वृत्रं हनानीति" ।

मरुतों की इन्द्र के साथ स्थायी और दृढ़ मैत्री है । वृत्र से हुए इन्द्र के युद्ध के समय मरुतों ने उसे प्रोत्साहन दिया । शंबर वध के समय उसकी सहायता की और तब से सदा उसके साथ रहकर प्रसन्न रहते हैं ।[1]

मरुतों का तादात्म्य मनुष्यों की श्वास प्रश्वास की वायु से किया गया है । और मरुत इन्द्र के सम्बन्ध के विषय में कहा गया है कि जब इन्द्र का वृत्र से युद्ध हुआ तो सभी देवों ने उसे छोड़ दिया । केवल मरुत उसके पास रहे क्योंकि मरुत श्वास प्रश्वास हैं और वे मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट साथी हैं ।[2] उस समय भी इन्द्र इनसे युक्त रहा —

1- ऐ० ब्रा० 3/2/9

2- ऐ० ब्रा० (3/2/5)

"इन्द्रं वै वृत्रं जघ्निवांसं नास्तृतेति मन्यमानाः सर्वा देवता अजहुः । तं मरुत एव स्वापयो नाजहुः । प्राणा वै मरुतः स्वापयः । प्राणाः हैवैनं तं नाजहुः ।" ।

इसी _ऐतरेय ब्राह्मण_ में अन्यत्र एक छोटी सी कथा में कहा गया है कि इन्द्र ने वृत्र वध के समय सभी देवों से अपनी सहायता करने को कहा । जब वृत्र ने सभी देवों को अपनी ओर आते देखा तो उसने घोर गर्जना की जिससे सब देवता भाग गये । केवल मरुत इन्द्र के साथ रह गये और उन्होंने इन्द्र का उत्साह बढ़ाया । तब इन्द्र वृत्र का वध करने में सफल हुए ॥

(इन्द्र-अगस्त्य)

यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 170वाँ सूक्त है। इसमें इन्द्र और अगस्त्य के बीच वाद विवाद होता है। इसमें दोनों के बीच जो बात होती है वह आध्यात्मिक तत्वों से युक्त ही हुई है। (ऋ0 1·170·2) में अगस्त्य कहता है कि " हे इन्द्र तुम हमारा वध क्यो करना चाहते हो, हमें जो संघर्ष करना पड़ रहा है उसमें तु हमारा वध न कर। (ऋ01·170·3) में इन्द्र अगस्त्य से कहता है कि हे भाई तु मेरा मित्र होकर भी अपने को मेरे में आत्मसात नहीं करता है इसका कारण मैं जानता हूँ" यहाँ पर मित्र और भाई दोनों का ही प्रयोग इस ऋचा में किया गया है। इसका आध्यात्मिक अर्थ है कि "अगस्त्य इन्द्र का भाई इस तरह है कि ये दोनों एक परम सत्ता के पुत्र हैं। मित्र इस तरह है कि ये दोनों एक प्रयत्न में सहयोगी होते है तथा दिव्य प्रेम में, जो देव और मनुष्यों को जोड़ने वाला है वे दोनों एक होते हैं "।

इस प्रकार इस सूक्त में जो अचिर, भूत विचार है उस का सम्बन्ध आध्यात्मिक प्रगति की एक अवस्था से है, और यह अवस्था वह है जब मनुष्य को आत्मा केवल विचार शक्ति के द्वारा ही शीघ्रता के साथ आगे बढ़कर पार हो जाना चाहता है ताकि समय के पहले ही — सचेतन क्रिया की जो क्रमश: एक के बाद दूसरी अवस्थायें आती हैं उन सबके पूर्ण विकास पायें बिना ही- वह सब वस्तुओं के मूल कारण (स्रोत)

तक पहुँच जाय । देव जो मानव विश्व और विराट विश्व दोनों के शासक हैं उनके इस प्रयत्न का विरोध करते हैं और मनुष्य की चेतना के अन्दर एक जबरदस्त संघर्ष चलता है जिसमें एक तरफ तो अपनी अहंभाव प्रेरित अतिउत्सुकता से युक्त व्यक्तिगत आत्मा होता है और दूसरी तरफ विश्व शक्तियाँ जो विश्व के दिव्य उद्देश्य को पूर्ण करना चाह रही होती हैं । ऐसे क्षण में ऋषि अगस्त्य की, अपनी आन्तरिक अनुभूति में, इन्द्र से भेंट होती है । इन्द्र "स्वः" का अधिपति है, और स्वः है विशुद्ध प्रज्ञा का लोक । दिव्य सत्य में पहुँचने के लिए आरोहण करते हुए आत्मा को इस लोक के बीच में से होकर गुजरना होता है ।।

इसकी व्याख्या संवाद इसी रूप में वर्णित की गई है ।

(अगस्त्य-लोपामुद्रा)

यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 179वाँ सूक्त है। "अगस्त्य लोपामुद्रा विषयक सूक्त के विवेचन में, क्योंकि यह फसल कट जाने के बाद किया जाने वाला एक प्रजनन सम्बन्धी- अनुष्ठान बन जाता है। "लोपामुद्रा की व्याख्या की जाती है -- "जिस पर लोप की मुहर लगी हुई है"। यह अद्भुत निर्वचन वैदिक भाषा में असंगत है। यह सूक्त ही "पतिव्रत धर्म को छोड़ कर रति का आनन्द लेने वाली इस स्पष्ट वैकल्पिक अर्थ[1] के कहीं अधिक अनुकूल पड़ता है।

"पूर्वीः" (से आरम्भ) दो ऋचाओं (ऋग्वेद 1.179.1.2) में उसने (लोपामुद्रा) ने अपना अभिप्राय व्यक्त किया। तब आनन्द प्राप्त करने की इच्छा से अगस्त्य ने उसे दो बाद की ऋचाओं (ऋग्वेद 1,179,3-4) से सन्तुष्ट किया।

(ऋषि के) शिष्य ने अपने तप[2] के प्रभाव से इन दोनों (अगस्त्य और लोपामुद्रा) की परस्पर आनन्द प्राप्त करने की इच्छा

1- Oldenburg, GGA, 1909 ,77, no 4

2- तु0की0 सर्वानुक्रमणी, 4.47."संवाद तपसावेद", और 4.50 "विज्ञाय ....तद्भावम् " ।।

की सम्पूर्ण स्थिति को जान लिया, किन्तु यह विचार करके कि उसने इस प्रकार बातों को सुनकर[1] एक पाप किया है। उसने अन्तिम दो ऋचाओं (5वीं) व (छठवीं) का गायन किया।

(शेवांश)[2] में गुरु और उनकी पत्नी दोनों ने उसकी प्रशंसा और आलिङ्गन करते हुए उसके माथे का चुम्बन किया और दोनों ने ही उससे कहा कि हे पुत्र! तुम निष्पाप हो॥

इस प्रकार इस कथा का वर्णन प्राप्त होता है॥

1- तु०की० सर्वानुक्रमणी: "संवादं श्रुत्वान्तेवासी ब्रह्मचारीन्त्ये ....अपश्यत्"। और ऋग्वेद 1·179·5 पर सायण "संभोगं संलापं श्रुत्वा तत्प्रायश्चित्तचिकीर्षुर् उत्तराभ्यान् आह।"

2- बृहद्देवता

(विश्वामित्र-नदी)

यह ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 33वाँ सूक्त है। इसमें विश्वामित्र और नदी का संवाद प्रस्तुत किया गया है। इस संवाद सूक्त में 13 ऋचाएँ हैं। आरम्भ की दो ऋचाओं में सतलज और व्यास नदियों का वर्णन है। तृतीय ऋचा में विश्वामित्र द्वारा संवाद होता है और 11वीं ऋचा में उन्हीं के द्वारा संवाद समाप्त होता है। बारहवीं ऋचा में भरतों की सेना के निर्विघ्न नदी पार करने का वर्णन है। 13वीं ऋचा में आशीर्वाद प्रार्थना है इस प्रकार अवशिष्ट 9 ऋचाएँ (3-11) में पूर्वोक्त-संवाद के रूप में गर्भित हैं।

इसमें विश्वामित्र ने भरतों की सेना को पार कराने के लिए सतलज और व्यास नदियों से प्रार्थना की है। नदी की प्रार्थना करना थोड़ी देर ठहरना और पार होना। इन बातों को विश्वामित्र नदी संवाद रूप दे देना उन्हें काव्य का परिच्छेद पहना देने का कला है।[1] अन्तिम स्थान पर इस संवाद को अवलम्ब कराने के अनेक प्रयास भी परिलक्षित होते हैं।

1- वैदिक कविता-हरिमोहन मिश्र

गया है । कारिनाय ने भी अवेस्ता में वर्णित यिम के स्वरूप की वैदिक यम से तुलना करते हुए भाकानुजर के इस मत का व्यापक समर्थन किया है । वैदिक एवं आवेस्तिक प्रमाणों के आधार पर यम को अस्तंगत सूर्य से सम्बन्धित करने वाला मत ही अधिक समीचीन प्रतीत होता है । यदि यम का किसी भौतिक तत्त्व से सम्बन्ध है तो उसी से हो सकता है ।।

यम यमी के इस अनोखे सूक्त की वैदिक कर्मकाण्ड में कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रतीत होती है । आदरणीय गुरुवर प्रो० अरविन्द रनाडकर ने इण्डो ईरानियन जर्नल (हेग, हालैण्ड) भाग 10 (1967) पृष्ठ 1-32 में प्रकाशित Yama and Yamī (R.V.X 10) नामक लेख में सिद्ध किया है कि प्राचीन काल में विभिन्न लैंगिक जुड़वाँ बच्चों की उत्पत्ति को दोषपूर्ण माना था । क्योंकि भाई बहन होते हुए भी वे माता के गर्भाशय में साथ चिपटे पड़े रहते हैं (ऋग्वेद 10/10/5,7) गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्व: सविता समाने योनौ सह शेय्याय) । ऐसे बच्चों की उत्पत्ति पर उनकी शुद्धि के लिए विधिविधान के साथ दो याज्ञिकों द्वारा प्रस्तुत सूक्त का पाठ किया जाता है । प्रो० रनाडकर का मत तर्क प्रतिष्ठित है और इससे सूक्त के अर्थ तथा उद्देश्य पर नया प्रकाश पड़ता है ।।

यम और यमी को ही "यम यमी संवाद सूक्त" का रचयिता

माना जाता है । किन्तु यह संगत नहीं प्रतीत होता । यम और यमी ने छन्दों में संलाप किया होगा यह सम्भव नहीं जान पड़ता । उनके संवाद को बाद के किसी कवि ने काव्यात्म रूप दिया होगा । यम का शब्दार्थ है (जुड़वाँ) । इस आधार पर यम यमी को आद्य मानव और मानवी के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए । आद्य मानव मिथुन से मानवों के जन्म का पूराख्यान ही इस संवाद का मूल रूप रहा होगा । ऋग्वेद का संवाद युग अपने समय की नैतिकता से प्रभावित जान पड़ता है ।

यहाँ जिस आतुरता के साथ यमी उन्मत्त होकर आत्मनिवेदन आरम्भ करती है । और प्रतिवाद असफलता मिलने पर भी जिस प्रकार अपने हृदय के भीतर की परत पर परत उधेड़ती जा रही है वही देखने योग्य है ।

यम-यमी दोनों भाई बहन हैं, <u>सोदर</u> हैं । सोदर होने के नाते ही यमी यम को चाहती है और सोदर होने के नाते ही यम उसे नहीं चाहता । जिस तर्क से आत्मनिवेदन किया जाता है, उसी से उसका प्रत्याख्यान भी होता है, यह विलक्षणता इस संवाद को कुछ अधिक तीखा और गहरा प्रभाव करने वाला बना देता है । आत्म निवेदन के नैराश्य में पर्यवसित होने के कारण दुःख का उच्च पर्व की दृष्टि से ही होता है ।

यह ऋग्वेद की प्रथम काल प्रेरित सूक्त है । तथा पुरूरवा और उर्वशी संवाद आदि सूक्तों की प्राचीनता से ऊपर है । <u>विन्टर-नित्स</u> ने इसको "अद्भुत कलाकृति" कहा है ।[1]

2000 ई0 पूर्व रचित मिस्र के " Aely does passion play " नाटक की कथावस्तु से यम-यमी संवाद की कथा की तुलना की जा सकती है ।

यम की धारणा एक <u>मूर्त मनुष्य</u> के रूप में भी की गई है जो विवस्वान के पुत्र है और पृथ्वी में सभी मनुष्यों के पूर्वज पृथ्वी पर सबसे पहले मरने के कारण देवस्वर्ग अथवा पितृलोक पहुँचे और वहाँ के राजा बन बैठे ।

इस प्रकार यम के पिता विवस्वान थे तथा इनकी माता का नाम सरण्यु है । जो एक यमज (जुड़वाँ) उत्पन्न करने के पश्चात चली गई थी (ऋग्वेद 10/135) में यम को मनुष्यों का पिता (पूर्वज) तथा विश्पति (राजा) कहा गया है :--

---

गत पृष्ठ का शेष

1- वैदिक देवता-उद्भव और विकास -गया चरण त्रिपाठी

2- वैदिक कविता- डा0 हरिमोहन मिश्र

1- M. Vinternitz._ A History of Indian literature (vol. p. 107)

में तो कहा गया है कि —

"प्रथम दिन की बात कौन जानता है । उसे किसने देखा । किसने उसको कहा । मित्र और वरुण का जो यह बृहद्धाम है, उसके विषय में हे मोक्षबन्धनकर्ता यम ! तुम क्या कहते हो ? "

वास्तव में प्रसंग यह है कि जब यमी ने यम से यौन सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा की , तब यम ने उसे अपना भाई बहन का सम्बन्ध बताया ।। (ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि) ।।

> यम एवं यमी का यह संवाद एक पुरातन सम्बन्धी रूपक के रूप में परिणत होता है । जिसमें से मिथुन के समागम का महत्वपूर्ण अंश वैदिक युग की अतिविनीतता के कारण छोड़ दिया गया है । (संस्कृत नाटक-
> ए०बी० कीथ)

इस प्रकार से यम यमी की कथा वर्णित की गई है ।।

* * * *

(इन्द्र-वसुक्र)

यह ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 28वाँ सूक्त है। इस सूक्त में इन्द्र और वसुक्र का कथोपकथन है। इसमें वसुक्र की पत्नी छोटी सी भूमिका अदा करती है। ऋषि की पत्नी इन्द्र को अपना श्वसुर मानती है।[1]

(ऋ0 10/28/2) में इन्द्र कहता है कि- पुत्रवधु ! मेरा निवास हमेशा पृथ्वी के विस्तृत तथा ऊँचे प्रदेश में रहता है। तथा मैं उसकी रक्षा करता रहा हूँ जो मेरे लिए सोम को प्रदान करता है।

(ऋ010/29/4) में ऋषि कहता है कि हे इन्द्र-- मेरी जो भी इच्छा हो वही हो जाया करे अर्थात इच्छा मात्र से कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाया करे मुझ पर ऐसी कृपा रखिये। मैं आपके लिए सोम को प्रदान करता रहूँगा।

(ऋ0 10/28/5) में इन्द्र को मेधावी और प्राचीन कालीन कहा गया है। ऋषि इन्द्र के समक्ष अपनी निर्बलता को प्रकट करता है वह कहता है कि मैं तो तुम्हारी स्तुति को भी करना नहीं जानता।

1- (ऋ0 10/28/1)

परन्तु लगन के कारण गुणों की चर्चा सुनते हुए कुछ कुछ स्तुति करने लगा हूँ। ऋग्वेद 10.28/6 में इन्द्र स्वयं स्तोतागण के माध्यम से अपनी महानता का बखान करते हैं वे कहते हैं स्तोतागण मेरे विस्तृत कार्य को स्वर्ग से भी महान समझते हैं। वे कहते हैं कि मैं [इन्द्र] का बल इतना है कि वह एक ही समय में हजारों शत्रुओं का मुकाबला करके उनको परास्त कर सकता है।

[ऋ0 10/28/7] में कहा गया है कि ऋषि ने प्रसन्न होकर वज्र से वृत्र को विदीर्ण किया। दानियों को गोधन से सम्पन्न किया। इसलिए देवता लोग मुझे तुम्हारे समान ही पुरातन वीर और काम्य फल का देने वाला समझते हैं।

8वीं ऋचा में कहा गया है कि देवता लोग जिस मेघ में जल देखते हैं। उसी को विद्युत से भस्म करके जलवृष्टि करते हैं वही जल श्रेष्ठ नदियों में वर्तमान रहता है।

ऋषि कहता है कि हम जो भी करपाते हैं वह सब इन्द्र की कृपा से ही सम्भव हो पाता है। वह चाहे जो कुछ भी कर दे।। वह कहता है कि यज्ञ के अन्न से जो अपना निर्वाह करते हैं उसके वश में सभी प्राणी हो जाते हैं।

(ऋ0 10/28/12) में इन्द्र को दानवीर भी कहा गया है। तथा जो सोमयाग करके अपना पालन पोषण करते हैं उन्हें श्रेष्ठ कर्मा कहा गया है। इस संवाद सूक्त का वर्णन इसी प्रकार प्राप्त होता है।

(देवता-अग्नि)

यह ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 51वाँ सूक्त है । इस सूक्त में दर्शाया गया है कि देवताओं को भी अपने पास तक मनुष्यों की हवि पहुँचाने का खेदजनक कार्य करते रहने के लिए अग्नि को मनवाने कठिन अध्यवसाय करना पड़ता है ।[1]

इस सूक्त के (ऋ० 10/51/1) में देवता द्वारा अग्नि को "जातवेद:" अर्थात् "उत्पन्न हुओं के जानने वाले" और मेधावी कहा गया है । इस सूक्त में देवता और अग्नि के बीच वाद-विवाद किया गया है । (ऋ०10/51/3) में देवता द्वारा अग्नि का निवास जल और औषधियों में माना गया है । इस सूक्त में हवियों को प्राप्त करने वाला अग्नि को ही स्वीकार किया गया है । इसके तीन और चार (ऋचाओं) में "दश स्थानों में अग्नि के चले जाने" की चर्चा की गयी है । इस दश स्थान की तुलना वेंकट द्वारा (प्राणि शरीर निति दश स्थानानि) अर्थात् शरीर के दश अंगों के साथ की

1-(ऋ० 10/51/3)

है । (ऋ० 10/51/3) में अग्नि को तेजस्वी कहा गया है ।

अग्नि को हव्यवाहक कहा गया है । इसको अजर भी कहा गया है । इस 6वीं ऋचा में देवता कहते हैं कि "नरिष्याः" अर्थात "हमारे द्वारा दी गई आयु से तुम मृत्यु को प्राप्त नहीं होगे तुम अमर हो" । इस सूक्त में "जातवेदः" शब्द का कई स्थानों पर प्रयोग किया गया है ।

इस सूक्त का आध्यात्मिक अर्थ भी किया गया है । इसके अन्तर्गत "घृत "को "तेजस्" का प्रतीक माना गया है ।

(इन्द्र-इन्द्राणी)

यह ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 86वाँ सूक्त है। इस सूक्त में इन्द्र और इन्द्राणी में परस्पर एक सुन्दर वार्तालाप होता है। जिसमें इन्द्राणी इन्द्र से उसके वानर वृषाकपि द्वारा अपने उद्यान के नष्ट किये जाने की शिकायत करती है। (ऋ010/86/11) में कहा गया है कि स्त्रियों में इन्द्राणी सबसे अधिक सौभाग्यशालिनी है। क्योंकि इसका पति कभी नहीं मरता। इन्द्र के लिए शचीपति विशेषण भी प्रायः प्रयुक्त हुआ है।

पिशेल का मत है कि शची शब्द यहाँ इन्द्र की पत्नी का नाम है किन्तु अन्यत्र इस शब्द के बहुवचन में भी प्रयुक्त होने के कारण (ऋ0वा0सं0 10/34 तथा 19/81) मैकडानेल का विचार है कि यह शब्द केवल "शक्ति" का वाची है। और इन्द्र को शक्तिशाली होने के कारण ही शचीपति कहा गया है।[1]

इस संवाद सूक्त में उस काव्य शैली के अवशेष मिलते हैं जो पिछले वैदिक काल में प्रचलित नहीं रही।। ऋग्वेद में अभिव्यक्त प्रगतिशील तथा संदेह वादी विचार प्रस्तुत करने वाले दार्शनिकों में व्यंग्य की सम्भावना को अस्वीकार करना निश्चय ही अविवेक पूर्ण है। यह व्याख्या कि यह सूक्त नाट्य रूप में एक प्रजनन चमत्कार विषयक रचना है,

---

1- वैदिक देवता --- गयाचरणत्रिपाठी
उद्भव और विकास

विद्वत्ता पूर्ण है । किन्तु, दुर्भाग्यवश इससे प्रस्तुत सूक्त की व्याख्या में किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती ।

इसमें कई स्थानों पर वृषाकपि का भी वर्णन मिलता है । जो कि एक बन्दर है उसकी शिकायत इन्द्राणी बार बार इन्द्र से करती है ।

(ऋ0 10/86) के सूक्त में प्रत्येक मंत्र का आध्यात्मिक अर्थ भी किया गया है ।। (ऋ0 10/86/5) में इन्द्राणी क्रोधित होकर कहती है कि "यजमानों ने जो कुछ सामग्री मेरे लिए बनाकर रखी थी, उसे इसने (वृषाकपि ने) अपवित्र कर दिया । मैं इन्द्राणी इस दुष्ट कर्मवाले को सुखी नहीं रहने देना चाहती अर्थात सिर काट डालना चाहती हूँ ।

(ऋ0 10/86/9) में इन्द्राणी का सहायक मरुत लोगों को बताया गया है ।

(ऋ0 10/86/12) में इन्द्र इन्द्राणी को सान्त्वना देते हुए कहते हैं कि - "वृषाकपि (बन्दर) मेरा हित चाहने वाला है । इसके रहने पर मैं प्रसन्न रहता हूँ । उसका ही हव्यादिपदार्थ देवताओं को प्राप्त होता है ।" (ऋ0 10/86/16) में बताया गया है कि -वही व्यक्ति जीवन में सफल रहता है जो शिथिल बना न रहकर चैतन्यता से परिपूर्ण होता है ।

इस प्रकार से यह इन्द्र इन्द्राणी का संवाद वर्णित है ।।

उर्वशी-पुरूरवा

यह सूक्त ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 95वाँ सूक्त है । इसमें पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी का संवाद प्रस्तुत किया गया है । इसमें पुरूरवा, उर्वशी की चंचलता की भर्त्सना करता है, परन्तु उसे अपनी आसक्त दृष्टि से ओझल होने से रोकने में सफल नहीं होपाता है ।[1]

शतपथ ब्राह्मण में भी पुरूरवा और उर्वशी का उपाख्यान प्राप्त होता है ।

वृहद्देवता जो " Original Sanskrit Text " का[2] हिन्दी रूपान्तर है इसमें इस सूक्त का वर्णन इस प्रकार किया गया है:-

प्राचीनकाल में उर्वशी नाम की अप्सरा पुरूरवा नाम के राजर्षि के साथ रही । तन्यन करके वह उसके साथ लोक धर्म में प्रवृत्त हुई । पाक शासन इन्द्र ने उर्वशी के साथ पुरूरवा के सहवास की तथा पुरूरवा पर इन्द्र के तुल्य ब्रह्मा के प्रेम की ईर्ष्या करते हुए बगल में बैठे वज्र से कहा । हे वज्र ! यदि मेरा प्रिय करना

1- संस्कृत नाटक - ए०बी० कीथ

2- वृहद्देवता - ‡147 से 152 सूक्त शेषांश ‡

चाहते हो तो उन दोनों का प्रेम भंग कर दो ।

वज्र ने कहा- "अच्छा" । उसने अपनी माया से उर्वशी और पुरूरवा का प्रेम भंग कर दिया । तब उर्वशी से वियुक्त होकर पुरूरवा पागल की तरह इधर-उधर घूमने लगा । इधर उधर घूमते हुए उस पुरूरवा ने एक सरोवर में पाँच समान रूपवती सखियों के साथ सुन्दरता की प्रतिमूर्ति उर्वशी का अवलोकन किया । पुरूरवा ने उससे कहा कि फिर मेरे साथ आओ । परन्तु उसने अत्यन्त दुःख के साथ राजा को उत्तर दिया । मैं अब यहाँ अर्थात् मर्त्यलोक में अप्राप्य हो गई हूँ । तुम मुझे, फिर से स्वर्गलोक में प्राप्त कर सकोगे ।। ऋग्वेद भाष्य में, उर्वशी और पुरूरवा को, सेना और सेनापति के रूप में भी वर्णित किया गया है जिसका विस्तृत वर्णन हमने टिप्पणी के अन्तर्गत अलग से किया है प्रत्येक मन्त्र को सेना और सेनापति के अर्थ के पक्ष में वर्णित किया गया है । इसे हम दार्शनिक सूक्तों के अन्तर्गत भी रख सकते हैं ।

उर्वशी की अप्राप्यता के सम्बन्ध में 10/95/2, में कहा गया है कि :-

"पुनरस्तं परेहि अहम् वात इव दुरापना अस्मि"

अर्थात् वह कहती है कि मेरी पुनः प्राप्ति असंभव है । मैं तुम्हारे लिए वायु की भाँति दुष्प्राप्य हूँ ।।

पुरुरवा उर्वशी के प्रेम में इतना आसक्त था कि उसका विरह होना नहीं सह पा रहा था और इसी दुःख के कारण वह शारीरिक एवं मानसिक दोनों रूप से क्षण हो गया ।[1]

इसमें जिन पाँच समान रूपवती सखियों व अप्सराओं का वर्णन है वह क्रमशः सुजवा , सुजूर्णि, श्रेणि, सुम्नआपि, ह्रदेचक्षु है ।[2] उन्हीं के साथ उर्वशी भी इस मृत्युलोक अर्थात् पृथ्वीलोक पर आयी थी किसी शाप के कारण उसको यह सजा मिली थी । शाप खत्म होने पर वह पुनः पुरुरवा को छोड़कर गन्धर्व लोक में चली गई थी ।।

उर्वशी अप्सरा होने के कारण पहले से जानती थी कि उसे संविदा के आधार पर पुरुरवा से वियुक्त होना पड़ेगा और पुरुरवा मोह के अन्धकार में पड़कर इसी प्रकार अभिनय करेगा ।[3] वह यह भी जानती थी कि पुरुरवा को भी देवताओं ने दस्युओं के हनन के लिए भेजा है परन्तु मोह में अपने कर्तव्य को भी भूल गया है । उर्वशी ही पुरुरवा को इसकी याद कराती है ।

उर्वशी पुरुरवा के संवाद का वर्णन इसी प्रकार प्राप्त होता है ।

1- (ऋ0 10/95/3)

2- (ऋ0 10/95/6)

3- (ऋ0 10/95/11)

(देवापि-शान्तनु)

यह ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 98वाँ सूक्त है । यास्क ने इस सम्बंध में जिस ऐतिहासिक घटना का उल्लेख किया है । वह महाभारत से सम्बद्ध है ।

उसके अनुसार देवापि और शान्तनु या शन्तनु सगे भाई थे । देवापि बड़े थे और शान्तनु छोटे । देवापि बड़े होने के कारण यद्यपि राजगद्दी के अधिकारी थे किन्तु विरक्त होने के कारण वह वन चले गये । इसलिए राज्य शन्तनु को मिला । भीष्म इन्हीं शन्तनु के पुत्र थे । किन्तु कुछ ही दिनों बाद शन्तनु दिवंगत हो गये ।

निरुक्त में उल्लेख से प्रतीत होता है कि शन्तनु के द्वारा राज्य पर बलात अधिकार कर लेने पर देवापि को वन का आश्रय लेना पड़ा था । आर्ष्टिषेण का सम्बन्ध केवल देवापि से है या दोनों से, इस सम्बन्ध में व्याख्या कारों में मतभेद है ऋष्टिषेण का पुत्र होने के कारण दोनों को आर्ष्टिषेण कहा जा सकता है यह दोनों ही कुरुवंशीय थे यह स्पष्ट है ।।

अन्तरिक्ष के बोधक पर्यायों में "समुद्र" और पृथ्वी के समुद्र में अन्तर है । इस सम्बन्ध में (प्राचीन आचार्य) एक इतिहास

बतलाते हैं -- "ऋष्टिषेण का पुत्र देवापि और शन्तनु (वे दोनों कुरुकुलीय भाई थे। उन दोनों में छोटे शन्तनु ने अपना राज्य अभिषेक करा लिया। देवापि ने तपस्या स्वीकार कर ली। उसके बाद शन्तनु के राज्य में देव ने बारह वर्ष तक वर्षा नहीं की।

ब्राह्मणों ने उससे कहा- तुमने पाप किया है। क्योंकि अपने बड़े भाई का अतिक्रमण कर तुमने अपना राज्याभिषेक करा लिया है। इसलिए देव तुम्हारे लिए वर्षा नहीं कर रहा है। यह उस शन्तनु ने देवापि को राज्य देने की कामना की। देवापि उससे बोला - मैं तुम्हारा पुरोहित हो जाऊं - तथा तुमसे वर्षा के लिए यज्ञ करवाऊँ।।

इस सूक्त का वर्णन इसी प्रकार से प्राप्त होता है।

(सरमा-पणि)

यह सूक्त ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 108वाँ सूक्त है । इस पूरे सूक्त में सरमा एवं पणियों की मनोरंजक कथा प्राप्त होती है । पणि (असुर) इन्द्र की गायों को चुरा ले जाते हैं । इन्द्र अपनी सरमा नामक शुनि (कुतिया) को दूत के रूप में भेजते हैं । सरमाशुनि अपहृत गायों को खोजती हुई असुरों (पणियों) के पास जाती है और उनसे रोचक वाद विवाद करती है । किन्तु वह कृतघ्नता करके पणियों से ही मिल जाती है बाद में इन्द्र उसके चरणचिन्हों पर जाकरके पणियों का पता लगाकर उनका वध करते हैं ।[1]

यह कथा (ब्रह्मपुराण 131वें अध्याय में) अपने मूल रूप में प्राप्त होती है ।

एक स्थान पर इसका वर्णन इस प्रकार है--
"पणि नाम के असुरगण थे जो रसा नामक नदी के उस पार निवास करते थे । इन लोगों ने इन्द्र की गायों का अपहरण कर लिया और उन्हें सतर्कता पूर्वक छिपा दिया । बृहस्पति ने इसे देख लिया और

1- वैदिकदेवता-- गया चरण त्रिपाठी

देखने के बाद इन्द्र से बताया तब पाकशासन (इन्द्र) ने सरमा[1] को वहाँ दूत के रूप में भेजा ।

"अन्वेष्टुं सरमा देवशुनीम् इन्द्रेण प्रेषिताम्" ।

"किम्[2] सूक्त में असुर पणियों ने अयुग्म (ऋचाओं) द्वारा उससे (सरमा से) पूछा:" तुम कहाँ से (आ रही हो)? हे, कल्याणि तुम किसकी हो? अथवा तुम्हारा यहाँ क्या कार्य है? तब सरमा ने उनसे कहा--मैं इन्द्र के दूत के रूप में विचरण कर रही हूँ । तुम्हें तथा तुम्हारे गोष्ठ और इन्द्र की गायों को ढूँढ रही हूँ क्योंकि वह (इन्द्र) उनके (गायों के) सम्बन्ध में पूछ रहे हैं । इन्द्र की दूती जानकर असुरों ने कहा, सरमा तुम जाओ नहीं, यहाँ तुम हम लोगों की बहन के रूप में यहाँ रहो । हम गायों के अपने अपने भाग का विभाजन कर लें अब से पुन: हमारे लिए अभिद्रवत् न रहो । और अन्त में सरमा ने कहा "मैं न तो तुम्हारी बहन बनना चाहती हूँ और न तुम्हारा धन ही चाहती हूँ"।।[3]

1- ऋ० की० सर्वानुक्रमणी अन्वेष्टुं·····प्रतिष्ठतम् ।

2- ऋ० की० अयुग्मः- प्रोचुः ।।

4- बृहद्देवता - (पृष्ठ 251 से 254 तक)

परन्तु बृहद्देवता द्वारा वर्णित शेषांश कथा (सरमापणि) इस प्रकार है — "किन्तु जिन गायों को तुमने वहाँ छिपा रखा है उनका दुग्धपान करना चाहूँगी ।" उससे "हाँ" कहते हुए असुरों ने उसे दूध लाकर दिया । और लालच से उसने उस आसुरी दूध का पान कर लिया जो श्रेष्ठ मोहक, आनन्द दायक तथा बल को पुष्ट करने वाला था । और तब वह सौ योजनों के विस्तार वाली रसा को पुनः पार कर गई जिससे उस पर उनका दुर्जेयपुरिस्थत था । और इन्द्र ने सरमा से पूछा, "तुमने गायों को कहीं देखा ?"

किन्तु आसुरी दूध के प्रभाव से उसने इन्द्र को नकारात्मक उत्तर दिया । क्रुद्ध होकर इन्द्र ने उसको पैर से मारा । तब दूध का वमन करती हुई भय से होकर वह पुनः पणियों के पास गई । अपने रथ पर बैठकर हरिवाहन (इन्द्र) ने उसके पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए जाकर पणियों (असुरों) को मारा और गायों को वापस ले लिया ।।

* एक मत के अनुसार सरमा और पणियों के सूक्त या दो भिन्न दलों द्वारा पाठ किया जाता था । और इस प्रकार वह बीजरूप में एक कर्मकाण्ड सम्बन्धी रूपक था । इस मत की कोई बात

कल्पना के परे नहीं है । उत्तर वैदिक में इस प्रकार के प्रयोग से बिल्कुल अपरिचित था " ।[1]

सरमा और पणि की कथा का ऋग्वेद भाष्य में आध्यात्मिक अर्थ भी लिया गया है । इसमें सरमा नामक रानी को जीव रूप चेतना माना गया है । और पणियों की तुलना लोक व्यवहार में प्रवृत्त इन्द्रीय गणों से की गई है इस प्रकार जीव रूप चेतना और लोक व्यवहार में प्रवृत्त इन्द्रिय गुणों के बीच वाद-विवाद अर्थात संवाद होता है । जिसका वर्णन हमने अनुवाद के बाद विस्तृत रूप से वर्णित किया है ।

इसी प्रकार सरमा पणि की कथा का वर्णन मिलता है ।

1- संस्कृत नाटक - ए० बी० कीथ [पृष्ठ 8]

द्वितीय-भाग

(1 - 170) इन्द्र - अगस्त्य

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद्वेद यदद्भुतम् ।

अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यमुताधीतं वि नश्यति ॥

अन्वय-- नूनम् न अस्ति (श्वः नो यदद्भुतम् तत् कः वेद । अभिसंचरेण्यं अन्यस्य चित्तम् उत आधीतम् वि नश्यति ॥

अनुवाद-- (इन्द्र) वह न, अब है न कल होगा, उसे कौन जानता है। जो सर्वोच्च और अद्भुत है । अन्य की चेतना इसकी गति और क्रिया से संचरित तो होती है, पर जब हम विचार द्वारा इसके समीप पहुँचते हैं, तब यह लुप्त हो जाता है ॥

टिप्पणी-- अन्यस्यचित्तम्-- अन्य की चेतना;

सायण-- (सं०भा०) "अन्यस्यचित्तम्"। "अन्य की चेतना", वेङ्कट-- (सं०भा०) "अन्यस्य चित्तम्"/ "अन्य की चेतना;" विल्सन --(अं०अ०) " the mind of any other "/ "अन्य की चेतना", ग्रिफिथ--(अं०अ०)" another's thought "/" अन्य का विचार;"

इस प्रकार इसका अर्थ " अन्य की चेतना" उचित है ॥

संचरेण्यम्-- संचारित होती है;

सायण--(सं०भा०) "अभिसंचारि"/"संचारित होती है", वेङ्कट-- (सं०भा०)--"अभिसंचारि"/ "संचारित होती है", विल्सन--(अं०अ०) " (being)is of an unsteady(nature)/"संचारित होती है । ग्रिफिथ-- (अं०अ०)" Must address "/ "संचारित होती है;

इस प्रकार इसका अर्थ "संचारित होती है" उचित है ।।

उताशीतम्-- विचार द्वारा समीप पहुँचते हैं;

सायण-- ।ऋ०भा०। "अपि च अध्यासनपि", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "अपि च आध्यासनपि", विल्सन--।ऋ०अ०। " which has been profound by studied ; ग्रिफिथ-- ।ऋ०अ०। " the hope we formed;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "विचार द्वारा समीप पहुँचते हैं" उचित है ।।

किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव ।

तेभिः कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः ।।

अन्वय-- इन्द्र नः किं जिघांससि । मरुतः तव भ्रातरः । तेभिः साधुया कल्पस्व, नः समरणे मा वधीः ।।

अनुवाद-- हे इन्द्र ! तू क्यों हमारा वध करना चाहता है ? ये मरुत तेरे भाई हैं । उनके साथ मिलकर तू पूर्णता को सिद्ध कर, हमें जो संघर्ष करना पड़ रहा है उसमें तू हमारा वध न कर ।।

टिप्पणी-- जिघांससि-- मारना चाहते हो;

सायण--।ऋ०भा०। "जिघांससि"/मारना चाहते हो," वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "जिघांससि"/ "मारना चाहते हो," विल्सन--।ऋ०अ०।" Purpose to stay us "/ " हमको रोकना चाहते हो," ग्रिफिथ-- ।ऋ०अ०।" take our lives "/" हमारी जिन्दगी लेना चाहते हो,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "मारना चाहते हो" उचित है ।

साधुयाकलस्व-- पूर्णता को सिद्ध कर;

वेङ्•कट-- ।ऋ०भा०।--"साधुनामार्गेण एकीभवति"/ "साधु-मार्ग से एक हो", विल्सन-।ऋ०सं०। "a share(the offering)in pea/"साधुता से सिद्ध कर", ग्रिफिथ--।ऋ०सं०। "agree in friendly wise /"बुद्धिमान मित्रता में "राजी" सायण-- ।ऋ०भा०। "साधुनामार्गेण एकीभवति"/"साधु-मार्ग से एक हो," इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पूर्णता को सिद्ध कर" उचित है ।।

समरणे-- युद्ध में ;

वेङ्•कट-- ।ऋ०भा०। "सङ्गमे"/ संघर्ष में; विल्सन--।ऋ०सं०। " in enmity "/"शत्रुता में," ग्रिफिथ-- ।ऋ०सं०। "in the fight,/"युद्ध में," सायण-- ।ऋ०भा०। "संग्रामे"/ "युद्ध में", इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "युद्ध में" उचित है ।।

नः वधी-- वध मत कर;

वेङ्•कट-- ।ऋ०भा०। "मा हिंसी"/" हिंसा मत कर," विल्सन-- ।ऋ०सं०। " destroy not "/"नष्ट मत कर," ग्रिफिथ--।ऋ०सं०।" do not slay "/ "वध मत कर," सायण-- ।ऋ०भा०। "मा हिंसी"/"हिंसा मत कर", इस प्रकार इसका अर्थ "वध मत कर" उचित है ।।

किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्नति मन्यसे ।

विद्मा हि ते यथा मनोऽस्मभ्यमिन्न दित्ससि ।।

अन्वय-- भ्रातः अगस्त्य सखा सन् नः किम् अति मन्यसे । ते मनः यथा विद्म । अस्मभ्यम् न दित्ससि ।।

अनुवाद-- (इन्द्र) क्यों, हे मेरे भाई अगस्त्य (तु मेरा मित्र है, तो भी

अपने विचार को मुझसे परे रखता है। खैर, मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ कि तू अपने मन को हमें नहीं देना चाहता ।।

टिप्पणी-- सखासन् मित्र है, वेङ्कट ।पृ०भा०।" "सखासन्"/ "मित्र है; सायण-- ।पृ०भा०।"सखासन्" /"मित्र है;" विल्सन--।पृ०अं०। "art my friend /"मेरा मित्र है;" ग्रिफिथ--।पृ०अं०। "art our friend/"मेरा मित्र है;"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "मित्र है" उचित है ।।

न: अतिमन्यसे-- नहीं मानता है;

वेङ्कट-- ।पृ०भा०।"अनामन्यसे"/ "नहीं मानता है;" सायण-- ।पृ०भा०।"अनामन्यसे"/"नहीं मानता है", विल्सन--।पृ०अं०। " treat disregard "/" असम्मान करता है;" ग्रिफिथ-- ।पृ०अं०। "Neglect "/ "अस्वीकार करता है"।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " नहीं मानता है" उचित है ।।

विद्ज-- जानता हूँ;

वेङ्कट--।पृ०भा०।"विद्ज"/"जानता हूँ"।, विल्सन --।पृ०अं०। " know "/"जानता हूँ, ग्रिफिथ---।पृ०अं०।" know "/ "जानता हूँ"। सायण-- ।पृ०भा०। "विद्ज"/ "जानता हूँ", इस प्रकार इसका अर्थ" जानता हूँ" उचित है ।।

न दित्ససि-- नहीं देना चाहता;

विल्सन-- ।पृ०अं०।"not intend to give "/"नहीं देना चाहता;" ग्रिफिथ -- ।पृ०अं०। "wilt give us naught "/"नहीं देना चाहता;" वेङ्कट--।पृ०भा०। " न दित्ससि"/" नहीं देना चाहता;"

सायण--।हि०भा०। "न दित्सति"/"नहीं देना चाहता", इस प्रकार इसका अर्थ " नहीं देना चाहता" उचित है ।।

अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः ।

तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ।।

अन्वय-- वेदिम् अरं कृण्वन्तु, पुरः अग्निम् सम् इन्धताम् । तत्र अमृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ।।

अनुवाद-- (इन्द्र) वे भक्त वेदि तैयार कर लें, अपने आगे अग्नि प्रज्वलित कर लें । वहीं (अर्थात्) उसी अवस्था में चेतना अमरत्व की प्राप्ति के लिए जागृत होगी । आ, हम दोनों मिलकर तेरे लिए तेरे फल स एक यज्ञ का विस्तार करें ।।

टिप्पणी-- समिन्धताम् -- प्रज्वलित कर लें, सायण-- ।हि०भा०। " स इन्धताम्" /प्रज्वलित कर लें", वेंकट-- ।हि०भा०। "सम् इन्धताम च"/ "प्रज्वलित कर लें", विल्सन--।हि०अ०। " let them kindle "/"प्रज्वलित कर लें" ।, ग्रिफिथ-- ।हि०अ०। " let them kindle "/"प्रज्वलित कर लें" ।

इस प्रकार इसका अर्थ "प्रज्वलित कर लें" उचित है ।।

अरं कृण्वन्तु-- तैयार कर लें,

वेंकट-- ।हि०भा०। "अलङ्कृण्वन्तु"/"तैयार (अलंकृत) कर लें", सायण-- ।हि०भा०। "अरं कृण्वन्तु"/ तैयार कर लें"/, विल्सन--।हि०अ०। " let the decorate "/"अलंकृत कर लें", ग्रिफिथ-- ।हि०अ०। " let prepare "/"तैयार कर लें"

इस प्रकार इसका अर्थ "तैयार कर लें" उचित है ।।

अमृतस्य चेतनं-- अमरत्व की चेतना; सायण--।ऋ०भा०। "अमृतस्य चेतना"/ "अमरत्व की चेतना" वेङ्कट --।ऋ०भा०। "अमृतस्य चेतन."/ "अमरत्व की चेतना" विल्सन-- ।ऋ०अ०। " The inspirer of immortal "/अमरत्व की चेतना" ग्रिफिथ--।ऋ०अ०। " Immortal may observe "/ "अमरत्व की चेतना".

इस प्रकार इसका अर्थ "अमरत्व की चेतना" उचित है।।

तन्वावहै-- विस्तार करें;

वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "तन्वावहै" /"विस्तार करें" सायण-- ।ऋ०भा०। "तन्वावहै"/ "विस्तार करें". ग्रिफिथ --।ऋ०अ०।" will spread"/ विस्तार करें"/विल्सन-- ।ऋ०अ०।" consummate "/"पूर्ण ।विस्तार। करें"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "विस्तार करें" उचित है ।।

त्वमीशिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः।

इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वाध प्राशान ऋतुथा हवींषि ।।

अन्वय-- वसूनां वसुपते त्वमीशिषे, मित्राणां मित्रपते त्वं धेष्ठः । इन्द्र त्वम् मरुद्भि संवदस्व अध ऋतुथा हवींषि प्राशान् ।।

अनुवाद-- ।अगस्त्य। हे वसुओं के, सब जीवन तत्वों के शासक, वसुपते । तू शक्तिशाली स्वामी है । हे प्रेम शक्तियों के शासक प्रभाधिपते। तू स्थिति में प्रतिष्ठित करने के लिए सबसे अधिक सबल है । हे इन्द्र । तू मरुतों के साथ सहमत हो जा, और तब सत्य की सुव्यवस्थित पद्धति के अनुसार हवियों का स्वाद लें ।।

टिप्पणी-- वसुपति-- धन के स्वामी;

वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "वसुपते; /धन के पति ।स्वामी।, सायण-- ।ऋ०भा०। "वसुपते"/"धन के स्वामी; विल्सन--।ऋ०अं०। "the lord of riches अमीरों के स्वामी; ग्रिफिथ -- ।ऋ०अं०। " lord of wealth "/"धन के स्वामी;

इस प्रकार इसका अर्थ "धन के स्वामी" उचित है ।।

संवदस्व-- सहमत हो जा;

वेङ्कट--।ऋ०भा०। "प्रथमं संवादं कुरु"/ "प्रथमसंवाद करो; विल्सन-- ।ऋ०अं०। " along "।, "ग्रिफिथ-- ।ऋ०अं०। "speak thou kindly "/ "दयालुता से बोलो" अर्थात सहमत हो जा ।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सहमत हो जा" उचित है ।।

हवींषि प्रशान्-- हवियों का स्वाद लें;

वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "हवींषि भुङ्क्ष्व"/ "हवियों का भोग करें", विल्सन --।ऋ०अं०।" Partake of the oblation /"हवियों को ग्रहण करें; ग्रिफिथ --।ऋ०अं०। " taste oblations "/"हवियों का स्वाद लें;

इस प्रकार इसका अर्थ "हवियों का स्वाद लें" उचित है।।

॥1-179॥ अगस्त्य-लोपामुद्रा

मन्त्र ।- पूर्वीरहं शरद: शश्रमाणा दोषावस्तोरुषसो जरयन्ती: ।

मिनाति श्रियं जरिमा तनूनामप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्यु: ।।

अन्वय अहं पूर्वी: शरद: दोषा: वस्तो: जरयन्ती: उषस: । शश्रमाणा

जरिमा तनूनाम् श्रियं मिनाति । अप्यूनु पत्नी वृषण: जगम्यु: ।।

अनुवाद- ॥लोपामुद्रा॥ मैं वर्षों से दिन रात जरा की संदेश वाहिका उषाओं में

तुम्हारी सेवा करती रही हूँ । बुढ़ापा शरीर के सौन्दर्य

को नष्ट करता है इसलिए यौवनकाल में ही पति पत्नी

गृहस्थ धर्म का पालन करके उसके उद्देश्य को पूर्ण करें ।

टिप्पणी- मिनाति--नष्ट करता है॥

मि "नष्ट करने के अर्थ में + शतृ + ङीप+ लट् लकार

प्रथम पुरुष एकवचन ॥ T.N.V.S. ॥सायण- ॥मो०MTO॥

"मिनाति हिनस्ति"/"नष्ट करता है॥ वेङ्कट- ॥मो०MTO॥

"नाशयति"/नष्ट करता है॥ विल्सन--/॥०अं० 'impairs'

/"नष्ट करता है", ग्रिफिथ-/॥०अं० 'impairs'

"नष्ट करता है",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "नष्ट करता है"

उचित है ।।

जगम्यु:- जायें ॥करें॥.

सायण- (भा०) "गच्छेयु:" । "जाना चाहिए" संभोगं कुर्युः ।

जाना चाहिए" संभोगं कुर्युः । अतो मां किमित्यवमन्यसे । इदानी-

मपि वा संभावयेत्यर्थः । वेङ्कट- (भा०) "गच्छेरन्" /"जायें; विल्सन-

(अ०सं०) " to be done/ करें" ग्रिफिथ-- (अ०सं०) "still near "

समीप जायें;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जायें (करें) उचित है ।।

श्रियं -- सुन्दरता;

सायण- (भा०) "सौन्दर्य" । "सुन्दरता", वेङ्कट- (भा०)

शोभाम्"/सुन्दरता; विल्सन्-- (अ०सं०) beauty "/

"सुन्दरता", ग्रिफिथ- (अ०सं०) " beuty "/"सुन्दरता;

इस प्रकार इसका अर्थ "सुन्दरता" उचित है ।।

पूर्वी-- कई वर्षों से,

सायण- (अ०सं०) "पुरातन्"/"प्राचीनकाल से; वेङ्कट- (भा०)

बह्वी"/"प्राचीन वर्षों से; विल्सन-- (अ०सं०) "Many years "/

कई वर्षों से; ग्रिफिथ-- " Through many autumns /

कई ऋतुओं से",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "कई वर्षों से" उचित है ।।

अप्युनु-- संभावना करें;

सायण- (भा०) "संभावनायाम् उपस्पृशति" । नु इति वितर्के ।

वेङ्कट- (भा० " इत्यपि"/ "इच्छा करें विल्सन- (अ०सं०)

" approach "/ "पहुँचे",

इस प्रकार इसका अर्थ "संभावना करें" उचित है ।।

मन्त्र {2} ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप आसन्त्साकं देवे भिरवदन्नृतानि ।

ते चिदवासुर्नह्यन्तमापुः समू नु पत्नीर्वृषभिर्जगम्युः ।।

अन्वय- ये चिद्धि ऋतसापः आसन् देवेभिः साकं ऋतानि अवदन् ।

ते चित् अवासुः नह्यन्तमापुः पत्नीः वृषभिः सम् नु जगम्युः ।।

अनुवाद- धर्म पालक पुरातन ऋषि देवताओं से सत्यवाद करते थे । वे क्षीण हो गये और जीवन के परम प्राप्त फल को प्राप्त नहीं हुए, इस लिए पति पत्नी को संयमशील और विद्याध्ययन में रत विद्वान को भी उपयुक्त अवस्था में कामभाव प्राप्त होता है और वह अनुकूल पत्नी को प्राप्त कर सन्तानोत्पादन का कार्य करता है ।

टिप्पणी--

देवेभिः- देवताओं से;

देव शब्दस्य तृतीया बहुवचन ।

सायण-{ऋ0भा0} "देवैः"/ "देवताओं से; वेङ्कट--{ऋ0भा0} "देवैः"/"देवताओं से; विल्सन--{ऋ0सं0} "with the gods "/"देवताओं से; ग्रिफिथ--/ऋ0सं0/"with the gods "/"देवताओं से; ग्रासमैन- {द ऋ0सं0} mit den Gotten "/" with the gods " "देवताओं से; गेल्डनर-{द ऋ0सं0} mit den Gotten "/" देवताओं से".

/

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "देवताओं से" उचित है ।।

अवदन्-- बोलते थे

वद् परिभाषणे लङ् लकार (भूतकाल) प्रथम पुरुष बहुवचन । -

सायण--(ऋ0भा0) "वदन्ति"/"बोलते थे", वेङ्कट- (ऋ0भा) "अवदन्"/ "बोलते थे", विल्सन-(ऋ0सं0) " begot "/बोलते थे" ग्रिफिथ-- (ऋ0सं0) " declared "/घोषणा करते थे;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बोलते थे" उचित है ।।

ऋतस्य:-- सत्य की;

सायण-- (ऋ0भा0) "सत्यस्य"/"सत्य की", वेङ्कट-(ऋ0भा0) "सत्यम्" ।"सत्य को", विल्सन--(ऋ0सं0) "of truth "/"सत्य की" ग्रासमैन--(द0ऋ0सं0) "fruher "/" truth "/"सत्य की", गेल्डनर-- (द0ऋ0सं0)"wahrheit "/" truth "/"सत्य की",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सत्य की "उचित है ।।

जगम्युः-- प्राप्त होता है;

सायण--(ऋ0भा0) "प्राप्नुवन्"/"प्राप्त होता है", विल्सन--ऋ0सं0) " be approached/"प्राप्त होता है;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "प्राप्त होता है"- उचित है ।।

मन्त्र (3) न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवा विश्वा इत्स्पृधो अभ्यश्नवाव ।
जयावेदत्र शतनीथमाजिं यत्सम्यञ्चा मिथुनावभ्यजाव ।।

अन्वय - न मृषा शान्तम् यत् देवा: अवन्ति । विश्वा: स्पृध: अभ्यश्नाव ।

अत्र शतनीथम् आजिं जयाव यत् अभ्यंचा मिथुनौ अभ्यजाव ।।

हिन्दी अनुवाद- (अगस्त्य) हमने व्यर्थ परिश्रम नहीं किया । देवगण हमारे रक्षक हैं । हम स्पर्धा करने वालों को वश में करते और सैकड़ों साधनों का उपभोग करते हैं हम स्त्रीपुरुष सम्मिलित रूप से गृहस्थ धर्म निभायें ।

टिप्पणी—अवन्ति— रक्षा करते हैं; "अव" शब्द रक्षा करने के अर्थ में, लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन सायण— (ऋ०भा०) "अवन्ति — रक्षन्ति"/"रक्षा करते हैं;" —वेङ्कट— (ऋ०भा०) "रक्षन्ति"/ "रक्षा करते हैं;" विल्सन—(ऋ०अं०) " protect "/ "रक्षा करते हैं;" --

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "रक्षा करते हैं" उचित है ।।

शतनीथम्— सैकड़ों साधनों का; सायण—(ऋ०भा०) "अपरिमित-भोग प्राप्ति साधनम्"/असीमित भोग साधनों की प्राप्ति"। वेङ्कट—(ऋ०भा०) "बहुनय प्रकारम्"/"कई प्रकार से;" विल्सन— (ऋ०अं०) " many conflict "/"कई संघर्षों से;"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सैकड़ों साधनों का" ही उचित प्रतीत होता है ।।

मिथुना— जोड़ा (स्त्रीपुरुष)।

सायण—(ऋ०भा०) "मिथुनौ स्त्र्यपुरुष रूपौ"/ "जोड़ा (स्त्रीपुरुष) का" वेङ्कट— (ऋ०भा०) "मिथुनी भूत्वा"/ "जोड़ा होकर"। विल्सन (ऋ०अं०) " we "/"हम लोग (स्त्रीपुरुष;" ग्रासमैन— (ज०ऋ०अं०)

" "/" "/हम लोग {स्त्री-पुरुष}" गेल्डनर-- {द 0सं0}
wenn "/" we "/ हम लोग {स्त्रीपुरुष}".

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जोड़ा {स्त्रीपुरुष} उचित है ।।

जयाव-- विजय करते हैं

सायण-- {0भा0} "जय-अर्थ/"विजय करते हैं;" वेङ्कट {0भा0} "जयाय" /"विजय करते हैं; विल्सन- {0सं0} "may - triumph "/ "विजय करते हैं; ग्रासमैन -{0सं0} " kmpf "/ "triumph "/"विजय करते हैं ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "विजय करते हैं, उचित है ।।

<u>मन्त्र</u> {4} नदस्य मा रुधतः काम आगन्नित आजातो अमुतः कुतश्चित् ।
लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति धीरमधीरा धयति श्वसन्तम् ।।

<u>अन्वय</u>- नदस्य रुधतः कामः आगन् । इतः अमुतः कुतश्चित आजातः ।
लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति धीरं श्वसन्तं अधीरा धयति ।

<u>अनुवाद</u>- रुके हुए नद की तरह वीर्य का निरोध करने वाला ब्रह्मचारी गृहस्थ सेवन के लिए मुझे प्राप्त हो, धैर्यवान पुरुष को मैं धारण करूँ ।

<u>टिप्पणी</u>- नदस्य-- नदी की;

नदी "शब्द षष्ठी एकवचन । सायण- {0भा0} "नदवस्य"/ "नदीकी" वेङ्कट-- {0भा0} "नदवस्य"/ "नदी की;" विल्सन- {0 सं0} " Desire /"इच्छा", सायण-- नदशब्दयितृकामपरवयनम्:" -
इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "नदी की " उचित है ।।

स्थत: -- रूके हुए;

सायण-- (ऋ०भा०) "रेतो जेरोद्धदेवनवर्यनास्थितस्य । इमे कर्माणि षष्ठ्यौ । "उक्त लक्षण ना कान: आगन् आगनव्" ।" नदनस्य ना स्थत, कान आगनव्" इति निरुक्तम्" ।। वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "निरुन्धानस्येन्द्रियम्"/"रूके हुए इन्द्रियों की तरह," विल्सन," -(ऋ०सं०)- " engaged "/ " फंसे हुए या रूके हुए" ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "रूके हुए" उचित है ।।

अजात: -- उत्पन्न हो;

"जात:" शब्द लङ्लकार-- सायण-- (ऋ०भा०) "अजात: सर्वत: उत्पन्न:"/ "सर्वत्र उत्पन्न हो" ।

शौनक-- "सर्वानि आप्नोति"/"सर्वत्र प्राप्त हो, विल्सन--(ऋ०सं०) " has come "/" आये अर्थात् उत्पन्न हो", गेल्डनर-- (दे०ऋ०सं०) hat sich has come "/" आये हो अर्थात उत्पन्न हो;" ग्रास मैन-- द ऋ०सं० । hat sich "/ " has come "/ "आये हो अर्थात् उत्पन्न हो" ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "उत्पन्न हो" उचित है ।।

धयति-- धारण करते हैं ।

"धय"शब्द लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन । सायण--(ऋ०भा०) । "उपभोग करें;" विल्सन--(ऋ०सं०) he guides "/"उपयोग या धारण करते हैं ।।

ग्रासमैन-- (द ऋ०सं०/ he gierdes "/ he guides /

धारण करते हैं"

इस प्रकार इसका अर्थ "धारण करते हैं" द्योतित है ।।

मन्त्र (5) इमं नु सोममन्तितो हृत्सु पीतमुप ब्रुवे ।

यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळतु पुलुकामो हि मर्त्यः ।।

अन्वय-- यत् आगः चकृम तत् सु मृळतु हि मर्त्यः पुलुकामः ।

इमं नु हृत्सु पीतमुप सोम मन्तितो ब्रुवे ।।

अनुवाद-- (शिष्य में हृदय से पान किये हुए इस सोम की स्तुति हूँ । हमसे कोई भूल हुई हो तो उसे वे क्षमा करें क्योंकि मनुष्य विभिन्न कामनाओं से युक्त होता है ।

टिप्पणी--

पुलुकामः-- "बहुत कामना वाला",

सायण-- (ऋ०भा०) " बहुकामना- वान्" "बहुत कामना वाला", "बहुकामनाकथयति"/"बहुत कामना कहता है।", वेङ्कट- (ऋ०भा०) "बहुकामो"/"बहुत कामना वाला;" विल्सन- (ऋ०सं०) "to may desires " /" बहुत इच्छाओं वाला अर्थात् बहुत कामना वाला; ग्रिफिथ--(ऋ०सं०) "full of longings "/ "इच्छाओं से पूर्ण", ग्रासमैन -- (द ऋ०सं०) "Mamas "/ "बहुत इच्छाओं वाला",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " बहुत कामना वाला" उचित है ।

मर्त्य:--- मनुष्य,

सायण-- {ऋ०भा०}--" मर्त्य: मनुष्य:/" मनुष्य या व्यक्ति,

वेङ्•कट-- {ऋ०भा०} ।" मर्त्य:--मनुष्य:"/"मनुष्य" विल्सन {ऋ०सं०}

" Man "/ "मनुष्य या व्यक्ति", ग्रिफिथ- {ऋ०सं०} " Man " Man

/"मनुष्य", ग्रासमैन - "{द ऋ०सं०} "Man "/ Man "/

मनुष्य", गेल्डनर- {द ऋ०सं० } Man "/" Man "/"मनुष्य",

इस प्रकार इसका अर्थ "मनुष्य" उचित है ।।

मृळतु-- सुखी करे :

सायण-- ऋ०भा० । "मृळतु" /"सुखी करें" वेङ्•कट-{ऋ०भा०}

मृळतु - सुखयतु" / "सुखी करें "

इस प्रकार इसका अर्थ " सुखी करें " उचित है ।।

मन्त्र {6} अगस्त्य: खनमान: खनित्रै: प्रजामपत्यं बलमिच्छमान: ।

उभौ वर्णावृषिरुग्र: पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम ।।

अन्वय-- अगस्त्य: खनित्रै: खनमान: प्रजां अपत्यं बलं इच्छमान: {ऋषि: उग्र:

उभौ वर्णौ पुपोष । सत्याः आशिष: देवेषु जगाम ।।

अनुवाद- विभिन्न साधनाओं से अगस्त्य ऋषि ने अनेक सन्तान और बल की इच्छा

से दोनों वरणीय वस्तुओं को पुष्ट किया और देवगण के सच्चे आशीर्वाद

को पाया ।।

टिप्पणी---

अशिषो -- "आशिर्वाद",

सायण-- {ऋ०भा०} "आशिष:"/"आशीर्वाद",

वेङ्कट-- {ऋ०भा०} {आशिष:" /"आशीर्वाद," विल्सन--

{ऋ०सं०} " Beneditctions "/"आशीर्वाद" ।

ग्रिफिथ-- {ऋ०सं०} " fulfilment "/ "आशीर्वाद",

ग्रासमैन- {द ऋ०सं०} "Frfulling "/ " fulfillment "/

आशीर्वाद", गेल्डनर -{दे० ऋ०सं०} " Frfulling"/ fulfill

- ment "/ "आशीर्वाद" ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " आशीर्वाद" उचित है ।

बलमिच्छमान:-- "बल की इच्छा से",

सायण-- {ऋ०भा०} "बलं च इच्छमान:"/ "बल की इच्छा

करते हुए" वेङ्कट- {ऋ०भा०} "अर्कं च इच्छन्" /"बल की

इच्छा करते हुए," विल्सन "desiring _ strength "

/बल की इच्छा करते हुए," ग्रिफिथ- {ऋ०सं०} " wishing

strength "/"बल की इच्छा करते हुए,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बल की इच्छा से" उचित है ।।

पुपोष-- "पुष्ट किया" ।

"पालने के अर्थ में" ।--

सायण-- {ऋ०भा०} "पुपोष" /"पुष्ट किया," वेङ्कट-

{मो०भा०} "पुपोष"/" पुष्ट किया," विल्सन- {मू०सं०}
" practised "/ पुष्ट किया "- ग्रिफिथ-- {मू०सं०} "Cherished
" /पुष्ट किया।"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पुष्ट किया" उचित है ।।

जगाम-- "पाया"

"प्राप्त करने के अर्थ में,"

सायण--{मो०भा०} "प्राप्तवान्" /"प्राप्त किया", वेङ्कट-
{मो०भा०}"प्राप्तवान्"/"प्राप्त किया {पाया}/" विल्सन-- {मू०सं०}
"received "/"प्राप्त किया," ग्रिफिथ--।{मू०सं०} " obtained "
"प्राप्त किया" ग्रासमैन {द मू०सं०} erlangte "obtained "/
"प्राप्त किया " / गेल्डनर - {द मू०सं०} gemaltgge "/"पाया"--

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पाया " उचित है ।

(3-33) विश्वामित्र - नदी

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने ।

गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट् छुतुद्री पयसा जवेते ॥

अन्वय- पर्वतानाम् उपस्थात् उशती, हासमाने विषिते अश्वेइव रिहाणे गावेव शुभ्रे मातरा विपाट् शुतुद्री पयसा प्रजवेते ॥

अनुवाद— पर्वतों की गोद से निकलकर, (समुद्र की ओर जाने की) इच्छा करती हुई, (परस्पर) स्पर्धा से दौड़ती हुई, खुले बागवाली दो घोड़ियों की तरह, (बछड़े को) चाटती हुई दो दो स्वच्छ माता गायों की तरह विपाट् और शुतुद्री (अपने) प्रवाह से तेजी से बह रही है ।

टिप्पणी— अश्वेइव— दो घोड़ियों की तरह, (V.N.V.S)— ए of the अश्वे is प्रगृह्य; hence इति should be added after it, but it is added after इव because it is a नित्यसमास; and the repetition of अश्वेइव after इति is with a view to analysing the compound ([illegible]) "अश्वेइव"/ "घोड़ियों की तरह; विल्सन- (अं०) " like two Mares "/ " दो घोड़ियों की तरह", ग्रिफिथ- (अं०) "as two swift Mares "/ "जैसे दो घोड़ियाँ".

इस प्रकार इसका अर्थ "दो घोड़ियों की तरह " उचित है ॥

विषिते — खुले लगाम वाली (V.N.V.S) Past part from सो or si to let loose: final [illegible] ए is pragrhya; hence इति in the pada text; the repetition being with a view to analysing the compound

हासमाने —

तथा तार्कमानुक स्वरे कुर्यातपुस्वरः ।, विल्सन--।पृ०सं०। "contending"/ "दौड़ती हुई", ग्रिफिथ- ।पृ०सं०। "contending"/"दौड़ती हुई,

इस प्रकार इसका अर्थ "स्पर्धा से दौड़ती हुई" उचित है ।।

इन्द्रेषिते प्रसवंभिक्षमाणे अच्छासमुद्रं रथ्येवयाथः ।

तद्मानें ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वन्यामप्येति शुभ्रे ।।

अन्वय-- इन्द्रेषिते, प्रसवं भिक्षमाणे रथ्येव समुद्रं अच्छ याथः । शुभ्रे ।
तनाने ऊर्मिभिः पिन्वमाने वाम् अन्या अन्याम् अपि एति ।।

अनुवाद-- इन्द्र द्वारा भेजी गई, बहने के लिए प्रार्थना करती हुई, दो रथियों की तरह समुद्र की ओर जा रही हो । हे शुभ्रे, एक साथ जाती हुई, लहरों से उमड़ती हुई, तुममें से प्रत्येक एक दूसरे की ओर जा रही हो ।।

टिप्पणी--इन्द्रेषिते-- इन्द्र द्वारा भेजी गई, ।V.R.V.G. Mac dual of
इन्द्रेषिता, इषिता शब्द इष धातु + क्त "भेजने" के अर्थ में । तत्पुरुषसमास, It accents the second member, but when the first member is in instrumental from, and second member a past participale in passive sense, it accents the first member

।तृतीयाकर्मणि- Pan VI 2.48 । आदिसरी पर प्रयुक्त है । सायण-- ।पृ०सं०। "इन्द्रेणप्रेषिते"। "इन्द्रेषिते इत्यस्य--अभिनिष्क्रामणः" ती समस्तत्वादिना- नयागमः, पूर्वपदस्वरः ।"/"इन्द्र द्वारा भेजी गई" विल्सन- ।पृ०सं०। "Impelled by Indra"/ "इन्द्र द्वारा भेजा", ग्रिफिथ--।पृ०सं०। except "Impelled by Indra"/ "इन्द्र द्वारा भेजा", ग्रासमैन --।पृ०सं०। von Indra "/ "इन्द्र द्वारा भेजी गई", गेल्डनर --।पृ०सं०।

रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः ।

प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः ॥

अन्वय— ऋतावरीः ! सोम्याय मे वचसे एवैः मुहूर्तम् रमध्वम् । अवस्युः —
कुशिकस्य सूनुः बृहती मनीषा सिन्धुम् अच्छ प्र अह्वे ॥

अनुवाद— हे पवित्र जलवाली, (सोम भरे मेरे वचनों) के प्रति आदर भावना से)
अपनी यात्रा से क्षण भर के लिए रुक जाओ । (अपनी) सहायता का इच्छुक
कुशिक का पुत्र (मैं) ऊँची स्तुति से नदी (सिन्धु) का आह्वान किया है ॥

टिप्पणी— ऋतावरीः— पवित्र जल वाली; यास्क— (निरुक्त) " इसका अर्थ
"ऋतवत्यः" अर्थात "जलवाली" किया गया है इसके प्रथम घटक "ऋत" शब्द का
अर्थ "जल" है । और गत्यर्थक ऋ+क्त से बनता है । " ऋतावरीः" ऋत+ वनिप्
+ ई, से बना तथा प्रस्तुत में स्त्रीलिङ्ग प्रथमा बहुवचन का वैदिक रूप है । यह
"ऋतावरी" शब्द का बहुवचन रूप है "ऋतावरीः" ॥ (Y.N.V.S.)— " It is
derived from to go +क्त +वनिप्+ ङीप् before ङीप्, वन is
ingo
changed into वर् and with ङीप् is changed वरी, and with
वतुप्, मतुप् and वनिप् the final short syllable of the stem with
which they are compounded is lengthened in the samhita text
however, in the pada text the original stem is restored.
Vox, coming in the begining of the pada :hence accented on
the first syllable

सायण— (ऋ0भा0) "ऋतयुक्तम्"/ पवित्र
जल (वाली); ग्रिफिथ— (ऋ0अं0) " holy ones."/ "पवित्र जल वाली ;

ग्रासमन—।८ पृ०सं०। " O holl'go "/ "हे पवित्रजल वाली;

इस प्रकार इसका अर्थ "पवित्र जल वाली " उचित है ।।

मुहूर्तम्— क्षणभर के लिए;

यास्क— ।निरुक्त । " इसमें इसका अर्थ "अत्यल्प समय" किया गया है, और इसकी निष्पत्ति मानी गयी है —"मुहुर + ऋतु" से" । इसमें "मुहूर्त" का अर्थ किया गया है "मूढ सा काल" । अर्थात् ऐसा समय जिसके बीत जाने का पता न चल सके । थोड़ा समय कब बीत जाता है इसका पता नहीं चलता । इससे इसके निर्वचन, का मुह + ऋत् होने का संकेत है । "ऋतु" शब्द का गत्यर्थक ऋ + तु से सिद्ध होता है इस प्रकार इसका अर्थ— गतिशील, अर्थात जो सदा चलता रहे, कभी रुके नहीं ।।

सायण—।पृ०भा०। "क्षणमात्र"/"क्षण भर के लिए," विल्सन—।पृ०सं०। " "/ "क्षण भर के लिए", ग्रिफिथ—।पृ०सं०। " Moment "/"क्षण भर के लिए," मैक्डानल—।पृ०सं०। "Moment "/ "क्षणमात्र के लिए ; still

इसका इस प्रकार अर्थ" क्षण भर के लिए" उचित है ।।

एव:— जाने से; यास्क—।निरुक्त।- "अयन {गमन} और "अवन {रक्षण} किया गया है इससे इसके दो प्रकार से निर्वचन होते हैं — {।} इ {इण् + व एव । {।।} अव् + अ अव एव । सायण—।पृ०भा०।"पंचम्यर्थे तृतीया । शीङ्गम्नभ्य: । इणगतौ, "इण्शीङ्भ्यां वन्" आर्धधातुकस्येड्गुण: । निरस्वर: ।

विल्सन—(ऋ०सं०) "go to"/"जाने से" ग्रिफिथ - (ऋ०सं०) "Journey"/ "यात्रा से"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जाने से" उचित है ।।

कुशिकस्य— कुशिक का; कुशिक शब्द का षष्ठी एकवचन ।। यास्क— (निरुक्त) "इसके तीन निर्वचन किया है (i) वह शब्द करता है इसलिए "कुशिक" कहलाता है— इस अर्थ के अनुसार "शब्द करना" अर्थ वाली क्रुश + इक (उ०) से (क्रुश + इक कुशिक । (ii) वह विद्या या तेज से सबको प्रकाशित करता है।— इसलिए कुशिक है — इस अर्थ के अनुसार— प्रकाश करना अर्थ वाली—काश + इक (उ०) से (काश + इक कौशिक कुशिकं कुशिक । (iii) वह धन का अच्छा दाता है — इसलिए "कुशिक" है —इस अर्थ के अनुसार दानार्थकणिजन्त क्रोशि + क से (क्रोशिक कौशिक कुशिक ।। सायण—(ऋ०भा०) "कुशिकस्य"/"कुशिक का" विल्सन (ऋ०सं०) "Kushik"/"कुशिक का" ग्रिफिथ —(ऋ०सं०) "of kushik"/"कुशिक का" ग्रासमैन— (द ऋ०सं०) "des kushik"/"कुशिक का" गेल्डनर —(द ऋ०सं०) "des kusika"/"of kushik" "कुशिक का"

इस प्रकार इसका अर्थ "कुशिक का" उचित है ।

मनीषा— स्तुति; यास्क— (निरुक्त) "मनस् ईषा", इन शब्दों के, परस्पर सन्धि जन्य योग से निष्पन्न है। प्रस्तुति में इसका अर्थ "स्तुति" या "पूजा" है । विल्सन— (ऋ०सं०) "prayer"/"स्तुति" सायण—(ऋ०भा०) "मनीषया स्तुत्या"/"स्तुति (से)" ग्रिफिथ —(ऋ०सं०) "hymns"/"स्तुति"

इस प्रकार इसका अर्थ " स्तुति" उचित है ।।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।

देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः ।।

अन्वय— (नद्यः प्रत्युचुः) वज्रबाहुः इन्द्रः अस्मान् अरदत्, (ततः) नदीनाम् परिधिम् वृत्रम् अप अहन् । सुपाणिः सविता देवः (वयम्) अनयत्, वयम् उर्वीः तस्य प्रसवे यामः ।।

अनुवाद— (नदी उत्तर देती है) हाथ में वज्र धारण करने वाले इन्द्र ने हमको खोदकर बाहर किया। उसने नदियों को घेरने वाले वृत्र को मारा । सुन्दर हाथ वाले सवितृ देव ने हम लोगों को लाया, हम जितनी चौड़ी है, उसी की आज्ञा से (निरन्तर) बहती है ।।

टिप्पणी— सुपाणि— सुन्दर हाथवाले; यास्क— निरुक्त।" इसका निर्वचन पूजार्थक पण धातु से किया है । सम्भवतः पण् + इ पनि पाणि । इसने इस सम्बन्ध में जो "पाणिः पणायतेः पूजा कर्मणः" "प्रगृह्य पाणी देवान् पूजयन्ति तस्य वयं प्रसवेयाम उर्वीरुत्यः (नि० 2-26) इति"अर्थात हाथों को जोड़कर (लोग) पूजा करते है" यह "पाणि" के अर्थ को उजागर करने के साथ साथ तत्कालीन आचार को भी व्यक्त करता है । सु+ पाणि — अच्छे अर्थात सुन्दर पाणि अर्थात् हाथ वाले । विल्सन—(पृ०)। " well handed "/"अच्छे हाथ वाले" ग्रिफिथ— (पृ०)। " love by handed "/ "प्यारे हाथ वाले", ग्रासमैन— (द पृ०)। " schonleitend/"सुन्दर हाथ वाले" गेल्डनर— (द पृ०)। "schonen hand "/"सुन्दर हाथ वाले"

इस प्रकार इसका अर्थ " सुन्दर हाथ वाले" उचित है ।।

परिधिन्— घेरने वाले; आ+ परि " surround "; सायण— ।ऋ0भा0।
"परितो नितिष्ठमुक्नन्त: कृत्वा परितो वर्तमान नित्यर्थ:" विल्सन—।ऋ0सं0।
" blocker up "/"रोकने वाले; ग्रिफिथ—।ऋ0सं0। " stayed "/
"रोकने वाले;" " one who envelopes or surrounds "

इस प्रकार इसका अर्थ "घेरने वाले " उचित है ।।

उर्वी—पृथ्वी; यास्क— ।निरूक्त।—"।।। नदियाँ अपनी विशालता से बहुत बड़े भूभाग को आच्छादित करती हैं, इसलिए वे उर्वी कहलाती हैं इस प्रकार इसका निर्वचन आच्छादन अर्थ वाली ऊर्णु धातु से होगा । ऊर्णु + उ अर् + उ उरु + ई ।ङीप्। उर्वी। । यह निर्वचन स्वयं यास्क का है ।। ।।।। आचार्यओर्णवाभ इसे आच्छादनार्थ वृञ् से निष्पन्न मानते हैं — वृ + उ उर् + उ उरु + ई ।ङीप्।— उर्वी। ।। सायण—ऋ0भा0। "उर्वी:, उरुशब्दात् " वोतो गुणवचनात् इति ङीप । "वाछन्दसि" इति सर्वादीप्रत्ययस्वर: ।। विल्सन— ।ऋ0सं0। " commands "/ "चौड़ाई में".

इस प्रकार इसका अर्थ "पृथ्वी" उचित है ।।

यान:— जाती है; सायण— ।ऋ0भा0। "गच्छन्:"/"जाती है;" विल्सन— ।ऋ0सं0। " flow "/" बहती है;" ग्रिफिथ—।ऋ0सं0। " flow ", "बहती है;" गेल्डनर—।द ऋ0सं0। " fliessen "/ flow "/"बहती है;"

इस प्रकार इसका अर्थ—"जाती है ।बहती है।" उचित है ।।

इसका इस प्रकार वास्तविक अर्थ "कवो" ही हुआ ॥

of

कारो— हे कवि; (Y.N.V.S.)—" voc singular of कारु form vr to make with the suffix उण्, voc not in the begining; hence unaccented. Final ओ is प्रगृह्य only in the pada' text; hence इति (सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे — Pan 1.1.16)., —— विल्सन— (पु०सं०) " celebrator / " वाले"; ग्रिफिथ— (पु०सं०) " o bard "हे कवि"; ग्रासमैन— (द पु०सं०) "o Dichter "/ " हे कवि"; गेल्डनर — द० पु०सं० " o Dichter " / "हे कवि "

इस प्रकार इसका अर्थ " हे कवि" उचित है ॥

ओषु स्वसार: कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन ।

नि षु नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षा: सिन्धव: स्रोत्याभि: ॥

अन्वय— ओ सुस्वसार:, कारवे शृणोत व: दूरात् अनसा रथेन ययौ । सुनि नमध्वम् । सिन्धव । स्रोत्याभि: अधोअक्ष: सुपारा: भवत ॥

अनुवाद— हे सुन्दर बहनों ! (मुझ) कवि की (बात) सुनो, (क्यों कि मैं) तुम्हारेपास बहुत दूर से गाड़ी तथा रथ के साथ आया हूँ । अच्छी प्रकार से झुक जाओ, हे नदियों, अपनी जल धारा से अक्ष के नीचे होकर (बहती हुई) आसानी से पार करने योग्य हो जाओ ॥

टिप्पणी-- ययौ--आया हूँ;--सायण-- ।ऋ०भा०। "या प्रापणे" इत्यस्य भूतसामान्ये लिट्युत्तमे णलि "आत औ णलः" इत्यौकारः एकादेशः स्वरः।; विल्सन-- ।अ०अं०।" has come "/ "आया हूँ" ग्रिफिथ -- ।अ०अं०।" cometh /
"आया हूँ।"

इस प्रकार इसका अर्थ " आया हूँ, उचित है ॥

शृणोत-- सुनो।

सायण-- ।ऋ०भा०। "श्रु श्रवणे" इत्यस्य लोटि मध्यमबहुवचने "तप्तनप्तन-नाश्च" इति तबादेशः। पित्त्वाद्गुणः। निघातः। "शृणोत शृणुत। विल्सन-- ।अ०अं०। "Listen / " सुनो; ग्रिफिथ-- ।अ०अं०। " Listen "/ सुनो;

इस प्रकार इसका अर्थ-- "सुनो" उचित है ॥

नमस्यत्-- झुक जाओ; सायण--।ऋ०भा०। "नमस्यत् आत्मनात्मनं प्रह्वाः भवत" । नमस्यत् ज्ञानु प्रह्वत्वे रेफे च" इत्यस्य कर्मकर्तरि" न दुहस्नुनमां यक्चिणौ" इति प्रतिषेधात् यगभावः। विल्सन-- ।अ०अं०।" bow down"/ "झुक जाओ; ग्रिफिथ-- ।अ०अं०। " bow down "/"झुक जाओ;

अधोअक्षाः-- धके के धुरे से नीचे रहकर सायण--।ऋ०भा०। "स्थाः अस्याः अस्या-अस्याधस्तादभवत्" । यदा पोऽक्षस्य अधस्ताद्भवन्ति तदा रथादीनि नेतुं शक्यन्ते। तस्मात् तत्परिमाणोदकाः भवतेति अभिप्रायः। अधोअक्षाः "अधशब्दस्य "पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम्" इत्यसि- प्रत्ययोऽधादेशश्च। अक्षशब्दः "अश्नोतेः" इत्यस्मात् "औणादिके" ।उ०सू०3,345। इति क्सप्रत्ययान्तः। बहुव्रीहौ प्रकृतिस्वरः।, विल्सन--।अ०अं०। " remain lower than the axle "/ धके के धुरे से

नीचेहोकर; ग्रिफिथ-- (अं०) below our axle "/" हमारे अक्ष के नीचे, ग्रासमैन--(जर्मन अं०) "bis zurAchse / "below our axle"/ "हमारे अक्ष के नीचे;"

इस प्रकार इसका अर्थ "चक्के के धुरे से नीचे होकर" उचित है,

स्रोत्याभिः--अपनी जलधारा से ; सायण-- (भाष्य) "स्रोत्याभिः "स्रोतस् शब्दात् "स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ" (पा०सू० 4-4-113) इति ड्यप्रत्ययः। डित्वात् टि लोपः। प्रत्ययस्वरः। "स्रवणशीलाभिरद्भिः"। विल्सन-- (अं०) "with your currents "/"अपनी जलधारा से; ग्रिफिथ --(अं०) "with your floods "/" अपनी जलधारा से;" ।

इस प्रकार इसका अर्थ "अपनी जलधारा से" उचित है ॥

आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन ।

नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते ॥

अन्वय-- कारो ! (वयम्) ते वचांसि आ शृणवाम, (त्वं) दूरात् अनसा रथेन ययाथ । ते (अहं) नि नंसै, पीप्यानेव योषा (स्वपुत्राय) तथा मर्यायेव कन्या शश्वचै (नंसै) ॥

अनुवाद-- हे कवि ! हम तुम्हारी बातें सुनती हैं (क्योंकि) तुम बहुत दूर से गाड़ी तथा रथ के साथ आये हो, तुम्हारे लिए मैं नीचे झुकती हूँ जैसे दूध भरे स्तन वाली औरत (अपने पुत्र के लिए) तथा जैसे युवती अपने प्रेमी का आलिंगन करने के लिए (झुकती) है ॥

टिप्पणी-- निनंसै-- नीचे झुकती हूँ; यास्क- (निरुक्त) "यदि नि + नम् का

भाविततदर्थस्थितिमिति कानीयं स्यात् । विस्तर: ।" विल्सन-- १९७०।-- " like a nursing."/" सेविकाकी तरह" ग्रिफिथ-- १९७०। " like a nursing "/" सेविका की तरह"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "तुम्हारे स्तनपायी की तरह"--उचित है ।।

ते-- तुम्हारे लिए;

(vide, VSB, PIII.5) wherethere is a least possibility of confusion regarding the form of a wordइति is added after to it in the pada text andइति the original word is repeated. Here one may be in a confusion that ते is a conjugation termination To avoid this confusion and to as certain that ते is a doublet of युष्मद् in dat. sing.इति is added after ते and after इति, ते is repeated in the pada text " सायण-- १९७०।" ते -त्वदर्थं"/ "तुम्हारे लिए" विल्सन--१९७०। " before the /"तुम्हारे सामने"

इस प्रकार इसका अर्थ " तुम्हारे लिए" उचित है ।।

वदन्तु त्वा भरता: संतरेयुर्गव्यन्त्ग्रामभ्यवित इन्द्रयुत: ।

अर्षादह प्रसव: सर्गतक्त: आवो वृणेसुमतिं यज्ञियानाम् ।।

अन्वय-- अह [अस्मात्] यत् भरता: [अब्याम्] त्वा संतरेयु: गव्यन्, इषित: इन्द्रयुत: [भरतसंघात] ग्राम: [संतरेयु:] य: अह: सर्गतक्त: अर्षात् । [अहम्] यज्ञियानाम् सुमतिम् आवृणे ।।

अनुवाद— हे (नदियों), चूंकि—(तुम्हारी अनुमति मिल गई है इसलिए)
भरतों (हम लोग) तुमको पार करें; पार जाने की इच्छा वाला, (तुम्हारे द्वारा) अनुमति एवं इन्द्र द्वारा भेजा गया (भरतवंशियों का) (झुण्ड (पार करे))
(तुम्हारा) (प्रवाह अपनी स्वाभाविक गति में प्रवाहित होता हुआ बहे, मैं
पवित्र नदियों का समर्थन चाहता हूँ ।।

टिप्पणी— संतरेयु— एकसाथ पार करें; सायण— (सा०)/"सम्यगुत्तीर्णा भवेयुः
तदेवविशिनष्टि ।" संतरेयु "तरतेर्लिङि जुसि रूपम्" । अर्थ सार्वधातुक स्वरे
धातुस्वरः । "तिङि चोदात्तवति" इति गतेर्निघातः ।।; विल्सन—
(वि०)" pass over /" पार करें; ग्रिफिथ— (ग्रि०) " fared across
" / "एक साथ पार करें;

इस प्रकार इसका अर्थ " एक साथ पार करें " उचित है ।।

गव्यन्—पार जाने की इच्छा वाला; सायण— (सा०)" गा उदकानि
तरीतुमिच्छन्" । गव्यन् । गा आत्म—इच्छन् । कुः क्यच् । एकादेशस्वरः ।
(सा०: "गुणेतरा व" (उ०सू० 1,140) इति मध्यस्थ आकारादेशश्च । निस्स्वरः।
विल्सन— (वि०) "desiring to cross "/ पार जाने की इच्छा;

इस प्रकार इसका अर्थ "पार जाने की इच्छा वाला" उचित है ।।

अर्षात्— बहे; सायण— (सा०)"ऋ गतौ इत्यस्य लेटि सिपि "सिब्बहुलम्"
इति सिप् । अट आगमः । "एकाचः" इतीट्प्रतिषेधः । गुणः । प्रत्ययस्य
पित्त्वादनुदात्तत्वे धातुस्वरः । विल्सन—(वि०) " pass "/बहे; ग्रिफिथ—
(ग्रि०) " flow /"बहे; इस प्रकार इसका अर्थ "बहे" उचित है ।।

इन्द्रेषित:-- इन्द्र द्वारा भेजा गया; ---

सायण--।ऋ0भा0। "षु इति गतिरेधातुर्गत्यर्थ: ।" सुक: कितिं" इति निष्ठायामिट प्रतिषेध: । " तृतीया कर्मणि" इति पूर्वपदप्रकृतिस्वर: ।; विल्सन--।ऋ0अं0। "Impelled by Indra "/ " इन्द्र द्वारा भेजा गया; ग्रिफिथ -- sped by Indra "/ "इन्द्र द्वारा भेजा गया," ग्रासमैन-।द ऋ0अं0।" beeilt von Indrā/ "इन्द्र द्वारा भेजा गया", गेल्डनर--।द ऋ0 अं0। " vonel Indra "/"इन्द्र द्वारा भेजा गया,"

इस प्रकार इसका अर्थ "इन्द्र द्वारा भेजा गया" उचित है ।।

अतारिषुर्भरता गव्यव: समभक्त विप्र: सुमतिं नदीनाम्॥

प्र पिन्वध्वमिषयन्ती: सुराधा: आ वक्षणा: पृणध्वं यात शीभम् ।।

अन्वय-- गव्यव: भरता: अतारिषु:, विप्र: नदीनाम् सुमतिम् समभक्त । सुराधा: (यूयं) इषयन्ती वक्षणा: प्र पिन्वध्वम् । आपृणध्वम्, शीभम्यात ।।

अनुवाद-- पार जाने की इच्छा वाले भरतवंशियों ने पार कर लिया; ब्राह्मण ने नदियों का समर्थन प्राप्त कर लिया । सुन्दर धन वाली (तुमलोग) धन वाली हुई अपनी जगह पर --प्रवाहित होओ, भर जाओ, शीघ्रता से बहो ।।

टिप्पणी-- अतारिषु-- पारकर लिया;

सायण-- ।ऋ0भा0। "तृप्लवनतरणयो: इत्यस्य लुङि, " सिचिवृद्धि: परस्मैपदेषु" इति वृद्धि: । अडागमस्वर: ।; विल्सन--।ऋ0अं0। " passed over "/"पार कर लिया," ग्रिफिथ-- ।ऋ0अं0।" fared over "/" पार कर लिया", ग्रासमैन-।द ऋ0अं0। "/"पारकर लिया" गेल्डनर-- ।द ऋ0अं0। hinüber / "पार कर लिया,

(10 - 10) यम - यमी

ओ चित्सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान् ।

पितुर्नपातमादधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः ।।

अन्वय-- तिरः पुरुचित् अर्णवं जगन्वान् सखायं सख्या चित् ओ ववृत्यां ।
अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः वेधाः पितुः नपातम् आदधीत ।।

अनुवाद-- (यमी कहती है कि) अन्तर्हित (एवं विस्तृत समुद्र) में गये हुए अपने सखा (यम) को मैं मित्रता के लिए लौटा लाती हूँ । इस पृथ्वी पर (मानव वंश के) विस्तार (प्रसार) को ध्यान में रखते हुए विधाता ने मेरे पिता के पुत्र अर्थात यम को मेरे पति के रूप में प्रदान करें ।।

टिप्पणी-- जगन्वान् - गये हुए; "गम्" लिट्लकार, क्वसु, जगन्वस्, जगन्वान् के स्थान पर वैदिक रूप जगन्वान् होगा। सायण- (ऋ0भा0) " गतवती"/ "गये हुए", वेङ्कट- (ऋ0भा0) "गच्छन्"/"जाते हुए", विल्सन-(ऋ0वृ0) "having come "/"आते हुए (समुद्र की ओर)" ग्रिफिथ--(ऋ0वृ0)" come through "/" आते हुए (समुद्र की ओर); गेल्डनर- (ऋ वृ0) " gegangen "/ "आते हुए", इस प्रकार इसका अर्थ "गये हुए" उचित है ।।

दीध्यानः-- ध्यान में रखते हुए;

ध्यैध्यानम्, शानच् प्रथम पुरुष, एकवचन, सायण --(ऋ0भा0) दीध्यानः आवयोरनुत्पन्नस्य पुत्रस्य जननं भावयन् ध्यायन् आदधीत", ग्रिफिथ-- (ऋ वृ0) " Remembering"/" ध्यान रखते हुए; वेङ्कट-(ऋ0भा0) "अनुध्यायन्"/"ध्यान में रखते हुए";

इस प्रकार इसका अर्थ "ध्यान में रखते हुए" उपयुक्त है ।।

सख्या — मित्रता के लिए;

सायण—(ऋ०भा०) "स्त्रीपुंसलक्षणसम्बन्धजनितमित्रत्वाय", वेङ्कट—(ऋ०भा०)— "सख्याय"/ "मित्रता के लिए"; विल्सन—(ऋ०अ०) " to friendship "/"मित्रता के लिए", ग्रिफिथ—(ऋ०अ०)" to friendship /" मित्रता के लिए"; ग्रासमैन—(ऋ० अ०) "Freundschaft'/ friendship/"मित्रता के लिए"; गेल्डनर—(ऋ० अ०) " Freundschaft' friendship /"मित्रता के लिए,; इस प्रकार इसका अर्थ "मित्रता के लिए" उचित है ।।

न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत्सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति ।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीराः दिवो धर्तार उर्वियापरिख्यन् ।।

अन्वय— ते सख्य एतद् सख्यम् न वष्टि यद् सलक्ष्मा विषुरूपा भवाति, महस्पुत्रासः असुरस्य वीरा दिवः धर्तारः उर्विया परिख्यन् ।।

अनुवाद— (यम) हे यमी ! तेरा सखा (यह यम) इस प्रकार की (प्रतिरूपी) मित्रता नहीं चाहता क्योंकि समान योनि जन्मा विभिन्न रूप अर्थात भिन्न स्थानों पर सम्बन्ध करने वाले होते हैं । महान पुत्र, परम शक्तिशाली परमेश्वर (प्रजापति) की सन्तानें (पुत्र) द्युलोक को धारण करने वाले देवलोग पृथ्वी को विस्तृत रूप से चारों ओर देखते हैं, (अर्थात् उनसे यह हमारा अनुचित कार्य छिपा नहीं रहता)।

टिप्पणी— न वष्टि- कामना नहीं करता;

सायण—।ऋ0भा0। "न कामयते"/ "कामना नहीं करता"।, वेङ्कट- ।ऋ0भा0। "न कामयते"/"कामना नहीं करता"।, विल्सन—।द ऋ0। "desires not "/ "इच्छा नहीं करता"।, ग्रिफिथ— ।द ऋ0।" loves not /"नहीं चाहता"।, ग्रासमैन— ।द ऋ0सं0। "nicht dolche"/ "नहीं इच्छा करता"।, गेल्डनर— ।द ऋ0सं0। "nicht dolche /"नहीं इच्छा करता"।, इस प्रकार इसका अर्थ "कामना नहीं करता" उचित है ।।

सनळ्ना— समान योनि जन्मा;

सायण— ।ऋ0भा0। "समानयोनित्वलक्षणा", वेङ्कट- ।ऋ0भा0।" समानलाञ्छना एक पितृकत्वाद्"।, विल्सन— ।द ऋ0। "one origin /" समानजन्मा"।, ग्रिफिथ-द ऋ0। "near in kind red"/"संबंधी में समीपअर्थात समान जन्मा"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "समान योनि जन्मा" उचित है ।।

वीरा: — पराक्रमशाली;

सायण— ।ऋ0भा0। "वीरो वीर यत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद्गति-कर्मणोवीरयतेर्वा" ।निरुक्त 1-7। ।।, वेङ्कट—।ऋ0भा0। "बलवतोऽङ्गस्य वीराः"।, विल्सन—।द ऋ0। " Hero /"सर्वशक्तिमान"।, ग्रिफिथ— ।द ऋ0। " The heroes /" सर्वशक्तिशाली"।, गेल्डनर— ।द ऋ0सं0। " seine Mannen "/" सर्वशक्तिमान"।, ग्रासमैन—।द ऋ0सं0। "seine Mannen "/ "सर्वशक्तिमान"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "पराक्रमशाली" उचित है ।।

महस्पुत्रास: -- महान पुत्र;

सायण -- ।ऋ०भा०। "महत: पुत्रभूता:" ।, वेङ्कट -।ऋ०भा०। "महत: पुत्रा:"/"महानपुत्र"।, विल्सन--।इ०ऋ०। "hero sons"/"महान पुत्र"।, ग्रिफिथ--।इ०ऋ०। "Sons of the mighty"/" महानतम् पुत्र"।, ग्रासमैन - ।द ऋ०सं०। "grossen sohne heroes sons "/ "महान पुत्र"।, गेल्डनर--।द ऋ०सं०। "groben sohne/great sob /"महान पुत्र"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "महान पुत्र" उपयुक्त है ।।

दिव:-- द्युलोक को;

सायण-- ।ऋ०भा०।"द्युलोकस्य, प्रदर्शनमेतत् । द्युप्रभृतीनां लोकाना-मित्यर्थ:।", वेङ्कट --।ऋ०भा०। "द्युलोकस्य"/"द्युलोककी"।, विल्सन - ।इ०ऋ०। " of heaven " "द्युलोक को" ।, ग्रिफिथ - ।इ०ऋ०। " of the heavens " /" द्युलोक को"।, ग्रासमैन- ।द ऋ०सं०। "des Himmels of heavens /" द्युलोक को"।, गेल्डनर-- ।द ऋ०सं०। "des Himmels /" द्युलोक को-।, इस प्रकार इसका अर्थ "द्युलोक को" उचित है ।।

उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्यचित्त्यजसं मर्त्यस्य ।

नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्व मा विविश्याः ।।

अन्वय-- ते घ अमृतास: एतत् एकस्यचित् मर्त्यस्य त्यजसम् उशन्ति, ते मन: अस्मे मनसि निधायि, जन्यु: पति: तन्वं आविविश्या ।।

अनुवाद --(पत्नी) हे पत ! वे देवगण भी इस प्रकार के समान जन्मा मनुष्य के विवाह सम्बन्ध की कामना करते हैं । अतः अपने मन को मेरे मन में निहित करो, तुम स्त्री के पति होकर मेरे शरीर में प्रवेश करो ।। (अर्थात मेरा आलिंगन, चुम्बन करते हुए सम्भोग करो) ।।

टिप्पणी-- चकमिरे -- कामना करते हैं;

कम् कान्त्यौ, लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन; सायण- ।ऋ०भा०। "कामयन्ते" /"कामना करते हैं"।, वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "कामयन्ते"/ "कामना करते हैं"।,विल्सन--।इ०ऋ०। " take pleasure "/ "इच्छा करते हैं"।, ग्रिफिथ-- ।इ ऋ०। " seek "/"कामना करते हैं" उचित है ।।

अमृतास-- देवगण;

अमृताः, अमृतासः दोनों ही रूप वेद में बनते हैं। सायण --।ऋ०भा०। "प्रजापत्यादयो: देवा:"/ "प्रजापतिआदि देवगण"।, वेङ्कट- ।ऋ०भा०। "देवा:"/ "देवतालोग"।, विल्सन- ।इ०ऋ०। " Immortals"/ अमर अर्थात देवतालोग"।, ग्रिफिथ- ।इ०ऋ०। " Immortals "/"अमर अर्थात देवगण"।, ग्रासमेन -।द ऋ०सं०। " Gotter "/" देवता लोग", गेल्डनर-- ।द०ऋ०सं०। " gœrode "/" god "/"देवगण"।, इस प्रकार इसका अर्थ "देवगण" सर्वथा उपयुक्त है ।।

आविविश्या-- प्रवेश करो;

सायण-- ।ऋ०भा०। "सम्भोगेन विश, यौनों पुत्रजननेर्योग्यत्वयुक्त-नादिना मां कैयूबवेशर्यः"।, वेङ्कट - ।ऋ०भा०। "विश"/ "प्रवेश करो"।,

विल्सन- ।द0अ0। "enjoy "। "आनन्द लो" ।, ग्रिफिथ - ।द0अ0। "take "लेत" / "प्रवेश लो"।, गेल्डनर-- ।द0अ0सं0। "engehen"/"enjoy " "आनन्द लो"।, इस प्रकार इसका "प्रवेश करो" अर्थ उचित है ।।

तन्वं -- शरीर में;

सायण--।अ0भा0। "शरीर"/"शरीर में"।, वेङ्कट--।अ0भा0। "शरीर"/ में"।, विल्सन--।द अ0।" person "/"शरीर" ।, ग्रिफिथ--।दअ0।" thy xobeort "/"शरीर में"।, गेल्डनर-- ।द अ0सं0। " in seines "/"शरीर में"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " शरीर में" उचित है ।।

न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम ।

गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नौ नाभिः परमं जामि तन्नौ ।।

अन्वय-- कत् ह नूनम् यत् पुरा न चकृम, ऋता वदन्तः अनृतम् रपेम । अप्सु गन्धर्वः अप्या च योषा, सा नः नाभिः, तत् नौ परमम् जामि ।।,

अनुवाद-- ।यम। हे यमी, जैसा सचमुच ही हमने पहले कभी नहीं किया। ऐसा करने से हम देवों के व्रतों, नियमों का आचरण करने वाले होंगे । हम सत्य बोलते हुए अनृत ।असत्य। बोलें। जलों के मध्य या अन्तरिक्ष का गन्धर्व अर्थात् आदित्य ।अथवा नाव स्त्रीआग्नि। और जलमयी स्त्री अर्थात् अन्तरिक्षस्था आदित्यपत्नी सरण्यू वह हमारी नाभि ।उत्पत्ति स्थान। है, वही हमारा परम ।सर्वोत्कृष्ट। सम्बन्ध है ।।

टिप्पणी-- वदन्त -- बोलते हुए;

"वद" परिभाषणे, शतृ प्रथमा एक वचन।; सायण- अ0भा0।

"ब्रुवन्त:"/"बोलते हुए"।; वेङ्कट- ।ऋ०भा०। "वदन्त:"/बोलते हुए।;
विल्सन—।द ऋ०।" speak /"बोलते हुए।, ग्रिफिथ— ।द ऋ०। " spoke "/
"बोला"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "बोलते हुए" उचित है ।।

वदेम— बोलें;

"वद्"सम्भाषणे, विधिलिङ्. उत्तमपुरुष बहुवचन।।; सायण- ।ऋ०भा०।
"वदेम"/ "बोलें", वेङ्कट- ।ऋ०भा०।" ब्रुम:"/"बोलें". विल्सन— ।द ऋ०।
" utter " /" to speak /"बोलें", ग्रिफिथ — ।द०ऋ०।" talk "/
"बोलना",

इस प्रकार इसका अर्थ "बोलें" उचित है ।।

चकृम— किया; "डुकृञ्करणे, लिट् परस्मैपदी उत्तमपुरुष बहुवचन; सायण —
।ऋ०भा०।"कृर्म:" /"किया", वेङ्कट — ।ऋ०भा०। "कुर्म:"/ "~~[illegible]~~
"किया",। विल्सन— ।द ऋ०। " done "/ "किया"।, ग्रिफिथ—
।द ऋ०।" did "/ " किया" ।; गेल्डनर- । द ऋ०वे०। " getan "/
"किया", ग्रासमैन— ।द ऋ०वे०। " Jet t " / "किया".

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "किया"उचित है ।।

योषा— ।जलमयी। स्त्री, ।आदित्य की पत्नी।; T. Benfey(S.E.D)
जुष्ट अ, chr 297.5=Rig. 1-48-5;chr 295.11=Rigv.1.92
11-Comp. Garbha-.f. A prugnant women.M. BH.13.1846(figurat)
Deva.f. the wife a God MBH.9.2714;

सायण- ।ऋ०भा०। "आदित्यस्य भार्या", वेङ्कट-ऋ०भा०।" आदित्य:
भार्या:;" विल्सन—।द ऋ०। " watery(firmament) "/ जलमयी।स्त्री।;

ग्रिफिथ-- [द०अं०] "watery(firmament)" "जलमयी स्त्री", ग्रासमैन-- [द० अं०] "dem/"स्त्री" गेल्डनर -- [द अं०] "dem(wasser) / dame(wate' / जलमयी स्त्री; इस प्रकार इसका अर्थ "स्त्री [जलमयी" उचित है।

गर्भे नु नौ जनिता दंपती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।

न किरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः ।।

अन्वय-- त्वष्टा सविता विश्वरूपः जनिता देवः गर्भे नु नौ दम्पती कः, अस्य व्रतानि न किः प्रमिनन्ति, अस्य नौ पृथ्वी उत द्यौः [वेद] ।।

अनुवाद-- [यमी] हे यम, त्वष्टा, सविता, विश्वरूप प्रजापति देव ने गर्भ में ही हम दोनों को दम्पती [पति-पत्नी] बना दिया। इस देव के व्रतों का कोई उल्लंघन नहीं करता, हमारे इस सम्बन्ध के विषय में पृथ्वी और द्युलोक [दोनों ही] जानते हैं ।।

टिप्पणी-- मिनन्ति-- उल्लंघन करता है, मीञ्हिंसायाम्, लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन; सायण- [ऋ०भा०] "हिंसन्ति । --लोपयन्तीत्यर्थः। अतः कारणभविष्यायामेवावयोः प्रजापतिकृते दंपतित्वे सति तस्योगैर्भविंत्यर्थः" वेङ्कट--[ऋ०भा०] "हिंसन्ति" / "उल्लंघन करते हैं; विल्सन--[द०अं०] "frustrate, "विफल करते हैं;" ग्रिफिथ-- [द अं०] "violates/ "हिंसित करते हैं"]; ग्रासमैन -- [द अं०अं०] "verletzen'/violate' "हिंसित करते हैं"]; गेल्डनर -- [द०अं०अं०]" Übertreten "/" उल्लंघन करता है"],

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "उल्लंघन करता है [हिंसित करता है] उचित है ।।

गर्भे— (गर्भ में),

सायण--।ऋ०भा०।"गर्भावस्थायामेव"/"गर्भ की अवस्था में ही",
वेङ्कट--।ऋ०भा०। "गर्भे/"गर्भ में", विल्सन - ।द ऋ०। " In the womb"
गर्भ में", ग्रिफिथ - ।ऋ०भा०। "In the womb "/"गर्भ में"।, ग्रासमैन--
।द ऋ०वि०।"Im Mutterleib /In Mother-womb "/ " माता
के गर्भ में "।; गेल्डनर--।द ऋ०सं०। " Im Motterleib' "/ In Mother womb
माता के गर्भ में"।,

इस प्रकार इस शब्द का "गर्भ में" अर्थ अत्यन्त उपयुक्त है ।।

वेद— जानते हैं; विद्+ ज्ञाने", "विद् विचारणे "विद् लाभे" विद्अव्
अवत", सायण— ।ऋ०भा०। "जानाति", वेङ्कट— ।ऋ०भा०।"वेद"/"
जानते हैं; विल्सन —।द ऋ०।" are conscious"/"जाग्रत है",।,
ग्रिफिथ - ।द ऋ०। "are acknowledge" --/ जानते हैं"।; डब्ल्यूबेनमो--
(संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश) --" The generic name for thesacred
writings of the Hibdus, especially for the four collections
called Rigved-, Rich-Yajurved,i.e.Yajus-,samaveda, i.e.
Samen, and Atharvaveda,i.e, Athorvan- Man.1,21; Panch iii
d.64,205(Pl.); MBH, in chr.94,2 (Three vedas,i.e. the three
first) com A-,M,oblivion, Man.5,60 Ayurveda,i.e Ayus-M,1-
the Sdience of Medicine, suer 1,1,12,2. the writing of Auth
ority on medixine, H ric.1539. Kshatra-,M the veda of the
second xaste (sxienxe of gocernment, politixs), Ram 1,65,22
Gandharva-,M,the science of Musie Chatur,I.M Pl 1- the
four vedas, Harin 14074,2.A Kind of Manes, MBH 2, 463 11

adj. 1-containing the four vedas, ib 3,13560. 2 conversant with the four vedas, Haric. 7993 Tri-, adj. conversant with the three (first) vedas (i.e. the Rich, Yajus, and saman) Mas 2.118 Dus-, Adj. 1. difficult to be known. Ram. 4.46, 2. 2 unlearned. MBH 3.13437 Dhanurveda, i.e. dhanus-, the knowledge of the bow, of the archery, the title of a sacred work. Ram-5.32. 9; Johns. 57.161 (with sapshat, the embodied Dhanurveda) Pari-, m.---complete knowledge. MBH. 3.13462"

इस प्रकार इसका अर्थ "जानते हैं" उपयुक्त है ।।

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः कई ददर्श क इह प्रवोचत ।

बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धामकदुब्रव आहनो वीच्यानृन् ।।

अन्वय-- अस्य प्रथमस्य अह्नः कः वेद, ईं कः ददर्श, कः इह प्रवोचत्, मित्रस्य वरुणस्य बृहद् धाम, आहनः, नृन् वीच्याकत उ ब्रव ।।

अनुवाद-- (यमी) हे यम! इस प्रथम दिन के सम्बन्ध में कौन जानता है, किसने उसको देखा, कौन यहाँ उसके बारे में कह सकता है। मित्र तथा वरुण का तेज बहुत विशाल है अर्थात् हम उससे दूर नहीं जा सकते । हे आघात करने वाली (यमी) सब मनुष्यों को छोड़ कर मुझसे ऐसा क्यों कहती हो ।।

टिप्पणी-- ददर्श-- देखा;

"दृश्"धातु, लिट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन। सायण--(ऋ०भा०) "पश्यति"/"देखा"। वेङ्कट--(ऋ०भा०) "पश्यति"/"देखा"। विल्सन-(ऋ०) "Beheld / "देखा"। ग्रिफिथ -- (ऋ०) "Beheld/"देखा"।

ग्रासमैन-- ।द ध्रु०सं०। " sah / saw "/ "देखा"।, गेल्डनर- ।द०ध्रु०सं०।
"sehen "।/ seen "/ "देखा" ।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "देखा" सर्वथा उपयुक्त है ।।

वोचत्-- कहलकता है;

सायण-- ।ध्रु०भा०। "अध्यापयति"/ "कहलकता है", वेङ्कट--
।ध्रु०भा०। "वक्ति"/"कहता है", विल्सन--।द०ध्रु०। " has revealed " /
"कहलकता है", ग्रिफिथ--।द ध्रु०। " can declare "। "कहलकता है"।,
ग्रासमैन- ।द ध्रु०सं०। " verkunden"/"कहलकता है"।, गेल्डनर--।द ध्रु०सं०।
" kannes-aussagen/ "कह सकता है"।, इस प्रकार -

आहन:-- आघात करने वाली;

सायण-- ।ध्रु०भा०।" हे आहन: आहन्त्सर्वथदियाषिजित:। स्वकृत-
शुभाशुभ कर्मा पेक्षया मनुष्यादि प्राणिनां नरकातैव स्वर्ग प्रापणेन निग्रहानु-
ग्रहयो: कर्तीरित्यर्थ: ।" वेंकट-- ।ध्रु०भा०। " आहन्त:"/ "आघात करने
वाली; ग्रिफिथ -- ।द ध्रु०। " wanton/ "आघात करने वाली"।,
ग्रासमैन-- ।द ध्रु०सं०। " upp'ge "/ "आघात करने वाली"।; गेल्डनर--
।द ध्रु०सं०। " aufdringliche/ आघात करने वाली"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "आघात करने वाली" उपयुक्त है ।।

ब्रव-- कहती हो;

सायण--।ध्रु०भा०।"ब्रवीषि"/"कहती हो, वेङ्कट --।ध्रु०भा०।
"ब्रवीषि" / "कहती हो", विल्सन--।द०ध्रु०। " sayest "/"कहती
हो; ग्रिफिथ - ।द ध्रु०। " say" / कहती हो।, ग्रासमैन -- ।द ध्रु०सं०।

"sprichst "/sayest "/ "कहती हो", गेल्डनर— ।द०पृ०।
"sagen/'says /कहती हो"।.

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "कहती हो" उचित है ।।

यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौसहशेय्याय ।
जायेव पत्ये तन्वंरिरिच्यांविचिद्‌वृहेवरथ्येव चक्रा ।।

अन्वय — समाने योनौ सहशेय्याय यमस्ययम्यं मा कामः आगन्, (अहम्)
पत्येजायाइव (यमाय) तन्वं रिरिच्याम्, रथ्याचक्राइवचिद् विवृहेव ।।

अनुवाद— (यमी) हे यम, समान स्थान में साथ सोने के लिए मुझ यमी के
प्रति (यम तुम्हारी) इच्छा जाग्रत हो (मैं) पति के प्रतिपत्नी के समान
यम के लिए अपने शरीर को (संभोग के लिए) विवृत करूँगी । रथ के दोनों
पहियों की भांति हम दोनों साथ साथ आगे बढ़ें (उद्यम करें)।।

टिप्पणी— सहशेय्याय — साथ सोने के लिए;

सायण— (ऋ०भा०) "सहशयनार्थम्"/साथ सोने के लिए"।, वेङ्कट—
(ऋ०भा०) "एकस्मिन् शयने । सहशयनादीय ।; विल्सन (द पृ०)
lie with him in same bed/" "एक ही बिस्तर पर उसके साथ लेटना;

ग्रिफिथ— (द पृ०) "rest on the same couch/" एक ही बिस्तर
पर आराम करना", ग्रासमैन— (द०पृ०) "mit ihm in gleichem Bette'
'with him in same bed "/ "एक ही बिस्तर पर उसके
साथ (सोने के लिए);

रिरिच्याम्— विवृत करूँगी;

सायण—(ऋ०भा०) "विविच्याम्। स्वदेहं प्रकाशयेयमित्यर्थः ।"

वेङ्कट --।10।70। "विर्वह"/"छोडूँगी"।; विल्सन--।द0।0। "I will abandon"/"विवृत करूँगी", ग्रिफिथ--।द0।0। "would yield "/ "छोड़ूँगी", ग्रासमैन- ।द।0। "als dirdem", will abandon"/ "विवृत करूँगी", गेल्डनर--।द।0। "will den /"छोडूँगी"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "विवृत करूँगी" उचित है ।।

रथ्येव चक्रा -- रथ के पहिये की भाँति;

सायण--।10।70। "रथस्यावयवभूते चक्रे यथा रथमुपयच्छतस्तद्वद्"।;
वेङ्कट--।10।70। "रथ्यचक्राणि"/ "रथ के पहिये की भाँति "।, विल्सन - ।द।0। " like the two wheels of a waggon"/रथ के दो पहियों के समान"।, ग्रिफिथ--।द।0। "like car wheels "/ " रथ के पहियों की भाँति"।; ग्रासमैन-।द।0। " des wagens Rader "/ "रथ के पहियों की भाँति"।, गेल्डनर-- ।द।0। "des wagen-rader "रथ के पहियों की भाँति"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "रथ के पहियों की भाँति" उपयुक्त है।।

विवृह-- आगे बढ़ें; लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन।; वि+वृह उद्यमे, आगे बढ़ने के अर्थ में, सायण- ।10।70। "अर्थिकामान् विविधमुद्यच्छाव: । तत्र दृष्टान्त: ।" वेङ्कट - ।10।70। "विवृहन्ति"/ "आगे बढ़ें"।;
विल्सन--।द।0। "let exert "/"आगे बढ़ें"।; "प्रधानक्रियानिवात"।, ग्रिफिथ-- ।द।0। " let speed "/ "आगे बढ़ें"।,

इस प्रकार इसका अर्थ " आगे बढ़ें" उचित है ।।

न तिष्ठन्ति न निमिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति ।

अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन विवृहरथ्येव चक्रा ।।

अन्वय-- एते देवानाम् स्पशः ये इह चरन्ति [ते] न तिष्ठन्ति, न निमि-षन्ति, आहनः, तूयम् मत अन्येन याहि तेन रथ्याइव चक्रा विवृह ।।

अनुवाद-- [यमी] हे यमी । ये देवों के गुप्तचर जो यहाँ विचरण करते हैं वे न कभी खड़े होते हैं, न पलकें झपकाते हैं, हे आघात करने वाली ।• शीघ्र ही [मुझको] छोड़कर किसी दूसरे के साथ जाओ। उसी के साथ रथ के चक्र के समान आगे बढ़ो ।।

टिप्पणी-- चरन्ति-- विचरण करते हैं:--

चर गतौ, लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, ये के योग में निघाता-भाव।; सायण-- ।ऋ०भा०। " सर्वदा शुभाशुभलक्षण कर्मद्रष्टुं लोकानि परिभ्रमन्ति। शुभाशुभ चारः करोति तं निरीक्षन्ते वेत्यर्थः"।; वेंक•ट-- ।ऋ०भा०। "चरन्ति" / "विचरण करते हैं"।; विल्सन--।द ऋ०। " wander / विचरते हैं"।, ग्रिफिथ-- ।द ऋ०।" wander /"विचरते हैं"।, ग्रासमैन- ।द ऋ०भा०। " wandern "/ " wander "/ "विचरते हैं",

इस प्रकार इसका अर्थ "विचरण करते हैं" उपयुक्त है।।

निमिषन्ति-- पलकें झपकाते हैं;

लट् लकार प्रथमपुरुष बहुवचन, सायण--।ऋ०भा०। "मेषं कुर्वन्ति"/ पलकें झपकाते हैं"।, वेंक•कट-- ।ऋ०भा०। "निमिषन्ति" / पलकें झपकाते हैं",

विल्सन— ।द पृ0। "close their eyes "/" आँखे बन्द करते हैं",
ग्रिफिथ— ।द पृ0। "close their eylids "/ पलकें बन्द करते हैं"।,
ग्रासमैन— ।द0 पृ0भा0। "Schlummern je sie "/"पलके झपकाते हैं"।,
गेल्डनर — ।पृ0भा0। "schliessen see die augen"/"पलकें झपकाते हैं"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "पलके झपकाते हैं" उचित है ।।

तिष्ठन्ति— स्थिर होते हैं;

"तिष्ठ धातु लट् लकार प्रथमपुरुष बहुवचन।" सायण— ।पृ0भा0। "तिष्ठन्ति/ खड़े होते हैं, वेङ्कट— ।पृ0भा0। "तिष्ठन्ति" रुकते हैं"/ विल्सन— ।द पृ0। "stop /"रुकते हैं"; ग्रिफिथ—।द0पृ0। "stand "खड़े होते हैं; ग्रासमैन — ।द पृ0भा0। "stehen"/" ,stand /"खड़े होते हैं; गेल्डनर— ।द पृ0भा0। "stehen "/ stand /"खड़े होते हैं"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "स्थिर होते हैं" उचित है ।।

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात्
दिवापृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि ।।

अन्वय— अस्मै सूर्यस्य चक्षुः मुहुः उन्मिमीयात्, रात्रीभिः अहभिः दशस्येत्, दिवापृथिव्या सबन्धू मिथुना यमी यमस्य अजामि बिभृयात् ।।

अनुवाद — इस यम के लिए सूर्य की आँख थोड़ी देर के लिए खुल जाय। जिससे यह प्राचीन परम्परा का मार्ग समझ सके । रात्रियों एवं दिनों

को (जोड़े) वेद उसे कल्पित भाग को प्रदान करें अर्थात उसे प्रकट हो जाय। द्युलोक और पृथ्वीलोक जो समान जन्मा है और (जिस प्रकार वेद जोड़ा बनाते हैं उसी प्रकार यमी यम को भ्रातृत्व से भिन्न अर्थात पति के सम्बन्ध से धारण करें।

टिप्पणी— बिभृयात्— धारण करें;

थि, भृञ्धारणपोषणयोः, आशीर्वादि प्रथम पुरुष एकवचन। "बिभृयात्- धारयतु" - सायण-- (ऋ०भा०) "अनेन परिगृह्यतामित्यर्थः"। वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "बिभर्तु"/"धारण करें; विल्सन-- (ऋ० अ०)" adhere "/ "किसी मत पर दृढ़ रहना"; ग्रिफिथ--(ऋ० अ०) " Be "/"होना"। ग्रासमैन - (ऋ०अ०) " will dee "/"धारण करे"। गेल्डनर--(ऋ०अ०) " wurde dee "/" धारण करें";

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "धारण करें" अत्यन्त उपयुक्त है।।

उच्छ्रीयात्— फूलजाय;

सायण-- (ऋ०भा०)"उदेतु"/ "उदय हो जाय", वेङ्कट — (ऋ०भा०) "उदेतु"/उदय हो जाय अर्थात फूलजाय"। विल्सन- ऋ०अ०" rise "/उदित हो जाय अर्थात् फूलजाय", ग्रिफिथ-- (ऋ० अ०) " spread out "/ "फैलजाय अर्थातउदित हो जाय",

इस प्रकार इसका अर्थ "फूल जाय" उचित है।।

अजामि— भाईपन से अलग;

सायण--(ऋ०भा०) "अजामि -अभ्रातर"/"भातृत्व से भिन्न";

वेङ्कट - (ऋ०भा०)"त्वम् अभ्रातृत्वमिति"/"तुम भ्रातृत्व से भिन्न हो;

विल्सन-- ।द 0। " non affinity "/"भ्रातृत्व से अलग", ग्रिफिथ--
।द 0। "Inbrotherly "/" अभ्रातृत्व", ग्रासमैन--।द 0। " Blut-schuld "/ [अभ्रातृत्व", गेल्डनर-- ।द 0। " ungeschwister "/
भ्रातृत्व से भिन्न।;

इस प्रकार इसका अर्थ "भ्रातृत्व से भिन्न अर्थात् भाईपन से अलग"
उचित है।।

दधास्येत्-- प्रदान करे;

सायण--।भा0। "प्रयच्छतु"/ "प्रदान करे", वेङ्कट--।भा0।
"प्रयच्छतु"/ "प्रदान करे", विल्सन--।द 0।" " sacrifice "/" त्यागदे;
ग्रिफिथ--।द 0।" endow "/" प्रदान करे", ग्रासमैन--।द 0।
" bereit "/"लाये", गेल्डनर-- ।द 0। " gefällig "/
प्रदानकरे", इस प्रकार इसका अर्थ " प्रदान करे" उचित है ।।

आघा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामय: कृणवन्नजामि ।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् ।।

अन्वय-- ता उत्तरायुगानि घा आगच्छन्, यत्र जामय: अजामि कृणवन्,
सुभगे । मत् अन्यं पतिं इच्छस्व [तस्मै] वृषभाय बाहुम् उप बर्बृहि ।।

अनुवाद-- वे पूर्ववर्ती युग निश्चित ही [आयेंगे] जहाँ समान जन्मा भाई
बहन भ्रातृत्व भाव से भिन्न सम्बन्ध अर्थात पतिपत्नी सम्बन्ध स्थापित
करते है, हे सुभगे । मुझसे भिन्न किसी अन्य को पतिरूप में ग्रहण करने की
इच्छा करो और उसी वृषभ [कामनासेचक] के लिए अपनी भुजा का
सिरहाना बनाओ ।।

टिप्पणी-- कृणवत्-- करेंगे;

कृ कृञ करणे, तेद् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन।; सा.वण--।वृ0भा0। "करिष्यन्ति"/"करेंगे", वेङ्•कट--।वृ0भा0। "करिष्यन्ति"/"करेंगे"।; विल्सन--।द0वृ0।" will choose "/ "चुनेंगे"।; ग्रिफिथ --।द वृ0। " will do "/ "करेंगे"।.

इस प्रकार इसका अर्थ "करेंगे" उपयुक्त है ।।

वृष्णाय-- वृष्ण के लिए;

"वृषु" सेचने, कानना सेचक।, सा.वण--।वृ0भा0"तव योनौ रेतः से को पुत्राय आत्मीय", वेङ्•कट- ।वृ0भा0। "वृषे आत्मीयत्", विल्सन-।द वृ0। " for thy mate "/" वृष्ण के लिए", ग्रिफिथ-- ।द वृ0। for thy consort "/"वृष्ण के लिए",।

इस प्रकार इसका अर्थ "वृष्ण के लिए" सर्वथा उपयुक्त है ।।

उपबर्हि-- सिरहाना बनाओ;

सा.वण--।वृ0भा0। "शयन काल उपबर्हण कुरु", वेङ्•कट--वृ0भा0। "उपबर्हण कुरु"/"सिरहाना बनाओ", विल्सन-- ।द वृ0। " Make thime pillow "/"सिरहाना बनाओ"।, ग्रिफिथ--।द वृ0। " Make thine a pillow "/ "सिरहाना बनाओ", ग्रासमैन-- ।द वृ0सं0। " um cinemahl, make thine pillow "/"सिरहाना बनाओ", गेल्डनर-।द वृ0सं0। " leg eibmBulleb" सिरहाना बनाओ"।.

इस प्रकार इसका अर्थ "सिरहाना बनाओ उचित है ।।

उत्तरा युगानि -- (पूर्ववर्ती युग)।

सायण--(ऋ०भा०) "उत्तराणि कालविशेषा:", वेङ्कट--(ऋ०भा०) "उत्तरे दिवसा:"/"पूर्ववर्ती युग", विल्सन-- (इं०अ०) "subsequent ages"/ "पूर्वयुग", ग्रिफिथ-- (इं०अ०) "succeeding times"/"बीता हुआ समय अर्थात् पूर्ववर्ती युग"।; ग्रासमैन-- (इं०जर्०) "mögen spätere"/ बीतासमय अर्थात पूर्ववर्ती युग", गेल्डनर--(इं०जर०) "später werden"/ "बीता हुआ युग अर्थात पूर्ववर्ती युग"।

इस प्रकार इसका अर्थ "उत्तरायुगीन" उपयुक्त है ।।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात् ।

काममूता बह्वे३तद्रपामि तन्वा मे तन्वं१ सं पिपृग्धि ।।

अन्वय-- किम् भ्राता असत् यत (स्वसा) अनाथम् भवाति, किम् स्वसा यत् भ्रातानिर्ऋतिः निगच्छात्, काममूता अहं एतत बहु रपामि, मे तन्वातन्वं सम पिपृग्धि ।।

अनुवाद -- वह क्या भाई जिसके रहते (बहिन) अनाथ हो, वह बहिन क्या जिसके रहते (भाई) कष्ट को प्राप्त हो, काम से प्रेरित होकर मैं यह बहुत कुछ आलाप कर रही हूँ कि मेरे शरीर के साथ अपने शरीर का सम्पर्क करो (संश्लिष्ट, सम्यक् उपभोग करो)।।

टिप्पणी-- भवाति -- (हो)।

भूसत्तायाम्, लेट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन। "न भवती स्वर्थ:"-- सायण- (ऋ०भा०) वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "भवति"/, विल्सन-(इं०अ०)

" Has "/ "है", ग्रिफिथ -- ।पृ०अं०। " is " /है",

रपामि -- आलाप करती हूं.

रप् लप्‌ व्यक्तायां वाचि, लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन, । सायण-- ।पृ०भा०। "रपामि-प्रलपामि; ।, "आलाप करती हूं।, वेङ्कट — ।पृ०भा०। "विलपामि"/ "आलाप करती हूं", विल्सन— ।पृ०अं०। " urge "/"आलाप करती हूं", ग्रिफिथ- ।पृ०अं०। "utter "/"आलाप कर रही हूं.

इस प्रकार इसका अर्थ "आलापकरती हूं" उचित है ।।

कामयुता— काम से प्रेरित होकर सायण- ।पृ०भा०।" कामेन युक्तिर्भूता सती बहुन नानाप्रकारम्", वेङ्कट - ।पृ०भा०। "कामयुक्तेन"/"कामसे प्रेरित"हो कर",।, विल्सन—"   "/ overcome by desire /" इच्छा [काम] के द्वारा प्रेरित होकर"।, ग्रिफिथ— ।पृ०अं०। " forced by my love /" मेरे प्यार के द्वारा प्रेरित "।,

इस प्रकार इसका अर्थ "काम से प्रेरित होकर" उचित है।।

संपिपृग्धि— सम्पर्क करो सम् पूर्वी सम्पर्क, लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, सायण—।पृ०भा०। "संपिपृग्धि सर्वत्र संयोगेन संश्लेषय । मां सम्यग्युक्‍तेत्यर्थः"।, वेङ्कट— ।पृ०भा०। "सम्पर्चय"/" सम्पर्क करो"।, विल्सन— ।पृ०अं०। " unite "/" संयुक्त हो; ग्रिफिथ—।पृ०अं०। " hold / " संयुक्त करो" ।,

इस प्रकार इसका अर्थ "सम्पर्क करो" उचित है ।।

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।

अन्येन मत्प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् ।।

अन्वय-- ते तन्वा न वा उ तन्वं संपृच्या, यः स्वसारं निगच्छात् (तम्)

पापं आहुः, मत् अन्येन प्रमुदः कल्पयस्व, सुभगे । ते भ्राता एतत् न वष्टि ।।

अनुवाद -- (यमः) हे यमी । तुम्हारे शरीर के साथ मैं शरीर का सम्बन्ध

कभी नहीं करूंगा क्योंकि जो बहिन के साथ संभोग करता है, उसे पाप

कहते हैं मुझसे किसी अन्य के साथ ही के प्रमोद की कल्पना करो, सुभगे ।

तुम्हारा भाई इस प्रकारका सम्बन्ध नहीं चाहता ।।

टिप्पणी-- वष्टि - कामना करता है, वश् - इच्छायाम्" । , सायण--

।ऋ०भा०। "कामयते"/ "कामना करता है"/"इच्छति"/ चाहता है।, वेङ्कट--

।ऋ०भा०। "कामयते" / "कामना करता है।, विल्सन-- ।ऋ०अं०। " desire

"/इच्छा करता है"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "कामना करता है" उचित है ।।

कल्पयस्व-- कल्पना करो, लोट्लकार उत्तम पुरुष द्विवचन, सायण--

।ऋ०भा०। "समर्थय"/ "समर्थन करो", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "कल्पयस्व/

कल्पना करो", विल्सन-- ।ऋ०अं०। " enjoy/प्रमोद करो"।, ग्रिफिथ--

।ऋ०अं०। "prepare "/ "तैयारी करो"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "कल्पना करो" उचित है ।।

प्रमुदः-- प्रमोद की,

सायण-- ।ऋ०भा०। "संभोग लक्षणान् प्रहर्षान्।, वेङ्कट--।ऋ०भा०।

टिप्पणी-- परिष्वजाते -- संयुक्त रहती है, सायण-- ।पृ०भा०।"परिष्व-
ङ्ग्नुर्वन्ती त्यर्थः"।, वेङ्कट - ।पृ०भा०। "परिष्वङ्गयते" /"संयुक्त रहती
है"। विल्सन-- ।पृ०सं०। "embraces "/"संयुक्त रहती है", ग्रिफिथ -
।पृ०सं०। " cling "/संयुक्त रहती है।,

इस प्रकार इसका वास्तविक अर्थ "संयुक्त रहती है" उचित है ।।

अविदाम-- समझ पायी, विद् प्राप्ती, लङ् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन,
सायण-- ।पृ०भा०। "अविदाम जानीम एव", वेङ्कट-- ।पृ०भा०।
"जानीमः"। "समझ पायी ", विल्सन-- ।पृ०सं०। " understand "/"
समझ पायी, ग्रिफिथ-- ।पृ०सं०। " find in thee /"समझ पायी"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "समझ पायी" उचित है ।।

कक्ष्येवयुक्तं-- रस्सी की तरह युक्त,

सायण- ।पृ०भा०। "यथाकक्षया-- रज्जुयुक्तेनात्मनातिबद्धमर्थं-।,
वेङ्कट-- ।पृ०भा०।"कक्षयेव युक्तम्-। रस्सी की तरह युक्त"।, विल्सन-
।पृ०सं०। " as with a girdle/" रस्सी की तरह युक्त", ग्रिफिथ--
।पृ०सं०। " cling as with a girdle "/"रस्सी की तरह संयुक्त"।

इस प्रकार इसका अर्थ"रस्सी की तरह युक्त" उचित है।।

लिबुजेव वृक्षम्-- वृक्ष से लता की तरह,

सायण-- ।पृ०भा०। "यथालिबुजा व्रततिर्गाढं वृक्षं परिष्वजते -
तद्वत्"।

वेङ्•कट-- ।अ०भा०। "लिकुचा वीयतेव्रतति भैवतोति विभजन्तीति, साइव च वृक्षन इवेति" विल्सन-- ।अ०सं०। " as a creeper a tree वृक्ष से लता की तरह"।, ग्रिफिथ-- ।अ०अं०। " round the tree the woodline clings /"वृक्ष से लिपटी हुई लता की तरह"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "पेड़ से लता की तरह" उचित है ।।

अन्यमुषु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिष्वजातेलिबुजेव वृक्षम् ।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाधाकृणुष्व संविदं सुभद्राम् ।।

अन्वय- यमी । त्वम् अन्यम्, अन्य उ त्वा लिबुजा इव वृक्षम् सुपरिष्वजाते, त्वम्तस्य वा मनः इच्छ सः वा तव मनः (इच्छतु) अथ, सुभद्राम् संविदम् कृणुष्व ।।

अनुवाद-- हे यमी । तुम किसी दूसरे से और कोई दूसरा तुमसे वृक्ष पर लता के समान संयुक्त होवे; तुम उसके मन की इच्छा करो, वह तुम्हारे मन की कामना करे, इस प्रकार कल्याणकारी समझौता करो ।

संविद -- समझौता,

सायण-- ।अ०भा०। "परस्परस्भोगसुखसंविदिति"।, वेङ्•कट-- ।अ०भा०। "संविदम्", विल्सन-- ।अ०सं०। " union "/ "एकता"।, ग्रिफिथ-- ।अ०अं०। " Alliance "/"समझौता" ।,

इस प्रकार इसका अर्थ - "समझौता "उचित है ।।

सुभद्रा-- कल्याणकारी,

सायण-- ।ऋ०भा०। "कल्याणकारी"।, वेङ्कट--।ऋ०भा०।

कल्याणीनीति", विल्सन--।ऋ०अं०। "   "/"शुभी" अर्थात् कल्याण-

कारी"।, ग्रिफिथ-- ।ऋ०अं०। "   "/"कल्याणकारी",

इस प्रकार इसका अर्थ "कल्याणकारी" उचित है ।।

कृणुध्वं-- करो, डु कृ करणे + लोट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन, सायण--

।ऋ०भा०।"कृणुध्वं- कुरुध्वं"।, वेङ्कट ।ऋ०भा०।"कृणुध्वं"/ "करो", विल्सन-

।ऋ०अं०। "Make "/ "बनाओ, ग्रिफिथ-- ।ऋ०अं०। " shall form "/

"करोगे" ।, इस प्रकार इसका अर्थ "करो" उचित है।।

(10 – 28) इन्द्रसूक्त

विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम ।

जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात्स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् ॥

अन्वय-- अन्य: अरि: विश्व: हि आजगाम् उत, अह मम श्वशुर: ना जगाम । धाना: जक्षीयात् उत सोमम् पपीयात् स्वाशित: पुन: अस्तं जगायात् ॥

अनुवाद-- (ऋषिपत्नी) सब देवता हमारे यज्ञ में आ गये, परन्तु मेरे श्वसुर इन्द्र ही नहीं आये। यदि वे आ जाते तो भुने हुए जौ के साथ सोमपान करते और फिर अपने गृह को लौटते ॥

टिप्पणी-- आजगाम् -- आ गये,

सायण-- (ऋ०भा०) "आजगाम-प्रत्यागच्छत्, इद् इत्यवधारणे । अह इत्यद्भुते । मदीयं यज्ञं आगतो", वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "निर्गन्ता", पेज 3342, उद्गीथ-- (ऋ०भा०) "यज्ञमागतः ।, कृतेन्द्रस्य स्तुतिरेव जायते", विल्सन-- (अ०सं०) " has come "/"आ गये हैं"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "आ गये" उचित है ॥

जक्षीयात् -- खाते,

सायण-- (ऋ०भा०) "भक्षयेत"/"खाते, वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "अभक्षयत्"/"खाते"।, उद्गीथ -- (ऋ०भा०) "भक्षयेत्"/ "खाते", पेज 3342, विल्सन-- (अ०सं०) " eat "/ खाते" ।,

इस प्रकार इसका अर्थ "खाते" उपयुक्त है ॥

{सोमैः} पूरयति"।, विल्सन - ।ऋ०सं०। " fills / "पूर्ण करता है"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "प्रदान करता है" उचित है ।

अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्रतूयान्त्सुन्वन्ति सोमान्पिबसि त्वमेषाम् ।

पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन्हूयमानः ।।

अन्वय— इन्द्र ते मन्दिनः तूयान् अद्रिणा सुन्वन्ति, एषाम् सोमान् त्वं पिबसि, वृषभान् पचन्ति । तेषां अत्सि मघवन् पृक्षेण हूयमानः ।

अनुवाद— {ऋषि} हे इन्द्र! जब यजमान अभिषवण फलकों पर शीघ्रता से हर्षकारी सोम को प्रस्तुत करता है, तब तुम उसे पीते हो, उस समय अन्न की कामना करते हुए तुम्हें हवि और स्तुति अर्पित की जाती है ।।

टिप्पणी — सुन्वन्ति — प्रस्तुत करता है, सायण— ।ऋ०भा०। " अभिषुण्वन्ति", वेङ्कट — ।ऋ०भा०। "ग्रावाणा"।, उद्गीथ —।ऋ०भा०। ।पेज 3342।" अभिषुण्वन्ति"/ "प्रस्तुत करता है।, विल्सन " ।ऋ०सं०। " express " प्रस्तुत करता है"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "प्रस्तुत करता है" उचित है ।

अत्सि — खाते हैं,

सायण— ।ऋ०भा०। "अत्सि— भक्षयसि"/ "खाते हैं", वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "खादथ"।, उद्गीथ— ।ऋ०भा०। ।पेज 3342।" "भक्षयसि"/खाते हैं"।, विल्सन— ।ऋ०सं०। " eatest "/खाते हैं।

इस प्रकार इसका अर्थ "खाते हैं" उचित है ।।

पृक्षेण— अन्न की कामना से युक्त",

सायण— ।ऋ०भा०। "धनवत्— हविर्लक्षणेनान्नेनान्वितेन", वेङ्कट— ।ऋ०भा०।" अन्नार्थ"/ अन्न की कामना से युक्त" ।, उद्गीथ — ।ऋ०भा०। "पृक्षेण— अन्नेन होतव्यत्वेन निमित्त- भूतेन"/"होतृ के लिए अन्न की कामना से युक्त"।; विल्सन— ।ऋ०अं०। " food "/अन्न"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "अन्न की कामना से युक्त " उचित है ।

पिबसि— पीते हो;

पिब् + लट् लकार मध्यमपुरुष एकवचन ।, सायण—।ऋ०भा०। "पिबसि" /पीते हो"।; विल्सन— ।ऋ०अं०।" drinkest "/पीते हो"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पीते हो" उचित है ।

इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति

लोपाशः सिंहं प्रत्यञ्चमत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ।।

अन्वय— जरितः मे सु इदम् आ चिकिद्धि, नद्यः प्रतीपं शापम् वहन्ति । लोपाशः प्रत्यञ्चम् सिंहम् अत्साः, क्रोष्टा वराहं कक्षात्निरतक्त ।

अनुवाद— हे इन्द्र! मेरी इच्छा मात्र से ही नदियों का जल विपरीत दिशा में प्रवाहित हो, तृण भक्षक हिरण बाघ को खदेड़ता हुआ उसका पीछा करे और वराह को शृगाल भगा दे ।

टिप्पणी— चिकिद्धि— इच्छामात्र से सायण—।ऋ०भा०। "समन्ताज्जानीहि / "इच्छा के उत्पन्न मात्र से"।; वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "पेज 3343"।

"विकिद्धि— मर्यादया जानीहि"।; विल्सन—।ु०सं०।" cognisant of this my (power) मेरी इच्छा शक्तिमात्र से"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "इच्छा मात्र से" उचित है ।

लोपाशः— तृण भक्षक हिरण,

सायण—।ु०भा०। "लुप्यमानं तृणं अश्नातीतिमृगः" वेङ्कट—।ु०भा०। "पेज 3343 ।" लोपाशः मृगः लुप्यमानतृणं अश्नाति इति"।; उद्गीथ— ।ु०भा०। "वृकः"।; ।पेज 3343।, विल्सन — ।ु०सं०। the eater of nuts (grass) / "तृण भक्षक"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "तृण भक्षक हिरण" उचित है।

प्रत्य वक्रु— उछलता हुआ पीछा करे;

सायण— ।ु०भा०। "आत्मानं प्रति गच्छन्ती"/ "पीछा करे।,— वेङ्कट — ।ु०भा०। " अभितोगच्छति" उद्गीथ— ।ु०भा०। "आत्मानं प्रतिगतम्" /"उसका पीछा करे" ।; विल्सन—।ु०भा०। " confront "/ पीछा करे" ।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "उछलता हुआ पीछा करे" - उचित है।

कथा त एतदहमाचिकेत गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम् ।

त्वं नो विद्वाँ ऋतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन्क्षेम्या धूः ।

अन्वय— पाकः अहं गृत्सस्य तवसः ते मनीषां। एतत् कथा आचिकेतम् विद्वान् त्वम् नः ऋतुथा वि वोचः। मघवन् ते अर्धं यं धूः क्षेम्या ।।

अनुवाद-- हे इन्द्र तुम मेधावी और प्राचीन कालीन हो, मैं अल्प बुद्धि वाला निर्बल पुरुष तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ नहीं हूँ, परन्तु समय समय पर तुम्हारे गुणों का कीर्तन सुनकर ही मैं कुछ स्तुति करने लगा हूँ।

टिप्पणी-- गृत्सस्य-- मेधावी;

सायण-- [ऋ0भा0] "गृत्सस्य मेधाविनः"/ "मेधावी [अत्यन्त तेज बुद्धि वाले]", वेङ्कट -- [ऋ0भा0] पेज 3345] "मेधाविनः" ["मेधावी"], उद्गीथ--- [ऋ0भा0] पेज 3344] "मेधाविनः सर्वज्ञस्य", विल्सन--[ऋ0सं0] "wise and powerful "/ "बुद्धिमान [मेधावी] एवं शक्तिमान"]; इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " मेधावी" उचित है ।।

तवसः--- प्राचीनकालीन [वृद्ध]:

सायण--[ऋ0भा0]" तवसः--वृद्धस्य"/"वृद्ध"], वेङ्कट--[ऋ0भा0] [पेज 3345] ""वृद्धस्य"/ "वृद्ध"]; उद्गीथ -- [ऋ0भा0 पेज 3344] "तवसस्य वृद्धस्य महत इत्यर्थ" /"वृद्धता"]; विल्सन-- [ऋ0सं0]"render fitting " / "वृद्धता"],

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "प्राचीन कालीन [वृद्ध]" ही उचित है ।।

ऋतुथा-- समय समय पर;

सायण--[ऋ0भा0]"ऋतुथा काले काले"/ "समय समय पर "], वेङ्कट-- [ऋ0भा0] 3345 पेज] "काले/समय पर"], उद्गीथ--ऋ0भा0] "ऋतावृतौ यथा कालम् कर्मेत्यर्थः" विल्सन-- [ऋ0सं0] " fit season, समय समय पर"],

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " समय समय पर " उचित है।

एवाहि मां तवसं वर्धयन्तिदिवश्चिन्मेबृहत उत्तरा: धुः ।

पुरुसहस्रा निशिशामिसाकमशत्रुंहि मा जनिताजजान ।।

अन्वय— हि एव तवसं मां वर्धयन्ति बृहत: मे दिविश्चिद धुः उत्तरा: ।

पुरुसहस्रा साकंनिशिशामि, हि जनिता मा अशत्रुं जजान ।।

अनुवाद— (इन्द्र) स्तोतागण(1) पुरातन पुरुष इन्द्र की स्तुति करते हुए कहते हैं कि मेरे विस्तृत कार्य स्वर्ग से भी महान हैं। मैं जन्म से ही इतना बलवान हूँ कि शत्रु मेरा सामना नहीं कर सकते । मैं एक साथ ही हजारों शत्रुओं के बल को क्षीण कर डालता हूँ ।

टिप्पणी— धुः— स्तुति; सायण —(1)(0भा0। "स्तुतिः"/"प्रार्थना"।, वेंक०ट— (1)(0भा0। "धुः" /"स्तुति"।, उद्गीथ — (1)(0भा0 पेज 3345। "धुरनुत्साह धुरपूर्वा महती स्तुतीरित्साहो"।, विल्सन— (1)(0अं0। " the praise of (me) /"स्तुति (मेरी अर्थात इन्द्र की)".

इस प्रकार इसका अर्थ "स्तुति" उचित है ।।

शिशामि — सामना कर सकते हैं;

सायण— (1)(0भा0।"तनु करोमि हिनस्मीत्यर्थ:", वेंक०ट— (1)(0भा0।"हिनस्मि"/ "सामना कर सकते हैं।, उद्गीथ— (1)(0भा0। पेज 3345 "तनु करोमिहिनस्मीत्यर्थ:"।; विल्सन — (1)(0अं0 । " has ebgenered , "सामनाकर सकते हैं"।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सामना कर सकते हैं" उचित है।

जघान— क्षीण कर डालता हूँ;

सायण— (पृ०भा०) "जनितवान्" वेङ्कट— (पृ०भा०) "जनिता"), उद्गीथ— (पृ०भा० । पेज 3345)" जनितवान्" विल्सन — (पृ०वा० "destroy /"क्षीण कर डालता हूँ"); इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "क्षीण कर डालता हूँ" अत्यन्त ही उचित है ।।

एवाहि मां तवसं जज्ञुरुग्रं कर्मन्कर्मन्वृषणमिन्द्र देवाः ।
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानोऽप व्रजं महिना दाशुषे वम् ।।

अन्वय— हि एव इन्द्र देवाः तवसं मां कर्मन्कर्मन् उग्रं वृषणं जज्ञुः मन्दसानः वज्रेण वृत्रं वधीं दाशुषे महिना व्रजं अप वम् ।।

अनुवाद— (ऋषि) हे इन्द्र। मैंने प्रसन्न होकर वज्र से वृत्र को विदीर्ण किया, और अपने बल से दानशील व्यक्ति को गौओं से सम्पन्न धन प्रदान किया । इसीलिए देवगण मुझे तुम्हारे समान ही पुरातन वीर और कामफल का देने वाला समझते हैं ।।

टिप्पणी— जज्ञुः — जानते हैं;

सायण— (पृ०भा०) " जानन्ति"/"जानते हैं", वेङ्कट— (पृ०भा०) "जनितवन्तः" /जानते हुए "); उद्गीथ —(पृ०भा०) पेज 3345) जानन्ति"/ "जानते हैं"), विल्सन— (पृ०वा०)- " have known "/ "जानलिया है"),

इस प्रकार इसका अर्थ " जानते हैं" उचित है ।।

कर्मन्कर्मन्— (यज्ञादि) कर्मों से कर्म (वध) किया; सायण—1/30/4। "वृत्रवधाग्निहोत्रादौ सर्वस्मिन् कर्मणि", वेङ्कट—1/30/4। "उद्गूर्णेषु सर्वस्मिन् कर्मणि"/ "कर्मों से कर्म किया"।, उद्गीथ—1/30/4। पेज 3345। "कर्मणिकर्मणि-अग्निहोत्रादौ वृत्रवधादौ वा"।, विल्सन—1/30/4। "slain vritra with thy thunderbolt "/"अग्नि के द्वारा वृत्र का वध किया "।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "(यज्ञादि) कर्मों से कर्म (वध) किया" उचित है ।।

देवाः— देवतालोग;

सायण— 1/30/4। "देवाः मरुदादयः ऋत्विग्यजमाना वा"/ मरुत आदि देवता लोग ", वेङ्कट— 1/30/4। "देवाः"/देवता लोग", पेज 3345, उद्गीथ— 1/30/4। "देवाः हविषां दातारः ऋत्विग्यजमानाः मरुदादयो: वा देवगणाः"।, पेज 3345।; विल्सन- 1/30/4। "Gods "/ "देवतालोग"।, इस प्रकार इसका अर्थ "देवता लोग "उचित है ।।

अपवृन् (अपावृणु)—विदीर्ण किया;

सायण—1/30/4। "अपवृणोमि"/विदीर्ण किया", वेङ्कट—1/30/4। "अपवृणोमि"/"विदीर्ण किया"।, उद्गीथ—1/30/4। पेज 3345। "अपवृणोमि"/ "विदीर्ण करता है"।, विल्सन—1/30/4। " have opened "/"खोल दिया है" ।।

इस प्रकार इसका अर्थ "विदीर्ण किया" उचित है ।।

देवास आयन्परशूँरबिभ्रन् वना वृश्चन्तोअभिविड्भिरायन् ।

नि सुद्र्वं दधतोवक्षणासु यत्रा कृपीटमनु तद्दहन्ति ।।

अन्वय— देवास: आयन् परशून अबिभ्रन विड्भि: वृश्चन्त: वना अभि आयन ।
सुद्र्वं वक्षणासु निदधत: । यत्र कृपीटम् तत् अनुदहन्ति ।

अनुवाद-- देवगण मेघ को विदीर्ण करने के लिए गमन करते हैं, तब वे जलको निकालते हुए वृष्टि करते हैं वह जल श्रेष्ठ नदियों में रहता है देवता जिस मेघ में जल देखते हैं उसी को विद्युत से भस्म करके जलवृद्धि करते हैं ।।

टिप्पणी-- अबिभ्रन्-- धारण करते हैं,

सायण-- ।ऋ0भा0। "धारयन्ति च"/धारण करते हैं"।, वेंक०कट-- ।ऋ0भा0। पेज 3346।" धारयन्ति च "/ "धारण करते हैं, उद्गीथ--।ऋ0भा0 पेज 3346।-- "धारयन्ति च"/ "धारण करते हैं"।; विल्सन-- ।ऋ0अं0।" " bore "/" धारण किया"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "धारण करते हैं" उचित है ।।

विड्भि:-- ।देवगण प्रजा के साथ।".

सायण-- ।ऋ0भा0।"मरुदादि-- प्रजाभि: सहिता:"/"मरुत आदि प्रजाओं के साथ"।; वेंक०कट--।ऋ0भा0। "मरुद्भि: नियमेन स्थापयन्त:". उद्गीथ-- ।ऋ0भा0।।पेज 3346।" मरुदादिनाऽधमिका देवगणा मनुष्यै: सह" / मरुत आदि देवगण मनुष्यों के साथ"।; विल्सन-- ।ऋ0अं0। " They (Gods) came with men "/ "वे ।देवता। आये मनुष्यों के साथ"।.

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "देवगण प्रजा के साथ" उचित है ।।

दहन्ति-- जलाते हैं अर्थात भस्मकरते हैं ।।

सायण--।ऋ०भा०। "उदक गमनार्थं शोषयन्ति"।, वेङ्कट -- ।ऋ०भा०। "उदकस्य निर्गमनार्थम् इति"।, उद्गीथ--।ऋ०भा०।" भस्मी कुर्वन्ति, वज्राग्नि-चूर्णं यन्तीत्यर्थः"/ "(विद्युत को) भस्म करते हैं। विल्सन --।ऋ०सं०। "burn /"जलाते हैं"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ जलाते हैं" उचित है ।।

पुरीटम्-- जल को;

सायण-- ।ऋ०भा०। "उदक- नामैतत् निघण्टुदकं तिष्ठति", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। पेज 3346।" उदकं"/ "जलको", उद्गीथ-- ।ऋ०भा०। "उदकम् (ऋ०निरु० 1,1-2) ।/" जल को"।, पेज 3346 । विल्सन-- of the water ।ऋ०भा०।/"जल को" ।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जल को" उचित है ।।

शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं जगारादिं लोगेन व्यभेदमारात् ।
बृहन्तंचिद्दृहते रन्धयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः ।।

अन्वय-- शशः प्रत्यंचं क्षुरं जगार, लोगेन अद्रिं आरात् वि अभेदम् । बृहन्तं चित् दृहते रन्धयानि, शूशुवानः वत्सो वृषभं वयत् ।।

अनुवाद-- इन्द्र की इच्छा मात्र से आते हुए बाघ का सामना खरगोश कर सकता है । मैं भी उसी कृपा से एक ढेले से पर्वत को तोड़ सकता हूँ । इन्द्र चाहें तो बछड़ा भी साँड का सामना करने को और बड़े भी छोटे के अधीन हो जायें ।।

टिप्पणी-- क्षुरं-- बाघ का

सायण-- ।ऋ०भा०। "क्रुरयन्ती क्रूरदोर्वंतीक्ष्णनर्वसिंह व्याघ्रादिकम्, अक्वत्सुर क्रुरमृगमित्यर्थ:" वेङ्कट - ।ऋ०भा०। "क्रूरम्"/"बाघ का"। उद्गीथ-- ।ऋ०भा०। "कुन्तनत्वर्थतद्धितम् पतत्पदम् - क्रुरयन्ती क्रूरदी र्वतीक्ष्णनर्वसिंहव्याघ्रादिकम्, अक्वत्सुर क्रुरमृगमित्यर्थ:"। पेज 3346। विल्सन--।ऋ०वि०। " beast /पशु को (बाघ को) ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बाघ का" उचित है ।।

विभिद्म्-- तोड़ सकता हूँ:

विल्सन-- ।ऋ०वि०। "cleave /"तोड़ सकता हूँ"। सायण-- ।ऋ०भा०।"भिनद्मि"/ "तोड़ सकता हूँ"। उद्गीथ--।ऋ०भा०। "विविधं भिनद्मि विदारयामि"/तोड़ सकता हूँ", वेङ्कट -- ।ऋ०भा०। "विभिनद्मि "/"तोड़ सकता हूँ, पेज 3347।

इस प्रकार इस का अर्थ "तोड़ सकता हूँ, उचित है ।।

आरात्--दूरस्थित होने पर :

सायण-- ।ऋ०भा०। "दूरे स्थितम्/"दूरस्थित होने पर"।
वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "दूरेस्थितम् " / दूरस्थित होने पर"। पेज 3347।
उद्गीथ-- ।ऋ०भा० पेज 3346 ।"दूरे स्थितमित्यर्थ:"/दूर स्थित होने पर"।
विल्सन-- ।ऋ०वि०।" distant "/"दूर स्थित होने पर"।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "दूर स्थित होने पर" उचित है ।।

सुपर्ण इत्था नखमा सिषायावरुद्धः परिपदं न सिंहः ।
निरुद्धश्चिन्महिषस्तर्ष्यावान् गोधा तस्मा अयथं कर्षदेतत् ।।

अन्वय— कूर्मः इत्था नवद् आतिशाय अवस्थः सिंहः परिपद न विद् । निक्तः नहिषः तथ्यर्विन् तस्मै गोधा अयथन् ततद् कर्वद् ।।

अनुवाद— पिंजड़े में बन्द बाघ जैसे अपने पाँव को रगड़ता है वैसे ही बाज पक्षी ने भी अपने नाखूनों को रगड़ा । जब नहिष प्यास से व्याकुल होता है तब इन्द्र की इच्छा हो तो गोह भी उसके लिए पानी लाता है ।।

टिप्पणी— अवरुद्ध -- बन्द (पिंजड़े में)

सायण— (ऋ०भा०) "पञ्जरेणावृत्तः परिवेष्टितः सिंहः"/"पिंजड़े में घिरा हुआ (सिंह), उद्गीथ— (ऋ०भा०)(पेज 3347) "प जरेणवृतः परि-वेष्टितः सिंहः, "पिंजड़े में घिरा हुआ (सिंह); वेंकट— (ऋ०भा०) "सिंह आत्मन समीपेपरिपश्यान्" । पेज 3347); विल्सन —(ऋ०अ०) " confined (in cage))/ "बन्द (पिंजड़े में));

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बन्द(पिंजड़े में)" उचित है ।।

परिपद्— पाँव को रगड़ता है,

विल्सन— (ऋ०अ०)" one foot over the other पैर दूसरे (पैर) के ऊपर "), सायण— (ऋ०भा०) " न यथा करस्योपरि सर्वतः पादमवबध्नाति; उद्गीथ— (ऋ०भा०) "न परिपदमिव यथा प जरस्य परि-सर्वतः पादनावन्धातिन्यस्यति , एवम्"); वेंकट— (ऋ०भा०) पेज 3347) "द्विपादि न हिनस्ति"),

इस प्रकार इसका अर्थ "पाँव को रगड़ता है" उचित है ।।

गोधा— गोह (गायत्री),

विल्सन— (ऋ०अ०) " Gayatri /"गोधा"), सायण—(ऋ०भा०)—

"गोधा गायत्री यद्वा" /"गोह (गायत्री", उद्गीथ-- ।ऋ०भा०। पेज 3347।
"गोधा नाम गायत्र्याख्या"/ "गायत्री (गोह)।, वेङ्कट--।ऋ०भा०। "
गोधा"/गोह;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "गोह (गायत्री) उचित है ।।

अयथम्-- आसानी से;

सायण-- ।ऋ०भा०। "अयत्नेन लीलयेत्यर्थः"/"आसानी से"।,
वेङ्कट -- ।ऋ०भा०। "करोति यथा न तथाऽनुतिष्ठेत्, तथा अयत्नः
प्रादुर्भवति इति"।; उद्गीथ-- ।ऋ०भा०। "अयत्नेन अनायासेन लीलया"/
"बिना यत्न के अनायास ही अर्थात् आसानि से "।; विल्सन- ।ऋ०अं०।
" easily "/ "आसानी से "।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " आसानी से " उचित है ।।

तेभ्यो गोधा अयथं कर्षदेतद्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः ।

सिम उक्ष्णोऽवसृष्टाँ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः

अन्वय-- ये ब्रह्मणः अन्नैः प्रतिपीयन्ति तेभ्यः गोधा अयथम् एतद् कर्षद् ।
सिमः उक्ष्णं अवसृष्टान् अदन्ति, स्वयम् बलानि तन्वः शृणानाः ।।

अनुवाद -- यज्ञ के अन्न से जो अपना निर्वाह करते हैं, गोह उनके लिए
अकस्मात् जल जाता है । वह इन्द्र सर्व गुण से युक्त सोम का पान करते
और शत्रुओं के शारीरिक बल को नष्ट कर डालते हैं ।।

टिप्पणी-- प्रतिपीयन्ति -- निर्वाह करते हैं; सायण-- ।ऋ०भा०। "प्रति-
पीयन्ति पीयतिर्हिंसाकर्मा । अन्नदेशादिकारात् प्रतिहिंसन्ति तेभ्यः तेषां
देवानामानविषयकं; उद्गीथ-- ।ऋ०भा०। पेज 3348।" प्रति हिंसन्तीन्द्रेण अन्य-
थाबाराः" ",- वेङ्कट --।ऋ०भा०। पेज 3348। "प्रतिहिंसन्ति"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " निर्धारित करते हैं" उचित है ।।

प्रानाः-- नष्ट कर डालते हैं;

विल्सन-- ।ऋ०भा०। "destroying " / " नष्ट कर डालते हैं"।;
सायण--।ऋ०भा०। "हिंसन्तः"। "नष्ट करते हैं"।; वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। पेज
3348। "हिंसन्तः "/ "नष्ट करते हैं", उद्गीथ--।ऋ०भा०। पेज 3348/"हिंसन्तः"
/"नष्ट कर डालते हैं"।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ" नष्ट कर डालते हैं" उचित है ।।

अदन्ति-- खाते हैं;

सायण-- ।ऋ०भा०। "अश्नन्ति"/खाते हैं"।, वेङ्कट -।ऋ०भा०
पेज 3348।" अदन्ति"/"खाते हैं"।,- उद्गीथ -- ।ऋ०भा०। पेज 3348। "
भक्षयन्ति " /"खाते हैं"। विल्सन-- ।ऋ०भा०। " devour /" to eat greedly
/"खाते हैं"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "खाते हैं" उचित है ।

एते शमीभिः सुशमी अभूवन् ये हिन्विरे तन्वः सोम उक्थैः ।
नृवद्वदन्नुप नो माहि वाजान्दिवि श्रवो दधिषे नाम वीरः ।

अन्वय-- ये तन्वः सोमे उक्थैः हिन्विरे एते शमीभिः सुशमी अभूवन्, नृवद्
वदन् नः उपमाहि वाजान् वीरः दिवि श्रवः नाम दधिषे ।।

अनुवाद-- जो सोम याग करके अपनी देह का पोषण कर सके हैं वे सुन्दर
कार्य वाले पुरुष श्रेष्ठकर्मा कहे जाते हैं। हे इन्द्र !, तुम हमारे लिए अन्न
लाते हुए श्रेष्ठ वचन कहते हो, इस प्रकार तुम दानवीर भी कहे जाते हो ।।

शमीभि: — सोमयाग करके;

सायण— ।ऋ०भा०।"सोमयागकर्मभि:"/ सोमयाग करके"।, वेङ्कट– ।ऋ०भा०।"कर्मभि"/"कर्म के साथ"।, उद्गीथ— ।ऋ०भा०। "सोमयागकर्मभि:"/ सोमयाग करके "।, पेज 3348।; विल्सन—।ऋ०अं०।" at the soma(sacrifices)

]"/"सोम याग करके"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सोमयाग करके" उचित है ।।

वदन्— बोलते हो;

सायण— ।ऋ०भा०।"व्यक्तां वाचमुच्चारयन्"/"वचन का उच्चारण करते हुए"।, वेङ्कट— ।ऋ०भा०। पेज 3348। "प्रियम् वदन्" / "प्रियबोलते हुए"।; उद्गीथ— ।ऋ०भा० पेज 3348।

"व्यक्तां वाचमुच्चारयन्"/"वचन कहते हैं।" विल्सन— ।ऋ०अं० ।

" speaking "/" बोलते हुए" ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बोलते हो" उचित है ।।

शिश्रिरे — पोषण करते हैं;

उद्गीथ—।ऋ०भा० पेज 3348। "सङ्गमयन्ति समर्धयन्ति वा"/ पोषण करते हैं"।वेङ्कट –।ऋ०भा०। पेज 3348।"प्रेरयन्ति"/"प्रेरणकरता है"।, सायण— ।ऋ०भा०।"वर्धयन्ति/ "बढ़ाता है"।, विल्सन — ।ऋ०अं०। have fostered/"पोषण करते हैं"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पोषण करते हैं" उचित है ।।

(10 - 5) (देवता -अग्नि

महत्तद्वृष्णं स्थविरं तदासीद्येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः ।

विश्वा अपश्यद्बहुधा ते अग्ने जातवेदस्तन्वो देव एकः ।।

अन्वय—तद् वृष्णं महद् स्थविरम् तद् आसीद्, येन आविष्टितः प्रविवेशिथापः।

(हे) अग्ने । जातवेदः ते विश्वाः तन्वः बहुधा एकः अपश्यद् ।।

अनुवाद— हे अग्ने । जब तुम जल में प्रतिष्ठित हुए थे, तब तुम अत्यन्त मेधावी हुए थे और स्थूलता से ढक गये थे। हे उत्पन्न हुओं के जानने वाले । अग्निदेव, एक देवता ने तुम्हारे विभिन्न रूपों के दर्शन किये ।।

टिप्पणी— स्थविरम्— स्थूलता;

सायण— (ऋ०भा०) " स्थविरम्-अत्यन्त स्थूलं च"/ "अत्यन्त स्थूल", वेङ्कट—(ऋ०भा०)" "प्रावृणम् स्थूलम्"/"स्थूलता," विल्सन—(ऋ०अ०)" very dense "/ "अत्यंत सघन,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "स्थूलता" उचित है ।।

प्रविवेशिथापः— जल में प्रविष्ट हुए थे,"

सायण— (ऋ०भा०) "त्व उदकानि प्रविष्टवानसि"/" जल में प्रविष्ट हुए थे," वेङ्कट— (ऋ०भा०) "प्रविष्टवानसि उदकम्"/ "जल में प्रविष्ट हुए थे," विल्सन— (ऋ०अ०) " entered into the waters" "जल में प्रवेश किये थे," इस प्रकार इसका अर्थ— "जल में प्रविष्ट हुए थे" उचित है।।

जातवेद:— उत्पन्न हुओं के जानने वाले;

जातवेद:— उत्पन्न हुओं के जानने वाले;

यास्क—(निरुक्त) "इसमें इसके पाँच निर्वचन दिये गये हैं।

(1) "जातानि वेद"—अर्थात उत्पन्न पदार्थों को वह जानता है— इसलिए

जातवेद: है। इसका संकेत जात+ विद् (ज्ञान) + सु जातवेद: है।

(ii) जातानि एवं विद:— उत्पन्नपदार्थ इसने जानते हैं इसलिए यहाँ भी पूर्ववतनिर्वचनही होगा। (iii) "जाते जाते विद्यते" —प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ विद्यमान है इसलिए इसका निर्वचन "जात+ विद् (सत्ता)+ सु जातवेद:" होगा।। । (iv) " जातवित्त:"— उत्पन्न हुए वित्त वाला है— इसलिए चूँकि "वित्त "शब्द विद् (ज्ञान) और विद्लृ (लाभ) दोनों से सिद्ध होता है। इसलिए निर्वचन दोनों धातुओं से अलग अलग होगा—

(क) जात+ विद् (ज्ञान)+ सु= जातवेद: (उत्पन्न हुए ज्ञानवाला)"

(ख) जात+ विद् (लाभ) + सु= जातवेद: (उत्पन्न हुए धन वाला)।। सायण— (ऋ०भा०) "जातप्रज्ञ:"/ "उत्पन्न हुओं के जानने वाले," वेङ्कट— (ऋ०भा०) "जातप्रज्ञ:"/ "उत्पन्न हुओं को जानने वाले," विल्सन— (ऋ०अ०) "Jatvedas /"जातवेद:" "उत्पन्न हुओं के जानने वाले,"

इस प्रकार इसका अर्थ "उत्पन्न हुओं के जानने वाले" उचित है।।

को मा ददर्श कतम: सदेवो यो मेतन्वोबहुधापर्यपश्यत् ।

क्वाह मित्रावरुणाक्षियन्त्यग्नेर्विश्वा: समिधो देवयानी ।।

अन्वय— को मा ददर्श, स देव: कतम: यो मे तन्व: बहुधा पर्यपश्यत् । मित्रावरुणा अग्ने: विश्वा: समिध: देवयानी: क्व क्षियन्ति ।

अनुवाद— वे देवता कौन से थे, जिन्होंने मेरे विभिन्न रूपों को देखा था। मित्र, वरुण, और अग्नि का वह तेज और देवयान को सिद्ध करने वाला वह शरीर कहाँ है, यह बताओ ।।

टिप्पणी-- पर्यपश्यत्-- अच्छी तरह देखा था

सायण--|ऋ०भा०|"परिदृष्टवान्"/"अच्छी तरह देखा था," वेङ्कट--|ऋ०भा०|"पर्यपश्यत्"/"अच्छी तरह देखा था," - विल्सन--|ऋ०अं०|" has fully seen "/"अच्छी तरह से देखा है "

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " अच्छी तरह देखा था" उचित है ।।

देवयानी:-- देवयान को सिद्ध करने वाला,

सायण--|ऋ०भा०|"देवयानी: देवयानसाधनभूता"/ "देवयान को सिद्ध करने वाला," वेङ्कट-- |ऋ०भा०|"देवयान साधनभूता:"/"देवयान को सिद्ध करने वाला, विल्सन-- |ऋ०अं०| "vehicles of the Gods"/"देवताओं की सवारी (यान)".।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "देवयान को सिद्ध करने वाला" उचित है ।।

समिधो-- तेज,

सायण-- |ऋ०भा०| "समिध: दीप्ता:" /"तेज," वेङ्कट- ऋ०भा०| "समिधा:"/"तेज," विल्सन-- |ऋ०अं०|luminous(Agni's /"तेज" (अग्निका)

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "तेज" उचित है ।।

बहुधा-- विभिन्न रूप,

सायण-- ऋ०भा०| "बहुप्रकार"/"बहुत से रूप," वेङ्कट--|ऋ०भा| "बहुधा"/"विभिन्नरूप," विल्सन--|ऋ०अं०| "manifold forms/" कई प्रकार के रूप,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "विभिन्न रूप" उचित है ।।

ऐच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्स्वोषधीषु ।

तं त्वा यमो अचिकेच्चित्रभानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम् ।।

अन्वय-- जातवेदः । अग्ने त्वा ऐच्छाम, अप्सु ओषधीषु बहुधा प्रविष्टम् ।

तं त्वा यमः अचिकेत चित्रभानो दशान्तरुष्यात् अतिरोचमानम् ।।

अनुवाद-- हे अग्नि! तुम उत्पन्न जीवों के ज्ञाता हो, जल और ओषधियों में तुम्हारा निवास है हम तुम्हीं को ढूंढ रहे हैं । तुम्हें यम ने देखते ही पहचान लिया था। उस समय तुम अपने दसों स्थानों से भी अधिक तेजस्वी दिखाई पड़ रहे थे ।।

टिप्पणी-- अचिकेत्-- जान लिया था,

सायण-- ।ऋ०भा०। "ज्ञातवान्"/ "जान लिया था," वेङ्कट--।ऋ०भा०। "अजानात्"/"जान लिया था" विल्सन--।ऋ०अ०। " recognise "/"जान लिया था",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ" जान लिया था" उचित है।।

दशान्तरुष्यात्-- दसों स्थानों में,

सायण-- ।ऋ०भा०।"अन्तरुष्यं गृहमावासस्थानं, तच्चस्थानं दशसंख्योपेतम्, तानि स्थानम्, गृहाणि दशस्थानानि भवन्ति, पृथिव्यादीनि तिष्ठत्स्थानानि"/"दसों स्थानों से", वेङ्कट--।ऋ०भा०। "अन्तरुष्यं गृहम् आवासस्थानम् । गृहाणि दश ऽऽवासस्थानानि भवन्ति--पृथिव्या दयस्त्र यः अन्त्यादयस्त्रय आपः ओषधीवनस्पतः पुरुषादीरं वेति," विल्सन--।ऋ०अ०।" from thy ten hiding places"/"दसों स्थानों से",

इस प्रकार इसका अर्थ "दशों स्थानों से " उचित है ।।

आप्सु-- जल में;

सायण-- ।ऋ०भा०। "उदकेषु"/"जल में", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०।"अप्सु व"/ "जलों", विल्सन--।ऋ०सं०।"into the waters "/"जल में,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जलों" उचित है ।।

प्रविष्ट-- निवास है;

सायण-- ।ऋ०भा०। "प्रविष्टम्"/ "निवास है", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "प्रविष्टम्" "निवास है", विल्सन--।ऋ०सं०।" entered /" प्रवेश है;

इस प्रकार इसका अर्थ" निवास"है" उचित है ।।

होत्रादहं वरुण बिभ्यदायन्नदेव मा युनजन्नत्र देवाः ।

तस्य मे तन्वो बहुधा निविष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः ।।

अन्वय-- वरुण, अहं होत्रात् बिभ्यत् आयन् मा एव अत्र नेद युनजन देवाः । तस्य मे तन्वा बहुधानिविष्टाः । एतमर्थम् अग्निः अहं न चिकेत् ।।

अनुवाद-- हेवरुण, होता का कार्य दुष्कर है, मैं उससे डरकर ही यहाँ आ गया हूँ। मेरी इच्छा है कि देवगण मुझे अब यज्ञ कर्म में न रखें । इसलिए मुझ शरीर का अग्नि दश स्थानों में चला गया है इस लिए मैं अग्नि इसको स्वीकार नहीं करता हूँ।।

टिप्पणी-- बिभ्यत्-- डरकर;

सायण-- ।ऋ०भा०।"बिभ्यत्"/"डरकर", वेङ्कट -- ।ऋ०भा०। "बिभ्यत्"/"डरकर", विल्सन--।ऋ०सं०। " afraid :/"डरकर"

इस प्रकार इसका अर्थ "डरकर" उचित है ॥

होत्रात्— होतृ से;

सायण— ।ऋ०भा०।"होतृत्वात् हविर्वहनादित्यर्थः"/ "होतृ से;" -
वेङ्कट— ।ऋ०भा०।"हव्यवहनाय"/"हव्य के वहन के लिए, विल्सन—।ऋ०अ०।
" of Hotra "/"होतृ का;"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "होतृ से" उचित है।

नेद् युनजन्— न प्रयुक्त करें;

विल्सन—।ऋ०अ०। "Not associate"/ "न प्रयुक्त करें,
सायण—।ऋ०भा०। "नैव योजयन्तु"/" न प्रयुक्त करें;" वेङ्कट—।ऋ०भा०।
"न युञ्जन्तु"/ "न प्रयुक्त करें"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "न प्रयुक्त करें" उचित है।

नचिकेत— अङ्गीकार नहीं कर सकता हूँ

सायण— ।ऋ०भा०। " न बुध्ये नाङ्गीकरोमि"/"अङ्गीन [नहीं
कर सकता हूँ;" वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "न बुध्ये" "नहीं स्वीकार कर सकता
हूँ;" विल्सन— ।ऋ०अ०।" do not consent (to undertake) / "स्वीकार
नहीं करता हूँ"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "अङ्गीकार नहीं कर सकता हूँ" उचित है ॥

एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामोऽरंकृत्या तमसि क्षेष्यग्ने ।

सुगान्पथः कृणुहि देवयानान् वह हव्यानि सुमनस्यमानः ॥

अन्वय— अग्ने । एहि मनुः देवयुः- यज्ञकामश्च, अरंकृत्या तमसि क्षेषि
देवयानान् पथः सुगान् कृणुहि, वह हव्यानि सुमनस्यमानः ॥

अनुवाद— हे अग्ने ! इस समय तुम अन्धकार में हो, इस पुरुष ने यज्ञ करने की इच्छा की है, वह अनुष्ठान का आयोजन भी कर चुका है। अतः तुम यहाँ आकर हवियाँ प्राप्त करने की कामना से मार्गों को सुगम करो और प्रसन्न मन से हव्यवाहक होओ ।।

टिप्पणी — यज्ञकाम्यव— यज्ञ करने की इच्छा की है; सायण— ।ऋ०भा०। "यज्ञ काम्यव भवति, इच्छति । किं कुर्वन् यज्ञकामो भवतीति वेदुच्यते ।" /"यज्ञ करने की कामना की है", वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "यज्ञ कामः भवति"/ "यज्ञ की इच्छा की है", विल्सन— ।ऋ०अं०। " desirous of offering sacrifice/ "यज्ञ करने की इच्छा"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ" यज्ञ करने की इच्छा की है" उचित है।।

सुमनस्यमानः— प्रसन्नमन से;

सायण— ।ऋ०भा०। "सौमनस्ययुक्/"प्रसन्नमन से", विल्सन— ।ऋ०अं०। " with a benevolent mind/ प्रसन्नमन के साथ"

इस प्रकार इसका अर्थ "प्रसन्न मन से" उचित है ।।

सुगान्पथः— मार्गों को सुगम;

सायण— ।ऋ०भा०। "पथः मार्गान् सुगान्" /" मार्गों को सुगम", वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "सुगान् मार्गान्"/" मार्गों को सुगम," विल्सन— ।ऋ०अं०। " straight the paths /"मार्गों को सीधा [सुगम]".

इस प्रकार इसका अर्थ" मार्गों को सुगम " उचित है ।।

कृणुहि — करो;

सायण-- ।ऋ०भा०।"कृवि हिंसाकरणयोश्च धिन्विकृण्व्योरच्च प्रत्यय:। कृणुहि - कुरु ।"/" करो", वेङ्कट"-- ।ऋ०भा०। "कृणु"/" करो", विल्सन--।ऋ०अं०।"Make "/"बनाओ"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "करो " उचित है ।।

अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः ।

तस्मात् भिया वरुण दूरमायं गौरो न क्षेप्नोरविजे ज्यायाः ।।

अन्वय-- अग्ने पूर्वे भ्रातरः एतम् अर्थं - अन्वावरीवुः रथीवाध्वानम् तस्मात् भिया वरुण दूरं आयम् । क्षेप्नोः ज्यायाः गौरो न अविजे ।

अनुवाद-- हे देवताओ । रथ पर गमन करने वाला पुरुष जैसे दूर देश में - पहुँचता है वैसे ही मुक्त अग्नि के तीन ज्येष्ठ बन्धु इस कार्य को करते हुए ही मिट गये । जैसे धनुष वाले की प्रत्यंचा से श्वेतमृग भय मानता है वैसे ही मैं भी इस कार्य से भयभीत हुआ हूँ इसलिए मैं वहाँ से चला आया हूँ ।।

टिप्पणी-- रथीवाध्वानम्-- सारथि पहुँचता है; सायण-- ।ऋ०भा०।" रथीवाध्वानम् अध्वानं यथा रथी कृणोति तद्वत"/ "सारथि पहुँचता है"; वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "सारथिःआप्नोति"। "सारथि पहुँचता है"।, एच०एच० विल्सन--।ऋ०अं०। " driver of a chariot covers"'रथ का चालक अर्थात् सारथि पहुँचता है"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सारथि पहुँचता है" उचित है ।।

अन्वावरीवुः-- क्रम से मिट गये;

सायण-- ।ऋ०भा०। अन्वावरीवुः-- अनुक्रमेण वृतवन्तः"/ "क्रम से मिट गये", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "अनुक्रमेण आ-वृतवन्तः, ये च क्षेमयुक्ताः"/"क्रम से मर गये; विल्सन--।ऋ०अं०।" They were slain,

"वे मिट गये,"

इस प्रकार इसका अर्थ" क्रम से मिट गये" उचित है ।।

जेष्नोः ज्यायाः— धनुष की प्रत्यंचा से,

सायण— ।व0भा0। "तकुजेष्नुः धनुषः ज्यायाः"/"धनुष की प्रत्यंचा से," वेङ्कट— ।व0भा0। "शरस्य जेष्नुः धनुषः ज्यायाः"/"प्राण को चलाने के लिए, धनुष की प्रत्यंचा से," विल्सन— ।व0अं0। " at the bowstring of the archer"/"धनुष की प्रत्यंचा से,"

इस प्रकार इसका अर्थ " धनुष की प्रत्यंचा से " उचित है ।।

न अविजे— कांपता हूँ,

सायण— ।व0भा0। "न अकम्पे"/" अकम्पायमान नहीं अर्थात कांपता हूँ, - वेङ्कट— ।व0भा0।"कम्पते"/ "कांपता हूँ," विल्सन— ।व0अं0। " trembled "/"कांपता था,"

इस प्रकार इसका अर्थ "कांपता हूँ" उचित है ।।

कुर्मस्तआयुरजरं यदग्नेयथायुक्ता जातवेदो नरिष्याः ।

अथा वहासि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्योहविषःसुजात ।।

अन्वय— अग्ने ! यह आयुः अजरं ते कुर्मः युक्तः जातवेदः यथा न रिष्याः अथ वहासि सुमनस्यमानः हविषः भागम् देवेभ्यः सुजात ।

अनुवाद— हे अग्ने ! तुम उत्पन्न हुओं के ज्ञाता हो, तुम अजर हो, हमारे द्वारा दी गई आयु से तुम मृत्यु को प्राप्त नहीं होगे । अतः अब तुम प्रसन्न मन से हवियों को वहन करते हुए इन देवताओं के पास ले जाओ ।।

टिप्पणी— अजरं- बुढ़ापा से रहित;

सायण-- ।ऋ०भा०। "अजरं-जरारहितमस्ति"/"बुढ़ापा से रहित," वेङ्कट--।ऋ०भा०।" जरारहितम् एव भवति"/"जरा अर्थात बुढ़ापा से रहित जो होता है," विल्सन--।ऋ०सं०।"exempt from decay"/"पतन से रहित,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ" बुढ़ापा से रहित" उचित है ।।

वहासि-- वहन करते हुए;

सायण-- ।ऋ०भा०। वहासि- वोढव्य वहन"/ "वहन करते हुए," वेङ्कट--।ऋ०भा०। "वहने युक्त"/ "ढोते हुए," विल्सन— ।ऋ०सं०।"bear "
"वहन करना (वहन)"।.

इस प्रकार इसका अर्थ" वहन करते हुए" उचित है ।।

नरिष्यात:— मृत्यु नहीं होगी;

सायण— ।ऋ०भा०।"न म्रियसे"/"नहीं मरोगे," वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "न म्रियसे"।" नहीं मरोगे". विल्सन--।ऋ०सं०।"Not die "/ "मृत्यु को नहीं प्राप्त होंगे,"

इस प्रकार इस का अर्थ "मृत्यु नहीं होगी" उचित है ।।

देवेभ्यो-- देवताओं के पास;

सायण-- ।ऋ०भा०।"देवेभ्य:"/"देवताओं के पास," वेङ्कट--।ऋ०भा०। "देवेभ्य:"/"देवताओं के पास," विल्सन--।ऋ०सं०। "Gods "/"देवताओं के पास,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "देवताओं के पास" उचित है ।।

प्रयाजान्मे अनुयाजांश्च केवलानूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।

घृतं चापां पुरुषं चौषधीनामग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः ।।

अन्वय-- मे प्रयाजान् अनुयाजान् केवलान् दत्त, ऊर्जस्वन्तं हविषः भागं ।

अपां घृतम् औषधीनाम् पुरुषं च, अग्ने दीर्घमायुः च अस्तु ।।

अनुवाद-- हे देवगण, यज्ञ का प्रथम, शेष और अत्यन्त विपुल अंश मुझे प्रदान करो । औषधियों का सार अंश, दीर्घायु और जलों का सार रूप अंश घृत भी मुझे प्रदान करो ।।

टिप्पणी-- प्रयाजान्-- यज्ञ का प्रथम {प्रमुख अंश}; सायण-- {ऋ०भा०} "प्रधानस्य पुरस्तात् यष्टव्यान्प्रयाजान् हविर्भागान् तथा" /"यज्ञ का प्रथम अर्थात् प्रमुख अंश; वेङ्कट--{ऋ०भा०} "अग्रतो प्रधाने प्रत्यभि धारयाच सारवन्तं च हविषः भागम्"/ "यज्ञ का प्रधान अंश; विल्सन-- {ऋ०अ०} "the Proyajas "/" यज्ञ का प्रथम;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "यज्ञ का प्रथम" उचित है ।।

अनुयाजान्-- यज्ञ का अत्यन्तविपुल अंश; oblations

विल्सन-- {ऋ०अ०} " consecrated portion of the/ यज्ञ का अत्यन्त विपुल अंश; वेङ्कट-- {ऋ०भा०} "अनुयाजान्"/"यज्ञ का विपुल अंश" । कौषीतकिब्राह्मण । "अनुयाजाः प्रैषमाज्यम्" {कौ०ब्रा०१० 1,3} । आग्नेयः पुरोडाशो भवति" इति । "शरीरदायादाश वाङ्मयौ भवन्ति"--{अग्निपु 3,6,2,22,} इति च ब्राह्मणम्" सायण--{ऋ०भा०} "अनुप्रधानात्पश्चाद् यष्टव्यानेतन्नामकान्"/"यज्ञ का विपुल अंश यष्टव्य नामक;

इस प्रकार इसका अर्थ "धन का अत्यन्त विपुल अंश" उचित है ।।

ऊर्जस्वन्तः— बलवान्; । शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनीसंहिता" (डा० हरिशङ्कर त्रिपाठी) ऊर्जति बलयति प्राणयतिवा "ऊर्ज बल प्राणनयोः" / ऊर्जा से युक्त अर्थात बलवान्," सायण— (ऋ०भा०)" ऊर्जस्वन्तं प्रत्यभिधारणात्सारवन्तं अथवा ऊर्जस्वन्त हविषो भाग प्रयाजानुयाजाख्यं दत्तेति याज्यम्" वेङ्कट— (ऋ०भा०) "प्रत्यभि-धारणाद् सारवन्तं"/"बलवान", विल्सन— (ऋ०सं०)" Man of the Plants"/"व्यक्ति का समूह;"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बलवान" उचित है ।।

दीर्घनायुः— लम्बी आयु वाले;

विल्सन— (ऋ०सं०) " life be long "/ "आयु लम्बी हो;" वेङ्कट— (ऋ०भा०) "दीर्घन व आयुः" /लम्बी आयुवाले," सायण—(ऋ०भा०) "दीर्घनायुः"/ "लम्बी आयु वाले;"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "लम्बी आयु वाले" उचित है ।।

तव प्रयाजा अनुयाजाश्च केवल ऊर्जस्वन्तोहविषः सन्तुभागाः ।

तवाग्ने यज्ञो यमस्तु सर्वस्तुभ्यं नमन्तांप्रदिशश्चतस्रः ।।

अन्वय— (हे अग्निः) तव प्रयाजा -अनुयाजाश्च केवलं ऊर्जस्वन्तः हविषः भागाः सन्तु । अयं सर्वः यज्ञः तवअस्तु प्रदिशः चतस्रः तुभ्यं नमन्ताम् ।।

अनुवाद— हे अग्ने ! जितने यज्ञ हों, वे सब तुम्हारे ही हों, प्रथम, शेष और विपुल यज्ञ भाग तुम प्राप्त करोगे। विश्व की चारों दिशायें भी तुम्हारे सम्मान झुकने वाली हों।

टिप्पणी— प्रदिशः चतस्रः— चारों दिशायें; सायण— (ऋ०भा०) "प्रदिशः प्रकृष्टा मुख्याः चतस्रः दिशः/"चारों दिशायें", वेङ्कट—

।ऋ०भा०। "मुख्या: चतस्र: दिश:" मुख्य चारों दिशायें," विल्सन--।ऋ०सं०।
" the four quarter of space"/" मुख्य चारों दिशायें,"

इस प्रकार इसका अर्थ "चारों दिशायें" उचित है ।।

त्वन्नमन्ताम्-- तुम्हारे सामने झुकने वाली हों, विल्सन--।ऋ०सं०। " bow down before thee"/"तुम्हारे सामने झुकने वाली हों",सायण--।ऋ०भा०।
"त्वं नमन्ताम्"/ "तुम्हारे सामने झुकनेवाली हों", वेङ्कट--।ऋ०भा०।"
त्वत्प्रवणा नमन्ताम्" /"तुम्हारे सामने झुकने वाली हों;

इस प्रकार इसका अर्थ "तुम्हारे सामने झुकने वाली हों" उचित है ।।

तवास्तु-- तुम्हारे ही हों,

विल्सन--।ऋ०सं०। " let this (sacrifice)/ "तुम्हारे ही हों,"
सायण-- ।ऋ०भा०। " तव अस्तु"/"तुम्हारे ही हों," वेङ्कट--।ऋ०भा०।
"त्वदीय:"/तुम्हारे ही हों,"

इस प्रकार इसका अर्थ "तुम्हारे ही हों" उचित है ।।

सर्व: यज्ञ:-- सभी यज्ञ,

विल्सन--।ऋ०सं०।" thine "/"सभी यज्ञ", वेङ्कट--
।ऋ०भा०।"सर्व: यज्ञ:"/ "सभी यज्ञ", सायण-- ।ऋ०भा०। "सर्व: यज्ञ:"/
सभी यज्ञ,

इस प्रकार इसका अर्थ "सभी यज्ञ" उचित है ।।

* liberal bestow */"उदारता अथवा स्वतंत्रतापूर्वक" ग्रिफिथ— ।४०८०।
* votary */ उदारता पूर्वक.

इस प्रकार इसका अर्थ- "उदारतापूर्वक" उचित है ।।

वसु— धन; सायण— ।४०भा०। "वसुधनं"/ "धन"; वेङ्कट— ।४०भा०।"धनं"/ "धन"; विल्सन— ।४०अं०। "wealth"/ "धन"; ग्रिफिथ— ।४०अं०।"foodful / "सम्पूर्णता धनम्"/.

इस प्रकार इसका अर्थ-" धन" सर्वथा उचित है ।।

उत्तर:—श्रेष्ठ; सायण— ।४०भा०। "उत्तर"/"श्रेष्ठ"; वेङ्कट / ४०भा०। "उत्तर:/ "श्रेष्ठ"; विल्सन—।४०अं०। "above"/"श्रेष्ठ (ऊँचा)"; ग्रिफिथ— ।४०अं०। "supreme /"श्रेष्ठ".

इस प्रकार इसका अर्थ "श्रेष्ठ" उचित है ।।

यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।।

अन्वय— इन्द्र । त्वं प्रियम् यमिमं वृषाकपिम् अभिरक्षसि, अस्य वराहयुः श्वा नु जम्भिषद् अपि कर्णे । इन्द्रः विश्वस्माद् उत्तरः ।।

अनुवाद— हे इन्द्र! वृषाकपि के कान को कुक्कुर काटता है तुम उसकी रक्षा करते हो । इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है ।।

टिप्पणी— रक्षसि— रक्षा करते हो; — रक्ष धातु लट् लकार मध्यमपुरुष एकवचन; सायण— ।४०भा०। "पालयसि"/पालन करते हो"; वेङ्कट—।४०भा०।"रक्षसि"/

" रक्षा करते हो" विल्सन (हि०अं०) " devour " / "रक्षा करते हो", ग्रिफिथ—(हि०अं०) " Protectest " / "रक्षा करते हो", मैक्समूलर— (द हि०अं०) " Peckon / " Protect " / "रक्षा करते हो"

इस प्रकार इसका अर्थ "रक्षा करते हो" उचित है ।।

भक्षथ— खाते हो; सायण— (हि०भा०) "भक्षयथ" / " खाते हैं", वेङ्कट— (हि०भा०) "भक्षयथ" / "खाते हैं" विल्सन—(हि०अं०) "cherishest " / नष्ट करते हैं", ग्रिफिथ— (हि०अं०) " bite ("काटते हैं", ग्रासमैन— (द हि०अं०) "chir-met / cherist / "नष्ट करते हैं"

इस प्रकार इसका अर्थ " खाते हैं" उचित है ।।

श्वान्— कुत्ता;

सायण— (हि०भा०) "श्वान्" / "कुत्ता", वेङ्कट— (हि०भा०) "श्वान्" / "कुत्ता", विल्सन— (हि०अं०) "dog / "कुत्ता", ग्रिफिथ— (हि०अं०) " hound " / "शिकारीकुत्ते" ।,

इस प्रकार इसका अर्थ " कुत्ता " उचित है ।।

त्रिपात्कथानि मे कपिर्व्यक्ता व्यद्रुदत् ।

शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।।

अन्वय— मे कथानि त्रिपा व्यक्ता कपि, व्यद्रुदत् । अस्य शिरो नु राविषं दुष्कृते सुगं भुवम् । इन्द्रः विश्वस्मात् उत्तरः ।।

गेल्डनर— ऋ पृ०सं० "Mutter"/" Mother"/"माता" ।

इस प्रकार इसका अर्थ "माता" उचित है ।।

किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजघने ।

किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।।

अन्वय— सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजघने । शूरपत्नि त्वं नः वृषाकपिं किं अभ्यमीषि । इन्द्रः विश्वस्मात उत्तरः ।

अनुवाद— हे इन्द्राणी ! तुम सुन्दर बाहुओं वाली, शोभनीय अंगुलियों वाली, विस्तृत जघन स्थलवाली, तथा सुन्दर अङ्गों वाली हो । वृषाकपि पर इस तरह क्यों क्रोधित हो रही हो? इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है ।।

टिप्पणी— स्वङ्गुरे— शोभनीय अंगुलियों वाली; सायण— ऋ०भा० "स्वङ्गुरे— शोभनाङ्गुलिके"/ "शोभनीय अंगुलियों वाली"; वेङ्कट— ऋ०भा० "स्वङ्गुरे— शोभनाङ्गुलिके" /"शोभनीय अंगुलियों वाली"; विल्सन— ऋ०सं० "beautiful fingers "/"शोभनीय अंगुलियों वाली"; ग्रिफिथ— ऋ०सं० " with lovely hands "/ "शोभनीय हाथों से"; ग्रासमैन —ऋ पृ०सं० "schonfingrige"/ सुन्दर अंगुलियों से"। गेल्डनर—ऋ पृ०सं० " schonfingrige "/ "सुन्दर अंगुलियों वाली" ।

इस प्रकार इसका अर्थ " शोभनीय अंगुलियों वाली " उचित है ।।

पृथुजघने— विस्तीर्ण जघनस्थलवाली सायण— ऋ०भा० "पृथुजघने —विस्तीर्ण जघने"/"विस्तीर्ण जघन वाली"; वेङ्कट— ऋ०भा० "पृथु जघने"/"विस्तीर्ण जघन वाली"; विल्सन—ऋ०सं० " broad- hipped "/"विस्तीर्ण जघन वाली";

ग्रिफिथ-- पृ०सं० "ample hips"/"विस्तीर्ण जघनवाली"; ग्रासमैन-- पृ०सं० "breithüftige"/ "broad hips"/"विस्तीर्ण जघन वाली"; गेल्डनर-- पृ०सं० "breithüftige"/"broad hips"/"विस्तीर्ण जघन स्थल वाली"।

इस प्रकार इसका अर्थ "विस्तीर्ण जघन स्थल वाली" उचित है ।।

अक्रोधिषि-- क्रोधित हो रही हो; वेङ्कट-- पृ०भा० "अभिक्रुद्धासि"/ क्रोधित हो रही हो; विल्सन-- पृ०सं० "art thou angry"/"क्रोधित हो रही हो"; ग्रिफिथ-- पृ०सं० "art thou angry"/"क्रोधित हो रही हो"।

इस प्रकार इसका अर्थ "क्रोधित हो रही हो" उचित है ।। अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते । उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।।

अन्वय-- शरारुः अयं माम् अवीराम् इव अभि मन्यते । उत इन्द्रपत्नी अहम् वीरिणी मरुत्सखा अस्मि । इन्द्रः विश्वस्मात् उत्तरः ।।

अनुवाद-- यह वृषाकपि हिंसक स्वभाव वाला है यह मुझ पुत्र और पति वाली नारी से पतिविहीना और पुत्ररहिता के समान व्यवहार कर रहा है । मुझ इन्द्र पत्नी के मरुद्गण सहायक हैं । इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है ।

टिप्पणी-- शरारुः हिंसक स्वभाव-वाला; सायण-- पृ०भा० "घातकः घातुको मृगः" हिंसक स्वभाववाला मृग; वेङ्कट-- पृ०भा० "शरारुः मृगः"/"हिंसक स्वभाववाला (मृग)"; विल्सन-- पृ०सं० "one who has no malice"/"वह जिसका किसी के प्रति द्वेष नहीं है अर्थात हिंसकस्वभाव वाला; ग्रिफिथ-- पृ०सं० "noxious creatures"/"हिंसक प्राणी";

इस प्रकार इसका अर्थ "हिंसक स्वभाव वाला" उचित है ।।

विल्सन-- ।पृ०सं०। " to the Gods "/"देवताओं को," ग्रिफिथ-- ।पृ०सं०। " to the Gods "/ "देवताओं के पास"

इस प्रकार इसका अर्थ "देवताओं को" उचित है ।।

वृषाकपायिरेवति सुपुत्र आदुसुस्नुषे ।

घसन्त इन्द्रउक्षण: प्रियं धाविकरं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तर: ।।

अन्वय-- वृषाकपायि--वृषाकपि की पत्नी ; सायण-- ।पृ०भा०। "वृषाकपायि वाषाकपिकत्वाद भोग्यसामान्यादिन्द्रोवृषा कपि:, तस्य पत्नि । वदा।" "वृषाकपि की पत्नी," वेङ्कट-- ।पृ०भा०। "वृषाकपि: तस्य पत्नि:"/वृषाकपि की पत्नी, विल्सन--।पृ०सं०। "mother of vrishakapi/"वृषाकपि की माता," ग्रासमैन ।पृ०सं०। "reiche vrisahakapaji "/ "वृषाकपि की पत्नी; गेल्डनर-- ।द०पृ०सं०। "reiche vrishakapaji "/"वृषाकपि की पत्नी;

इस प्रकार इसका अर्थ "वृषाकपि की पत्नी" उचित है ।।

सुस्नुषे-- श्रेष्ठवधु;

सायण--।पृ०भा०। "सुस्नुषे शोभनस्नुषे"/"शोभनीयवधु"।; वेङ्कट-- ।पृ०भा०।"शोभनस्नुषे"/"श्रेष्ठ ।शोभनीय। वधु," विल्सन--।पृ०सं०।" excellent daughters in law "/" श्रेष्ठ ।वधु।"।, ग्रिफिथ-- ।पृ०सं०। "consorts of thy sons "/"श्रेष्ठ वधु"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "श्रेष्ठ वधु" उचित है ।।

घसत्-- भक्षण करते हो।,

सायण- ।पृ०भा०। "घसत्-ग्रसनात्"/ "भक्षण करते हो," वेङ्कट-- ।पृ०भा०।"ग्रसनात्"/"भक्षण करते हो," विल्सन--।पृ०सं०। "devour eat"/"खाते हो," ग्रिफिथ--।पृ०सं०।" will eat "/" खायेंगे"। इस प्रकार इसका अर्थ "भक्षण करते

अन्वय— विचाकशत् दासम् आर्यम् विचिन्वन् अयम् एमि पाकसुत्वनः पिबामि । धीरं अभि अचाकशम् । इन्द्रः विश्वस्मात् उत्तरः ।।

अनुवाद— मैं अपने उपासकों को देखता हुआ और उनके शत्रुओं को भगाता हुआ यज्ञ में आगमन करता हूँ सोमाभिषव— कर्ता और हव्य पाक करने वाले के सोम का मैं पान करता हूँ । और मेधावी जन का द्रष्टा होता हूँ। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है ।

टिप्पणी— विचाकशत्— देखता हुआ; सायण— ।ऋ०भा०। "विचाकशत्-पश्यन्" /देखता हुआ", वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "विपश्यन्" -।उपासकं।"/"देखता हुआ ।उपासक को।, विल्सन— ।ऋ०अ०। "looking upon (the worshippers)" "देखता हुआ ।उपासकों को।" ग्रिफिथ— ।ऋ०अ०। "look" / "देखता हुआ"

इस प्रकार इसका अर्थ "देखता हुआ" उचित है ।

पिबामि— पान करता हूँ; पिब धातु लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन।

सायण— ।ऋ०भा०। "पिबामि"/"पान करता हूँ" वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "पिबामि" /"पीता हूँ; विल्सन —।ऋ०अ०। "drink" /"पीता हूँ; ग्रिफिथ— ।ऋ०अ०। "drink" /"पीता हूँ" ग्रासमैन— ।द ऋ०अ०।— "trinke", "drink" / "पान करता हूँ" गेल्डनर—।द ऋ०अ०। "trinke", "drink" /"पान करता हूँ"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पान करता हूँ" उचित है ।।

धीरम्— बुद्धिमान का; सायण—।ऋ०भा०। "धीरं धीमन्तं"/"बुद्धिमान का" वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "धीरम्" / "बुद्धिमान का" विल्सन— ।ऋ०अ०। "Intelligent" /

विल्सन— ।पृ०सं०। comest home "/"अपने घर में; ग्रिफिथ— ।पृ०सं०। "# comest home " अपने घर में;

इस प्रकार इसका अर्थ "अपने आवास में" उचित है ।।

सुविता— श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कर्म;

सायण— ।पृ०भा०। "सुविता—सुवितानि कल्याणानि अभ्युदित कर्माणि कर्माणि"/"श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कर्म; वेङ्कट— ।पृ०भा०। " कल्याणानि"/"श्रेष्ठ कर्म;.

इस प्रकार इसका अर्थ "श्रेष्ठ से श्रेष्ठकर्म" उचित है।।

यदुदंचो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।

क्व स्य पुल्वघो मृगः कमगंजनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।।

अन्वय— इन्द्र वृषाकपे! उदंच: गृहम् अजगन्तन, पुल्वघ स्य, मृग क्व जन योपन: कं अगन्। इन्द्र: विश्वस्मात उत्तर,

अनुवाद— हे वृषाकपि और हे इन्द्र! तुम मेरे गृह में आगमन करो। लोगों को आनन्द देने वाला वह मृग कहाँ चला गया। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है।।

आजगन्तन— आगमन करो;

सायण— ।पृ०भा०। "अजगन्तन— आगच्छ"/"आगमन करो; वेङ्कट— ।पृ०भा०।—"अजगन्तन् आगच्छतन्" /"आगमन करो; विल्सन— ।पृ०सं०/"come " "आओ; ग्रिफिथ— ।पृ०सं०। "travelled "/ "यात्रा करो;

इस प्रकार इसका अर्थ "आगमन करो" उचित है ।।

जनयोपन:— लोगों को आनन्द देने वाला;

सायण— ।पृ०भा०। "जनयोपन: जनानां मोदयिता"/"लोगों को आनन्द देने वाला; वेङ्कट—।पृ०भा०। "जनानां वञ्चकः"/" लोगों को आनन्द देने वाला"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "मनु की पुत्री" उचित है ।।

विंशति— बीस;

संस्कृत— (भा0) "विंशतिकानाम्" /"बीस" वैदिक —(भा0) "विंशतिः", /"बीस" विस्तार— (अं0) "twenty /"बीस" द्राविड़— (अं0) "a score /"विंशतिकानाम्"/ "बीस" इस प्रकार इसका अर्थ "बीस" उचित है ।।

प्रसूत— उत्पन्न किये;

संस्कृत—(भा0) "प्रसूत— अभीजनम्"/ उत्पन्न किये", वैदिक— (भा0) "सुषुवे"/"उत्पन्न किये; विस्तार—(अं0) " bore "/"उत्पन्न किये; द्राविड़— (अं0) " birth "/ " उत्पन्न किये; इस प्रकार इसका अर्थ " उत्पन्न किये" उचित है ।

10 - 95 (उर्वशी-पुरूरवा)

हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु ।

न नौ मन्त्राः अनुदितासः एते मयस्करन् परतरे चनाहन् ॥

अन्वय- (हे) हये घोरे जाये । मनसा तिष्ठ मिश्रा वचांसि कृणवावहै नु । नौ एते अनुदितासः मन्त्राः परतरे चन अहन् मयः न करन् ॥

अनुवाद-- (हे) अतीव दुःखदायिनी जाया । (पत्नी) एक क्षण अनुरागमय-पूर्ण मन के साथ मेरे पास रुको, हम दोनों शीघ्र ही उचित-प्रयुक्ति रूप पारस्परिक सम्भाषण सम्पन्न कर लें । हमारे ये रहस्यार्थ अनुद्घाटित रहने पर कभी आगामी दिनों में और यहाँ तक कि मृत्यु पर्यन्त निरन्तर असह्य वेदना प्रदान करते रहेंगे ।

टिप्पणी-- अनुदितास-- जो कहा न गया हो; अनुक्त, वद + क्तः - क्तो: " सम्प्रसारणाच्च" से उसम्प्रसारण होकर - उदितः, नञ्समास पूर्वक अनुदित-- अनुदितासः - वेद में दोनों रूप बनते हैं । सायण -(ऋ०भा०) "अव्याह्रियमाणाः परस्परसंभाष्यमाणागुप्तमन्त्रा" ।; वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "अनुक्ताः" / " जो कहा न गया हो" ।; विल्सन- (ऋ०अ०) " whilst unspoken " / " जो बोला न गया हो ।; ग्रिफिथ - (ऋ०अ०टि०) " unspoken " / " जो बोला न गया हो" ।; ग्रासमैन- (ऋ०अ०) " ungesprochen/ ", " unspoken " / " न कहा गया" ।;

इस प्रकार शब्द का अर्थ " जो कहा न गया हो" उचित है ॥

कृण्वावहै — सम्पन्न कर लें; कृविहिंसाकरणयोश्च धिन्विकृण्व्योरच्च" इत्युप्रत्यय, किमर्थवत: करणमिति वेद्व्यते । आत्मनेपद, लट् लकार उत्तम पुरुष एक वचन । सायण- ।ऋ०भा०। "करवावहै"।; वेङ्कट - ।ऋ०भा०। "कृण्वावहै"/ "सम्पन्न कर लें"।; विल्सन- ।इ०अ०। "interchange "/ निष्कर्ष निकाल लें"।; ग्रिफिथ—।इ०अ०अ०। " let us reason"/ "सम्पन्न कर लें"।;

करन्— करते रहेंगे;

"कृधातुर्लेट् लकार प्रथमपुरुषबहुवचन।" सायण—।ऋ०भा०। "कुर्वन्ति अत: कृधावत्यवति।"/ "करते हैं"।; वेङ्कट—।ऋ०भा०। "कुर्वन्ति"/ "करते हैं"।; विल्सन—।इ०अ०।" yield " / उत्पन्न करना।; ग्रिफिथ—।इ०अ०अ०। brough "/"लाते हैं"।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "करते रहेंगे" उचित है ।

घोरे— ।दु:खदायिनी।;

सायण- ऋ०भा०।"घोरे अस्माकं दु:खजनकत्वात्"; वेङ्कट — ।ऋ०भा०। "घोरे/दु:खदेने वाली"।; विल्सन—।इ०अ०। " Indignant "/ "रोष या क्रोध करने वाली"।; ग्रिफिथ- ।इ०अ०अ०। fierce " Fierce " /"भयंकर या भयकर ।जाया।"।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "दु:खदायिनी" उचित है ।।

मय: — सुख;

सायण—।ऋ०भा०। "सुखम्/"सुख" ।; विल्सन—।इ०अ०।

" Happinest " /"प्रसन्नता" ।; ग्रिफिथ--"द०ए०बी० । " comfort "/ "सुख" ।;

इस प्रकार "सुख" अर्थ उचित है ।।

किमेतावाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव ।

पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वात इवाहमस्मि ।।

अन्वय-- (हे) पुरूरवः । तव एतावाचा किम् कृणवा, अहम् उषसाम् अग्रिया इव प्राक्रमिषम् । पुनरस्तं परेहि, अहम् वात इव दुरापनाऽस्मि ।।

अनुवाद-- हे पुरूरवा । अब तुम्हारी इन प्यार की बातों से मैं क्या करूँ। और मैं उषा की प्रथम झलक की भाँति तुम्हारा परित्याग कर चली आई हूँ । मेरी पुनः प्राप्ति असम्भव है । सम्प्रति मैं तुम्हारे लिए वायु की भाँति दुष्प्राप्य हूँ ।।

टिप्पणी-- प्राक्रमिषम्-- परित्याग कर चली आई हूँ; प्र. क्रम परित्यागे, लुङ्लकार उत्तम पुरुष एकवचन । सायण--ऋ०भा०। "अतिक्रान्तवत्यस्मि । अतिक्रमे दृष्टान्तः; वेङ्कट -- ऋ०भा०। " प्र अक्रमिषम । प्राक्रमीता", विल्सन--ऋ०ए०।" have passed away /"छोड़कर चली आई हूँ।; ग्रिफिथ-- ऋ०ए०बी०। " have gone " / "चली आई हूँ"।; ग्रासमैन-- ऋ०ए०।" herworegeg "/ have gone", चली गई है"।; -- इस प्रकार इसका अर्थ "परित्याग कर चली गई हूँ" उचित है।।

" like the first of the Dawns " "उषा की प्रथम (झलक) की तरह" (ग्रिफिथ--- वि0पु0वि0। " like the first of Mornings "

"उषाकाल की प्रथम (झलक) की भाँति।" ग्रासमैन---वि0पु0। " die erste der Morgenrothen " "उषा की प्रथम झलक की भाँति।

इस प्रकार इस शब्द का "उषा की प्रथम झलक की भाँति अर्थ उचित है ।।

इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः ।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः ।।

अन्वय--- श्रिये (इषुधेः इषुः असना न रंहिः (अहं) गोषाः शतसा न ।
अवीरे क्रतौ न विदविद्युतत्, धुनयः उरा मायुं न चितयन्त ।।

अनुवाद--- प्रिये ! (तुम्हारे विरह के कारण उत्पन्न सतत् विकलता से मैं इतना दुर्बल हो गया हूँ कि) विजय के लिए निषङ्ग से बाण प्रक्षिप्त करने में भी असमर्थ हो गया हूँ। पहले वेगपूर्वक शत्रुओं को वशीभूत करने में समर्थ मैं अब उनकी गायों तथा अन्य सैकड़ों धनों का विभाजन करने वाला नहीं बन पा रहा हूँ। (मेरी प्रशासनिक क्षमता भी लुप्त प्राय सी होती चली जा रही है।) अवीरोचित राजकर्म में मेरा सामर्थ्य प्रकाशित नहीं हो पाता। शत्रुओं को कम्पित कर देने वाले मेरे वीर सैनिक विस्तीर्ण संग्राम में मेरा सिंहनाद नहीं सुनाते। (इस प्रकार तुम्हारे वियोग में सर्वथा क्षीण प्रभाव हो गया हूँ।) ।।

टिप्पणी— गोषाः — गायों का विभाजन करने वाला; गो उपपद+ सन् + विट् प्रत्यय पुल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन "जन्-सन्-खन्-क्रम गमोविट्" से विट् प्रत्यय होकर गो+सन्+विट् "विड्वनोरनुनासिक स्यात्" विट् और वन् प्रत्यय के अनुनासिक के अनन्तर आत् हो जाता है। विट् का सर्वापहारी लोप, सनोतेरनः से षत्व हो जाता है। सायण —ऋ०भा० "गोषाः गवां शत्रूणां गवां संभक्ता न अभवत्"; वेङ्कट — ऋ०भा० "न शत्रूणां गा भाजन्ते"; विल्सन— ऋ०अ० "Impetuous despoiler of the cattle / "पशुओं का दुःसाहसी विभाजक (शत्रुओं के)"; ग्रिफिथ— ऋ०अ० "wining cattle "/पशुओं को वश में करने वाला"; ग्रासमैन— ऋ०ज०अ० "schnelles Geschoss "/"गायों का विभाजन करने वाले"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "गायों का विभाजन करने वाला" उचित है ।।

चितयन्त — जान पाते हैं;

चिती संज्ञाने, लुङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन । सायण—ऋ०भा० "बुध्यन्ते" । अस्मान्विपि संज्ञापूर्वकस्य विशेषनिश्चयस्य अभावात्; वेङ्कट —ऋ०भा० "बुध्यन्ते" "जानते हैं"; विल्सन— ऋ०अ०— "hear" /"सुनते हैं";

इस प्रकार इसका "जानते हैं" अर्थ उचित है ।।

नचिकेतुः — प्रकाशित नहीं हो पाता;

सायण— ऋ०भा० "न चिकेतते ज्ञातामर्थ्यम्"; वेङ्कट—

।ए०भा०। "नविद्योतते"/ नहीं प्रकाशित होता है ।; विल्सन- ।द०ए०। "No flashes / "प्रकाशित नहीं होता" ।; ग्रिफिथ- ।द०ए०। "seemed to flash /प्रकाशित मालूम होता है (परन्तु जैसेरपोक लोग इसको प्लान करते हैं) अर्थात् "प्रकाशित नहीं हो पाता ।;

इस प्रकार इसका "प्रकाशित नहीं हो पाता" अर्थ उचित है ।।

उरा— विस्तीर्णसंग्रामे;

सायण- ।ए०भा०। "उरो । "उरु-युद्धे" इति तत्स्थ्यादेशः । विस्तीर्णसंग्रामे ।; वेङ्कट- ।ए०भा०। "विस्तीर्णसङ्ग्रामे"।; विल्सन- ।द०ए०। "In Battle /"युद्ध में"।; ग्रिफिथ-।द०ए०। "In trouble/ "युद्ध में"।; ग्रासमैन - ।द०ए०त०। die Brullen -/ In Battle "युद्ध में" ।;

इस प्रकार इसका "विस्तीर्ण संग्राम में" अर्थ उचित है ।।

सा वसुदधती श्वशुराय वय उषो यदिवष्टयन्तिगृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिन्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिताव्वैतसेन ।।

अन्वय— उषः । यदि सा उर्वशी श्वसुराय वसु वयः दधती (पतिं) वष्टि (तदा) अन्ति गृहात् (पत्युः) अस्तम् ननक्षे यस्मिन् दिवा नक्तं वैतसेन श्नथिता (पतिं) चाकन् ।।

अनुवाद— हे उषा ! यदि वह उर्वशी अपने श्वसुर (पति-पुरूरवा के पिता) के लिए (वसु) धन एवं अन्न को प्रदान करती हुई पति की कामना करती है तब अपने पति के भोगगृह से पतिगृह (निवास स्थान) को प्राप्त करती

है जिस गृह में रात दिन वह उर्वशी सन्तानोत्पत्ति से पीड़ित पति की कामना करती थी।।

टिप्पणी— ननक्षे - व्याप्त करती है; नश् व्याप्तौ, लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन "छन्दसि ---- लिट्" से लट् का बोधक । सायण- 1ऋ०भा०1 व्याप्नोति",/"व्याप्त करती है; वेङ्कट- 1ऋ०भा०1 "व्याप्नोति", विल्सन - 1E0ए01 " Has Repaired "/ "व्याप्त करती है", ग्रिफिथ- 1E0ए01 " found/ "प्राप्त करती है"; ग्रासमैन - " gelangte /"व्याप्त करती है",

इस प्रकार इसका अर्थ -"व्याप्त करती है" उचित है।।

वष्टि— कामना करती है,

वश् कान्तौ, लट्प्रयुक्त: ।

सायण- 1ऋ०भा०1 "कामयते"/"कामना करती है", वेङ्कट- 1ऋ०भा०1 कामयते", विल्सन- 1E0ए01 " Loves " /"प्यार करती है", ग्रिफिथ- 1E0ए01 " craved/ याचना करना "/"कामनाकरती, ग्रासमैन- 1E0ए0ऋ01 " Bringend" /"कामना करती है",

इस प्रकार इसका अर्थ "कामना करती है" उचित है।

दिवा- नक्तं — दिन औररात,

टी०वैनर्जी - Sanskrit English dictionary ; डॉक्टर आर, मुक्त; शब्द दिवा, adv. 1. By day. Man.4.50-cf 1st diu,-dam and divatana

नक्ताद् nigh. Bhag.P.5.22.5.2 Eating only by night. yajn. 3.319 11 tam. adv. By night. Man 6.19- c.f. lat.nox. noctu; Goth. nahts; A.S. Naht. night;

सायण- ।ऋ०भा०। "नक्तम् अहनि च", वेङ्कट- ।ऋ०भा०। "दिवा नक्तम् च", विल्सन- ।दि०ऋ०। "da and night' / "दिन और रात"।, ग्रिफिथ- ।दि०ऋ०। "day and night." "दिन और रात", ग्रासमैन- ।दि०ऋ०दि०। "Tag und Nacht'/ /day and night "/ दिन और रात" ।,

इस प्रकार इसका अर्थ "दिन और रात" उचित है ।

त्रिः स्म माह्न श्नथयो वैतसेनोतस्म मेऽव्यत्यैपृणासि ।
पुरूरवो ऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्वस्तदासी ।।

अन्वय— पुरूरवः ।त्वं। मा हन वैतसेन अनथयः स्म उत मे अव्यत्यै पृणासि स्म, ।अहम्। ते केतम् अनुआयम् हे वीर। मे तन्वः तद् आसीः ।।

अनुवाद— हे पुरूरवा ।तुम। मुझको दिन में वैत ।दण्ड। से तीन बार ताडित करो और भी व्याती न होती हुई मेरे भरण पोषण के लिए पूरा ध्यान रखते हो, इस प्रकार के हे राजा, तुम मेरे शरीर के तब सुख देने वाले थे जब मैं पहले तुम्हारे घर मैं आयी थी ।

टिप्पणी— अव्यत्यै— जो व्याती नहीं है, न व्याती अव्याती तस्मै नञ् तत्पुरुषसमासचतुर्थीएकवचनम् । अव्याती जो प्रायेण पति के पास नहीं जाती है, सायण- ऋ०भा०। "कामिनीभिरसमयाभिगमतिस नागच्छति या अव्याती

वेङ्कट - |ऋ०भा०| "सापत्नीभिः सह पत्यमि पतिना नाभिगच्छति, सा अव्यती भवति; विल्सन- |हि०ऋ०भा०| " without arrival | "बिना पहुँचे पति के पास";

इस प्रकार इसका अर्थ " जो व्यती नहीं है" उचित है ।

पृणासि— पालन करता है;

"पृण्" पालने के अर्थ में, लट् लकार मध्यमपुरुष एकवचन, सायण- |ऋ०भा०| "पूरयसि" 2 "पालन करता है; वेङ्कट- ऋ०भा० "पूरयसि | पालन करता है, विल्सन -|हि०ऋ०| " loved "/"प्यार किया है; ग्रिफिथ- |हि०ऋ०| " recieved"

इस प्रकार इसका अर्थ "पालन करता है" उचित है ।

तन्व — शरीर,

सायण- |ऋ०भा०| "शरीरस्य", वेंकट- |ऋ०भा०| "तन्वः"/शरीर, विल्सन- |हि०ऋ०| " person/ "शरीर के अर्थ में," ग्रिफिथ- |हि०ऋ०| " Body" /शरीर", ग्रासमैन- " Beherr/body "शरीर"|,

इस प्रकार इसका अर्थ " शरीर" उचित है ।

शनथयः स्म — ताडित करो,

सायण- |ऋ०भा०| "शनथयः स्म |अश्नथयः बतास्वः | "कृत्यो-र्थे प्रयोगे |पा०सू० 2-3-64| इति काल वाचिनोऽहः शब्दादधिकरणे षष्ठी।

उत अपि च"। वेङ्कट- ।ऋ०भा०। "अवधय: अपि च; विल्सन - ।ए०ऋ०।
" hast "/ " ताडितकरना", ग्रासमैन - ।ए०ऋ०अ०। " Dreimal"/
"ताडित करो । ग्रिफिथ - ।ए०ऋ०। " didst ", "ताडित करो"

इस प्रकार इसका अर्थ "ताडित करो" उचित है ।।

याः सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिर्हृदेचक्षुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः ।
ता अञ्जयोऽरुणयो न सस्रुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त ।।

अन्वय— या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिः हृदेचक्षुः न ग्रन्थिनी चरण्युः ।
ता अञ्जयः अरुणयः न सस्रुः श्रियै धेनवः गावः न अनवन्त ।।

अनुवाद— जिन तुम्हारा (सुवेगा) सुजूर्णि, श्रेणि, सुम्नआपि, हृदेचक्षु आदि
अप्सराओं के साथ ग्रन्थवती व चरणशीला (उर्वशी आयी थी) वे आभरण
विभूषित, रक्तवर्णा, अप्सरायें अब पहले की भाँति संचरण नहीं करती हैं।
तथा आश्रय के लिए चिल्लाने वाली नवप्रसूता गायों की भाँति मेरा सामी-
प्य प्राप्त करने के लिए उच्चस्वर से निवेदन नहीं करती है। (केवल तुम्हारे
ही वियोग की बातें नहीं, तुम्हारे न रहने से तुम्हारी सखियाँ भी
मेरे प्रति पूर्णतःउदासीन हो गयी हैं) ।।

टिप्पणी— चरण्युः- चरणशीला;

सायण— ।ऋ०भा०। "चरण्युः, चरणशीलोर्वशया- जगाम, यद्वा,
"हर संचरणै"।; वेङ्कट - ।ऋ०भा०।" गमनशीलाभिः"/ "गमनशील"।,
विल्सन- ।ए०ऋ०।" swift-moving ", ग्रिफिथ- ।ए०ऋ०।
" charmyo "/ "चरणशीला"।;

इस प्रकार इसका "वरणशीला" अर्थ उचित है ।।

अरुणय:— रक्तवर्णा (लाल रंग का)।

सायण— (ऋ०भा०) "अरुणवर्णा:" /लाल रंग का", वेङ्कट— ऋ०भा० "अरुणय:"/ "रक्तवर्णा", विल्सन— (इं०ऋ०) "decorated शब्द से इसका अर्थ किया है ।। ग्रिफिथ— (इं०ऋ०) " red / "लालरंगका"।

इस प्रकार इसका "रक्तवर्णा (लाल रंग का) अर्थ उचित है ।।

न सस्रु:— विचरण नहीं करती है; (पूर्व की तरह)। सायण— (ऋ०भा०) "नासस्रु: पूर्ववन्नगच्छति; वेङ्कट — (ऋ०भा०) "न यथापूर्वं नासु उप गच्छति; विल्सन— (इं०ऋ०) "did not go first 2" सर्वप्रथम विचरण नहीं करती है"।, ग्रिफिथ— (इं०ऋ०)" have hastened forth / पूर्वविचरण नहीं करती है;

इस प्रकार इसका "(पूर्व की तरह) विचरण नहीं करती है" अर्थ उचित है ।।

अनवन्त— शब्द नहीं करती है;

सायण— (ऋ०भा०) "शब्दायन्त तथा न शब्दयन्तीति व्यतिरेके दृष्टान्त:; वेङ्कट— (ऋ०भा०) "न शब्दायन्ते इति; विल्सन—(इं०ऋ०) " did not lowed "/"शब्द नहीं करती है; ग्रिफिथ— (इं०ऋ०) " have not lowed "/ " शब्द नहीं करती है"।,

इस प्रकार इसका "शब्द नहीं करती है" अर्थ उचित है ।।

समस्मि जायमाना आसत ग्ना उतेमवर्धन्नद्य स्वगूर्ताः ।
महे यत्त्वा पुरूरवो रणायवर्धयन्, दस्युहत्यायदेवाः ।।

अन्वय— अस्मिन् जायमाने ग्नाः समासत, उतईम् स्वगूर्ताः अवर्धयन् ।पुरूरवः। यद् देवाः त्वामहे रणाय दस्युहत्याय ।च। अवर्धयन् ।।

अनुवाद— इसके समुत्पन्न होने पर देवस्त्रियाएँ अप्सरायें। भी इसके साथ संगत थीं। ।इसे इनअप्सराओं का संसर्ग सुख उपलब्ध हुआ। और भी स्वर्गगामिनीनदियों ने इसका विवर्धन किया है। हेपुरूरवा। देवों ने विशाल संग्राम के लिए तथा दस्युओं के हनन के लिए ही तुम्हारी वृद्धि की है। ।दैहिक सुख के लिए तुम्हारा इस प्रकार आतुर होना समीचीन नहीं है ।।

टिप्पणी— ग्नाः -- देवस्त्रियायें।

सायण— ।ऋ0भा0। "ग्नाः अप्सरसोदेवस्त्रिया अपि। वेङ्कट— ।ऋ0भा0। "ग्नाःअप्सरसः देवपत्न्यः वा। विल्सन— ।इ0अ0। " wives (of the Gods /"पत्नियाँ ।देवों की। ग्रिफिथ — इ0अ0। dames/'wife of -baronet / "देवताओं की पत्नियाँ, — ग्रासमैन—।इ0अ0। " diesem'/dames /"देवताओं की पत्नियाँ।

इस प्रकार इसका "देव स्त्रियाँ" अर्थ उचित है ।।

स्वगूर्ता— स्वर्गगामिनी।

सायण— ऋ0भा0। "स्वयंगामिन्यः। वेङ्कट— ।ऋ0भा0। "स्वयंगामिन्यः। विल्सन—।इ0अ0। " spontaneously flowing

"स्वर्गगामिन्या; ग्रिफिथ—।द०व०। " with free kindness "

इस प्रकार इसका" स्वर्गगामिनी" अर्थ उचित है ।।

दस्युहत्याय— दस्युओं के हनन के लिए; इसका वैदिक रूप "दस्युहननाय" होता है । सायण—।व०भा०। "दस्युहननाय"/"दस्युओं के हनन के लिए; वेङ्कट— ।व०भा०। "दस्युहननाय"/ "दस्युओं के हनन के लिए; — विल्सन— ।द०व०। " for the slaughter of the Dasyus/ /"दस्युओं के विनाश के लिए; ग्रिफिथ— ।द०व०। " to destroy the DAsyus/" /"दस्युओं के विनाश के लिए, ग्रासमैन— ।द०व०को०। " Demonen / "दस्युहनन के लिए, इस प्रकार इसका "दस्युओं के हनन के लिए" अर्थ उचित है ।।

समासत— साथसंगत थी;

सायण—।व०भा०। "संगता अभवन्अपवासत्सन्; वेङ्कट— ।व०भा। "सह आसत"; विल्सन— ।द०व०। " surrounded him /" इसके साथ संगत थी; — ग्रिफिथ— ।द०व०।" Sate down together' / "साथसंगत थी; ग्रासमैन—द०व०को०। " sassen vereint /" साथसंगत थी; ।।

इस प्रकार इसका अर्थ "साथसंगत थी" उचित है ।।

रणाय— ।रिणाय। संग्राम के लिए,

"रणे" शब्द चतुर्थी एकवचन, शब्द रूप । सायण—।व०भा०।

"रमणीयाय—संग्रामाय; वेङ्कट---(ऋ०भा०) "रणाय"/"युद्ध के लिए, विल्सन—(द०वृ०) "for a mighty conflict"/ "विशाल संघर्ष के लिये
ग्रिफिथ--(द०वृ०) "for mighty battle" / "विशाल युद्ध के लिए";
इस प्रकार इसका अर्थ "(विशाल) संग्राम के लिए" उचित है।।

सचा यदासु जहतीष्वत्कम मानुषीषु मानुषो निषेवे ।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः ।।

अन्वय— यदा सचा मानुषः अत्कम् जहतीषु आसु अमानुषीषु निषेवे (तदा) ताः भुज्युः तरसन्ती न रथस्पृशः अश्वाः न मत् अप अत्रसन् ।।

अनुवाद— विगत दिनों में अपने स्वाभाविक दिव्यस्वरूप का परित्याग करके मनुष्य लोक में रहने वाली इन अप्सराओं के साथ स्नेहपूर्वक कालयापन करने वाला मैं अब यदि उनका अभिमुख प्राप्त करना चाहता हूँ तो वह मृग की भोग साधनभूता मृगी की भाँति तथा रथ में नियोजित किये जाने वाले अश्वों की भाँति मुझसे दूर भाग जाती है ।।

टिप्पणी— अत्रसन् – भाग जाती है; त्रसु गमने, लङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, "छन्दसि......लिङ्" से लङ् का बोधक । सायण— (ऋ०भा०) त्रसितिर्गतिकर्मा, गच्छन्ति, पलायन्ते(दृष्टान्तः ।, यथा ते पलायन्ते तद्वत्पला-यन्त इति ।, वेङ्कट— (ऋ०भा०) "गच्छन्ति, त्रसितिर्गतिकर्मा, अपगच्छन्ति, विल्सन—(द०वृ०) "fled"/"भाग जाती है; ग्रिफिथ—(द०वृ०)— "fled"/भाग जाती है;

इस प्रकार इसका "भागजाती है" अर्थ उचित है ।।

निषिषे— अभिमुख प्राप्त करना चाहता हूँ; नि गम्धातु, लट् लकार, आत्मने पद, प्रथम पुरुष बहुवचन । व्याख्या— ।सु0भा0। "अभिमुखं गच्छति; वेङ्कट— ।सु0भा0। "अभिमुखं गच्छति; वेङ्कट— ।सु0भा0। "अभिमुखं गच्छति; विल्सन— ।इ0 अ0। "Becoming their companeon */"उनका साथ प्राप्त करना चाहता हूँ; ग्रिफिथ— ।इ0 अ0। "wooed to mine embraces */"आलिङ्गन करना चाहता हूँ, ।; ग्रासमैन— ।इ0 अनु0। .vzermenschlichen */"आलिंगनकरना चाहता हूँ" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "अभिमुख प्राप्त करना चाहता हूँ" उचित है ।।

तरसन्तीभुज्युः न — मृग की भोगसाधनभूता मृगी की भाँति ;

व्याख्या— ।सु0भा0। "तरसन्नाम मृगः । तस्य स्त्री भुज्युर्भोगसाधनभूता स्त्री-मृगी । सा यथा व्याघ्रादिभीता पलायते; वेङ्कट— ।सु0भा0। "तरसद् नाम मृगस्तस्य भोगसाधनभूता स्त्री; विल्सन— ।इ0 अ0। "like a timid doe */"कायर हिरणी की भाँति; ग्रिफिथ— ।इ0 अ0। "Sacred snake */"डरे हुए साँप की तरह, ग्रासमैन— ।इ0 अनु0। bebende Schlange/'sacred snake' /"डरे हुए साँप की भाँति" ।,

इस प्रकार इसका अर्थ "मृग की भोगसाधनभूता मृगी की भाँति उचित है ।।

टिप्पणी— समृद्द॰ को — सम्पर्क करता है; सम्, पूर्वी सम्पर्क, लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन, आत्मनेपद।, — सायण—।ऋ0भा0। "संपर्क करोति"/ "सम्पर्क करता है; वेङ्कट —" ।ऋ0भा0। "संपर्क करोति/"सम्पर्क करता है", विल्सन—।द पृ0। "hne converse/ सम्पर्क करता है", ग्रिफिथ—।द पृ0। hath converse "/ "बातचीत के द्वारा सम्पर्क करता है।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सम्पर्क करता है" उचित है ।।

न शुम्भत — प्रकट नहीं करती है;

शुम्भदीप्तौ, आत्मनेपद, लट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन।; न इव का द्योतक, न= नकारात्मक, सायण—।ऋ0भा0। "न प्रकाशयन्ति"/"प्रकट नहीं करती है।, वेङ्कट — ।ऋ0भा0। " न प्रकाशयन्ति"/ नहीं प्रकट करती है"।; विल्सन — ।द पृ0। "do not show "/"दिखाती नहीं है", ग्रिफिथ—।द पृ0। "do not show " / "दिखाती नहीं है"।;

इस प्रकार इसका अर्थ - "प्रकट नहीं करती है" उचित है ।।

आतपः— संतापकारिणी,

अति ।संतापभूता: सताने वाले; सायण—।ऋ0भा0। "आतपः - अति भूतात्स्वदानी; वेङ्कट- ।ऋ0भा0। "आतीभूता:", विल्सन—।द पृ0। " They / "वे अर्थात सन्ताप कारिणी ।अप्सरायें।। , ग्रिफिथ — ।द पृ0। " They /"वे", सन्तापकारिणी ।अप्सरायें।।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ" सन्तापकारिणी" उचित है ।।

।द ५०। "flashing lightening "/ "चमकता हुआ प्रकाश अर्थात्", अन्तरिक्ष", ग्रिफिथ – द ५०। "falling lighting "/ "गिरती हुआ प्रकाश; ग्रासमैन— ।द ५०। "leuchtete " । "प्रकाशित ,अन्तरिक्ष सम्बन्धी" उचित है ।।

भरन्ती— सम्पन्न करती हुई;

सायण— ।५०भा०। "सम्पादयन्ती; वेङ्कट –।५०भा०। "हरन्ती; विल्सन—।द०५०।"bringing "/ "सम्पन्न करती हुई"।, ग्रिफिथ — ।द ५०। "brought " / लाती हुई; ग्रासमैन – ।द०५०ज०। "brachte /brought /"लाती हुई"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "सम्पन्न करती हुई" उचित है ।।

सुजातः — सुयोग्य पुत्र की जननी;

सायण — ।५०भा०। " सुजननः पुत्रः"/ "सुयोग्य पुत्र की जननी; वेङ्कट— ।५०भा०। "सुजातः पुत्रः" /"सुयोग्य पुत्र की जननी; विल्सन— ।द ५०। " A son is able born "सुयोग्य पुत्र की जननी"।; ग्रिफिथ— ।द ५०। " born a strong young hero "ः"सुयोग्य पुत्र की जननी;।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " सुयोग्य पुत्र की जननी" उचित है ।।

प्र-तिरत — प्रवर्धित करती है;

सायण— ।५०भा०। "प्रवर्धयति"।; वेङ्कट— ।५०भा०। "प्रवर्धयति" "प्रवर्धित करती है; विल्सन – ।द ५०। " has prolonged / "प्रवर्धित किया है,।; ग्रिफिथ— ।५०भा०। " May prolong /"प्रवर्धित करेगी"।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "प्रवर्धित करती है" उचित है ।।

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः ।

अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न म आशृणोः किमभुग्वदासि ।।

अन्वय— पुरूरवः इत्था गोपीथ्याय जज्ञिषे, मे तत् ओजः दधाथ (च) । विदुषी सस्मिन् अहनि त्वा अशासम् मे न आशृणोः । किं अभुक् वदासि ?

अनुवाद— हे पुरूरवा ! इसी प्रकार पृथ्वी पालन के लिए समुत्पन्न हुए थे, मुझे तुम्हारी इस दुर्बलता का आभास था। तुम्हारा यह दैन्य प्रदर्शन तुम्हारे सांसारिक भोगों के प्रति अतिशय व्यग्रता तथा आवश्यक राजकर्म निर्वाह के प्रति उदासीनता का सूचक है । अभोक्ता या अपालयिता के समान क्या व्यर्थ बकवास कर रहे हो ?

टिप्पणी— गोपीथ्याय – पृथ्वी पालन के लिए; सायण– ।10।95।11। "गोः पृथ्वी । पीथं पालनम् । स्वार्थिकस्तद्धित । भूमे रक्षणाय । पीथमेव – पीथ्यम्, गोपीथ्यं इति गोपीथ्यम् तस्मै; — वेङ्कट— ।10।95।11। "पृथिव्या रक्षणाय"/ "पृथ्वीकी रक्षा के लिए"।; विल्सन – ।10।95।11। "To protect the earth /"पृथ्वी की रक्षा के लिए", ग्रिफिथ— ।10।95।11। " drink from earthly "/ "पृथ्वी के ... ही उत्पन्न",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पृथ्वीपालन के लिए" उचित है ।।

जज्ञिषे — समुत्पन्न हुए थे

सायण— ।10।95।11। "जज्ञिषे हि जातोऽसि"/"उत्पन्न हुए थे"।.

वेङ्•कट-- ।हि0भा0। "जातो इसि" / "समुत्पन्न हुए थे"।, विल्सन--

।द0हि0। "hast been born "/"समुत्पन्न हुए थे; ग्रिफिथ --

।द हि0। hath birth /" उत्पन्न हुए थे; ग्रासमैन- ।द0हि0अं0।

" Bist "/"उत्पन्न हुए थे;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "समुत्पन्न हुए थे" उचित है ।।

वदसि-- बोलते हो;

"वद्" परिभाषणे, लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन ।; सायण--

।हि0भा0। "वदसि हवे जाय इत्यादिक रूपं प्रलापम् । वदेर्लेट्यडागमः।

वेङ्•कट - ।हि0भा0। "वदसीति"/ "बोलते हो", विल्सन -

।द हि0।"dost address " /"बोलते हो, ग्रिफिथ -- ।द हि0। "

sayest /"कहते हो", -- ग्रासमैन-- ।द0हि0अं0। " wirst "/sayest

/ "कहते हो "।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "बोलते हो" उचित है ।।

अभुक्-- अभोक्ता;

अपालयिता या अभोक्ता, भुज भुङ्•क्ते, न भुक् अभुक् नञसमास ।;

सायण --।हि0भा0। "अभुक्-अभोक्तापालयिता; वेङ्•कट--।हि0भा0।

"अपरिपालनरहिताः",

इस प्रकार इसका अर्थ "अभोक्ता" उचित है ।।

।ऋ०भा०। "विरलेष्येद्" /"विश्लेषित कर सकता है"।; विल्सन— ।८ ऋ०। "shall sever "/ " अलगकरेगा; ग्रिफिथ- ।८ ऋ०। "shall divide /"विभाजित करेगा।;

इस प्रकार इसका अर्थ "विश्लेषित कर सकता है" उचित है ।।

दीदयत्— दीप्तिमान होने पर;

दीप्तिकर्म, धु म होतने, विद् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।, सायण- ।ऋ०भा०।"दीप्यते । दीदयतिदीप्तिकर्मेति नैरुक्तो -धातुः; वेङ्कट - ऋ०भा। "दीप्यते"/ "दीप्तिमान होने पर"।, विल्सन - ।८ ऋ०। "shines / "दीप्तिमान होता है; ग्रिफिथ— ।ऋ०भा०। "shines /"दीप्तिमान होता है; ग्रासमैन -।८ ऋ०। "schwieger "/shines " / "दीप्तिमान होता है"।,

इस प्रकार इस का अर्थ "दीप्तिमान होने पर " उचित है ।।

दम्पती— पति और पत्नी (जोड़ा);

जायाश्च पतिश्च इति जम्पती-दम्पती। सायण- ।ऋ०भा०।" जायापती; वेङ्कट— ।ऋ०भा०।"दंपती; विल्सन — ।८ ऋ०। " husband and wife " / "पति और पत्नी; ग्रिफिथ — ।८ ऋ०। " wife and husband "/ पत्नीऔर पति"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "पति और पत्नी (जोड़ा)" उचित है ।।

प्रतिब्रवाणिवर्तयतेअ श्रुचक्रन्नक्रन्ददाध्येशिवायै ।

प्रतत्तेहिनवा यत्तेअस्मे परेह्यस्तं नहिमूरमापः ।।

अन्वय— प्रतिब्रवाणि चक्रन् आध्यै शिवायै क्रन्दन न अश्रु वर्तयते, यत् ते अस्मे (अस्ति) ते तत् हिनव अस्तं परेहि । मूरः नाम हि आपः ।।

अनुवाद— तुम्हारा नवजात तनय रोता हुआ तथा इच्छित वस्तु के लिए क्रन्दनकरता हुआ अवश्य ही अश्रु प्रवाहित करेगा, किन्तु मैं तुमसे वादा करती हूँ कि सम्प्रति मेरे उदर में गर्भ रूपेण अवस्थित तुम्हारे उस पुत्र को मैं तुम्हारे पास भेज दूँगी । यदि तुम इतने के लिए ही व्याकुल हो तो घर वापस चले जाओ या लौट जाओ। हे मूढ़ ! मेरा अनुनय मत करो, मुझे नहीं प्राप्त कर सकोगे ।।

टिप्पणी — वर्तयते — प्रवाहित करेगा।;

"वृत्"वर्तने, आत्मनेपद, लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन।; अत्र तु "छन्दसि.........लुट्" से भविष्यत् प्रयोग । — सायण— ।ऋ0भा0। "वर्तयिष्यति"/ "प्रवाहित करेगा", वेङ्कट— ।ऋ0भा0। "वर्तयिष्यति"/ "प्रवाहित करेगा"।, विल्सन— ।द ऋ0। " will shed / "प्रवाहित करेगा"।; ग्रिफिथ— ।द ऋ0। " are falling " /"प्रवाहित कर रहा है"; ग्रासमैन— ।द ऋ0वे0। " er vergiessen", " are falling / प्रवाहित कर रहा है"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "प्रवाहित करेगा" उचित है ।।

भवन्ति " इति धनाणव । वेङ्कट-- ।हि०भा०। "आप्नोति"। "प्राप्त करते हो", ग्रिफिथ-- ।हि०भा०।" won 'wirst' "/ " प्राप्त करते हो;

इस प्रकार इसका अर्थ "प्राप्त करोगे" उचित है ।।

सुदेवोऽअद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ ।

अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः ।।

अन्वय-- सुदेवः अद्य प्रपतेत् अनावृत्त परमां परावतं गन्तवै अध निर्ऋते उपस्थे शयीत् अध एनं रभसास वृकाः अद्युः ।।

अनुवाद-- तुम्हारे साथ आनन्द क्रीड़ा करने वाला यह पुरुरवा सर्वथा आवरण होने के कारण आज ही किसी शैल शिखर आदि उच्च स्थान से गिर पड़ेगा अथवा किसी सुदूर निर्जन स्थान को चला जायेगा। वह या तो निर्ऋति पापदेवता की गोद में शयन करे अर्थात मर जायें अथवा उसे वेगवान जंगली कुत्ते खा जायें ।।

टिप्पणी-- सुदेव -- सानन्द क्रीड़ा करने वाला, सुक्रीडः क्रीडने, शोभना क्रीड ।; सायण् -- ।हि०भा०। "सुदेवः त्वया सह सुक्रीडः पतिः","/" तुम्हारे साथ क्रीड़ा करने वाला पति"।; वेङ्कट-- ।हि०भा०।"सुक्रीडः पतिः"/ "सानन्द क्रीड़ा करने वाला पति", विल्सन -- ।ह पृ०। " who sports with thee "/"उसके साथ क्रीड़ा करने वाला; ग्रिफिथ -- ।ह पृ०। " lover "/"क्रीड़ा ।प्यार। करने वाला"।, ।म०वा०।।-5-1-8 ।---

"क्रुीडो"।, इस प्रकार इसका" सानन्द क्रीड़ा करने वाला" अर्थ उचित है ।।

वृका:— भेड़िये (जंगली कुत्ते)

सायण— ।ऋ०भा०। " आरण्याः श्वानः",/"जंगली कुत्ते", वेङ्कट— ।ऋ०भा०।" वृका वा श्वानो"/ कुत्ते", विल्सन— ।द ऋ०। "wolves " / "भेड़िये", ग्रिफिथ— ।द ऋ०। " wolves "/ "भेड़िये", ग्रासमैन — wolf/wolves / "भेड़िये", वाजसनेय — ।ऋ०प्रा० ।।-5-।-8। वृका वा श्वानो"/कुत्ते

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "भेड़िये (जंगली कुत्ते)"उचित है ।।

रभसास— वेगवान्

"रभस "शब्दस्य प्रथमा बहुवचन । रभसाः और रभसास ये दोनों ही रूप वेद में आते हैं। सायण—।ऋ०भा०। "वेगवन्तः" /वेगवान्", वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "वेगवन्तः" /वेगवान", विल्सन—।द ऋ०। " swift moving " / "वेग से घूमते हुए"।, ग्रिफिथ—।द ऋ०।" fierce repacious' "/ "अत्यन्त वेगवान", ग्रासमैन – ।द०ऋ०सं०। " withende "/"वेगवान्"।

अतएव इस शब्द का अर्थ "वेगवान्" उचित है ।।

अद्युः— खा जायें

"अद्" भक्षणे, लोट् लकार प्रथमपुरुष बहुवचन ।, सायण—।ऋ०भा०। "भक्षयन्तु"/ "खा जायें", वेङ्कट—।ऋ०भा०। "अद्युः",/"खा जायें", विल्सन— ।द ऋ०। " " / "नष्ट कर दें, ग्रिफिथ —।द ऋ०। " devour /"नष्ट कर दें, ग्रिफिथ— ।द ऋ०। " devour /"नष्टकर दें"।

इस प्रकार इसका अर्थ "अलङ्करकारी" उपयुक्त है ।।

यदिन्यावरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्त्रः ।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि ।।

अन्वय-- यद् अहम् निरूपा अवरम्, चतस्रः रात्रीः शरदः मर्त्येषु अवसम् [च], अहम् सकृत घृतस्य स्तोकम आश्नाम तादेव तातृपाणा इदं चरामि ।।

अनुवाद-- [मानव सम्पर्क के कारण अपने स्वाभाविक देवत्व का परित्याग किये हुए अथवा] पति का आनुकूल्य प्राप्त करने के लिए मैं अनेक रूप धारण करने वाली विचरण करती रही। मैंने चार आनन्ददायी वर्षों तक मनुष्यों के बीच निवास किया; दिन में एक बार थोड़ा सा घी खाती थी, सम्प्रति उसी अल्पकृत आशन से संतृप्त होती हुई भ्रमण कर रही हूँ ।।

टिप्पणी-- अवरम् - विचरण करती रही, परगती, लङ्० उत्तम पुरुष एकवचन " छन्दसि... लिङ्" ।; वेङ्कट-- ।०।९५।०। "अवरम्" /विचरण करती रही", विल्सन-- । द ७०। " wandered " /"विचरण करती रही", ग्रिफिथ-- ।द ७०। journied /"यात्रा करती रही;

इस प्रकार इसका अर्थ "विचरण करती रही" उचित है ।।

रात्रीः-- आनन्द देने वाली; रमयति, आनन्दयति, भूतानि रातयाने, रमन्ते जनाः अस्याः इतिरात्रीः ।; यास्क--।[निरुक्त -]। " [।] रात्रि-निशाचर प्राणियों को रमाती अर्थात् आनन्द प्रदान करती है। परत्रयति नक्तचारीणि भूतानीति रात्रिः ।--रञ्ज + [णिच्] + त्रि [त्रिप्]=

रा+ त्रि — रात्रि ।।।। रात्रि अन्य (निशाचर से भिन्न) प्राणियों को स्वप्नावस्था में स्थिर कर देती है। उपरमयती चरणाणीति रात्रिः- रम् + (णिच्)+ त्रि (क्रिप्) – रान + = रात्रिः ।।।। रात्रि में अवश्याय (ओस की बूँद) प्रकृति की ओर से पृथ्वी को दिये जाते हैं। इसलिए वह रात्रि कहलाती है। रीयन्ते प्रदीयन्तेऽस्यामवश्यायादाः इति रात्रिः, रादाने+ त्रि = रात्रिः ।। सायण— ।(ऋ0भा0। "प्रमयति"/"आनन्द देती है," वेंकट-- ।ऋ0भा0। "रमयित्री:"/आनन्द प्रदान करती है; विल्सन- ।द0ऋ0। "delightful "/ "आनन्दता पूर्ण", ।

इस प्रकार इसका अर्थ "आनन्द देनेवाली" उपयुक्त है ।।

अवसम्— निवास किया;

"वस्" लङ्-लकार उत्तम पुरुष एकवचन; सायण-5 ।ऋ0भा0। "न्य-वसम्"/ "निवास किया; वेङ्कट —।ऋ0भा0। "अवसम्" / "निवास किया"; विल्सन- ।द ऋ0। " dwelt " /निवास किया", ग्रिफिथ—।द ऋ0। " spent "/"विताया"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "निवास किया" उपयुक्त है ।।

अन्तरिक्षप्रा रजसो विमानी ऊपक्षिता शृङ्गिणी वसिष्ठः ।

उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्निवर्तस्व हृदयं तप्यते मे ।।

अन्वय— अन्तरिक्ष प्रा रजसः विमानीम् उर्वशी वसिष्ठः उपशिक्षामि सुकृतस्य रातिः (पुरूरवा) त्वा उपतिष्ठात् हृदयं मे तप्यते निवर्तस्व ।।

अनुवाद— अपनी कान्ति से अन्तरिक्ष को विभासित करने वाली, एवं

मनोरंजक जलका अवगाहन करने वाली उर्वशी को सर्वाधिक काल तक अपने पास रखने वाला मैं पुनः अपने वश में करना चाहता हूँ। सुकृतदाता यह पुरूरवा तुम्हारा सामीप्य प्राप्त करे। मेरा दिल तड़प रहा है अतः लौट चलो ।।

टिप्पणी— अन्तरिक्ष— (अन्तरिक्ष)

यास्क—। निरुक्त। " (।) क्योंकि यह अन्तरिक्ष द्यावा भूमि के मध्य में (अन्तरा) भूमि के अन्तक (क्षा+ अन्त) होता है इसलिए इसे अन्तरिक्ष कहते हैं। ऐसी स्थिति में— अन्तरा+ क्षा— अन्तरिक्ष (रा के आ का परिवर्तन इ तथा क्षा के आ का परिवर्तन अ में। (।।) क्योंकि यह इन दोनों द्यावाभूमि (इमे) के मध्य में (अन्तरा) निवास करता है (क्षियति) इसलिए यह अन्तरिक्ष है। — इमे + अन्तरा + क्षय (क्षि का कृदन्तरूप) इ+ अन्तर+क्ष=अन्तरिक्ष (इ का र, क्ष, के मध्य आगमन) (।।।) क्योंकि (अन्तर) अविनाशी के रूप में (अक्षय) स्थित रहता है। अर्थात् शरीरों के नष्ट हो जाने पर भी उनमें रहने वाला आकाश या शून्य नष्ट नहीं होता, अत, अन्तरिक्ष (के रूप में होगा) ।। सायण- ।(०भा०। "अन्तरिक्ष", वेङ्कट—।(०भा०। "अन्तरिक्षस्य"/" अन्तरिक्ष को", विल्सन—।ह ०। Element and measures"/ "पृथ्वी और आकाश के बीच का अर्थात् अन्तरिक्ष, ग्रिफिथ—।ह ०। " air and measures "/"वायु और आकाश के बीच अर्थात अन्तरिक्ष

इस प्रकार इसका अर्थ "अन्तरिक्ष" ही उपयुक्त है ।।

सायण--।ऋ०भा०। "उपतिष्ठतु"। "समीप स्थित हो", वेङ्कट--

।ऋ०भा०। "उपतिष्ठतु"/ "समीपता प्राप्त करें", विल्सन- ।द ऋ०।

"rit abide near" /समीपता को प्राप्त करें", ग्रिफिथ--।द ऋ०।

approach thee" / " समीपता प्राप्त करें"/,

इस प्रकार इसका अर्थ "सामीप्यता प्राप्त करें" उचित है।।

निवर्तस्व- लौट आओ; सायण-- ।ऋ०भा०। "निवर्तस्व"/"लौट आओ",

वेङ्कट"।ऋ०भा०। "निवर्तस्व" /"लौट आओ", विल्सन- ।द ऋ०। " come

back "/"वापस आओ," ग्रिफिथ-- ।द ऋ०।" Turn "/"वापस आओ,

इस प्रकार इसका अर्थ "लौट आओ" उचित है ।।

तप्यते-- तड़प रहा है,

सायण-- ।ऋ०भा०। "तप्यते"।"तड़प रहा है; वेङ्कट - ।ऋ०भा०।

"तप्यते" /"तड़परहा है", विल्सन- ।द ऋ०। " berneing "/ जलरहा

है", ग्रिफिथ- ।दऋ०।" Troubled "/"परेशान हो रहा है", ग्रासमैन--

।द०ऋ०श०। " gogualt "/"दुःखी हो रहा है",।

इस प्रकार इसका अर्थ "तड़प रहा है" उचित है ।।

इति त्वादेवा इम आहरेल यधे मे तद्ववसि नृत्युबन्धुः ।

प्रजाते देवान् हविषा यजाति स्वर्गस्मानपि मादयते ।।

अन्वय-- इदृ त्वा इमे देवाइति आहमृत्यु बन्धु यथा ईवृ पतदृ भणाति ।

प्रजादेवान हविषा यजाति स्वर्ग स्वमपि मादयते ।।

अनुवाद-- हे पुरूरवा ! तुमको ये देवता यह कहते हैं कि तुम मृत्यु के बन्धु होकर इस (उर्वशी) के हो जावोगे । (अर्थात् मरणोपरान्त तुम इसको प्राप्त कर सकोगे) इसलिए तुम्हारी प्रजा (सन्तान) देवताओं को हविष्य प्रदान करे । (अर्थात हविष्य से यज्ञ करे)। इस प्रकार स्वर्ग ही में तुम भी इन लोगों के साथ हर्षित होकर सुखी रहोगे ।

टिप्पणी-- मृत्युबन्धु - (मृत्यु के बन्धु):

सायण--(श०भा०) "मृत्योः बन्धकः मृत्योर्बन्धुभूतो वा मृत्युकालपर्य-न्तमवस्थायी" वेङ्कट-- (श०भा०) "बन्धुर्मृत्योः" /"मृत्यु के भाई;
विल्सन --(द ऋ०) "subject to death"/"मृत्यु का वशी (भाई)".
ग्रिफिथ-- (द ऋ०) "death-subject" / "मृत्यु-बन्धु".

भवसि-- हो जावोगे;

"भू" सत्तायाम्, लट् लकार, (उत्तम पुरुष एकवचन); सायण--(श०भा०) "भविष्यसि"/"हो जावोगे", वेङ्कट--(श०भा०) "भविष्यसि" / "हो जावोगे", ग्रिफिथ-- (द०ऋ०) "got" / "पाओगे", ग्रासमैन-- (द ऋ०) "Gotter"/Got "/ "पाओगे"।

इस प्रकार इसका अर्थ " हो जावोगे" उचित है ।।

मादयसे-- हर्षित होकर;

मदी हर्षे, आत्मनेपद लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन); सायण-(श०भा०) "अस्माभिः सह । एवमाहुरित्यर्थः", वेङ्कट- (श०भा०) "मादयासे मया-

तहेति; विल्सन-- ।द ५०। " Rejoice "/"हर्षित होकर", ग्रिफिथ-
।द ५०। " Rejoice "/"हर्षित होकर",

इस प्रकार इसका अर्थ "हर्षित होकर" उचित है ।।

यजाति-- पूजा करे;

"यज्" धातो+ लेट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन ।; "यजाति" इति
सायण - ५०।५०१ ।; वेंकट--।५०।५०। "यजतु"/"पूजा करें", विल्सन-
।द ५०। " proprate "/ "यजनकरे", ग्रिफिथ- ।द ५०। " serve "
/"यजन करे", इस प्रकार इसका अर्थ" पूजा करे" उचित है ।।

(10 - 98) देवापि-शान्तनु

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।

आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वान्त्स पर्जन्यं शंतनवे वृषाय ॥

अन्वय-- बृहस्पते ! मे देवतां प्रति इहि, मित्रो वा असि वरुणः यद्वा पूषा आदित्यैः वसुभिः मरुत्वान्, सः पर्जन्यं शंतनवे वृषाय ॥

अनुवाद-- हे बृहस्पति ! मुझ पर अनुग्रह करते हुए तुम अब देवताओं के पास गमन करो । तुम मित्रावरुण, पूषा, आदित्यगण और वसुगण के साथ साक्षात् इन्द्र ही हो । अतः तुम राजा शान्तनु के लिए मेघ से जल वृष्टि करो ॥

टिप्पणी-- बृहस्पते -- हे बृहस्पति,

यास्क-- (निरुक्त) " बृहस्पति का अर्थ "वाणी का पति" (बृहतां वाणीनां पतिः) है। इसके प्रथम घटक "बृहत" का "पति" के साथ समास होने की स्थिति में "त्" का लोप और "स्" का आगम हो जाता है। "बृहत्" का निर्वचन यास्क ने उस "बृह् धातु से माना है (बृह+ अत् बृहत्) । जिससे ब्रह्म और ब्रह्मा शब्द निष्पन्न होते हैं इसकी व्याख्या (निरुक्त 1/7) में की है।" सायण-- (ऋ0भा0) "हे बृहस्पते", वेङ्कट-- (ऋ0भा0) "बृहस्पते", विल्सन-- (अं0अ0) " Brihaspati , ग्रिफिथ-- (अं0अ0) " O Brihaspati, /" हे बृहस्पति ग्रासमैन-- (ज0 अ0) " Brihaspati "/बृहस्पति गेल्डनर-- (ज0 अ0) " Brahaspati "बृहस्पति",

इस प्रकार इसको "बृहस्पति (सम्बोधन" के रूप में ही लिया गया है यह उचित है ॥

इहि— गमन करो;

सायण—।१०भा०। "प्रतिगच्छ"/ गमनकरो"।, वेङ्कट — ।१०भा०।" प्रतिगच्छ"गमन करो", विल्सन— ।१०अं०। "Repair /"गमन करो अर्थात् जाओ," ग्रिफिथ— १०अं०। " come "/"आओ", ग्रासमैन—।द०१०अं०। " Komm/Come / "आओ", गेल्डनर— द १०अं०। "Nirm /'come आओ"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "गमन करो" ही उचित है ।।

वृषाय — वर्षा करो;

सायण— ।१०भा०। "वृषायवर्षय ।छन्दसि शायजपि इति व्यत्ययेन श्नोऽपि शायजादेश:"/ वर्षा करो"।, वेङ्कट—।१०भा०। "वर्षय"/ "वर्षा करो"।, विल्सन — ।१०अं० ।" send down (rain) "/"वर्षा करो ।जल।"।, ग्रिफिथ — ।१०अं०। " Make rain Drops "/"।जल। वर्षा करो", ग्रासमैन— ।द १०अं०। "lass regnen sei /"वर्षा करो", गेल्डनर—।द १०अं०। " zuregenen "/ वर्षा करो; ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " वर्षा करो" उचित है ।।

शंतनवे — शन्तनु के लिए;

सायण— ।१०भा०। "शंतनवे राज्ञे"/"शन्तनु ।राजा। के लिए;" वेङ्कट— ।१०भा०।"शन्तनवे" /"शन्तनु के लिए"।, विल्सन—।१०अं०। " Power SANTANU for SANTANU /"शन्तनु के लिए"।, ग्रिफिथ —।१०अं०। " DEM Santanu/ for santa- / "शन्तनु के लिए", ग्रासमैन — ।द १०अं०। " for santanu/for Santanu nu /शन्तनु के लिए"।, गेल्डनर—।द १०अं०। " /"शन्तनु के लिए"।

(230)

इस प्रकार इसका अर्थ "शन्तनु के लिए" उचित है ।।

आदेवोदूतो अजिरश्चिकित्वान् त्वद्देवापेअभिमामगच्छत् ।

प्रतीचीन: प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन् ।।

अन्वय-- देव: दूत: अजिर: चिकित्वान् देवापे त्वत् मान् अभि आ अगच्छत् । (हे बृहस्पते) प्रतीचीन: मां प्रति आववृत्स्व, ते द्युमतीं वाचम् दधामि आसन् ।।

अनुवाद-- हे देवापित (कोई मेधावी--और द्रुतगामी देवता दूत बनकर तुम्हारे पास से मेरे पास आगमन करे । (हे बृहस्पते) तुम हमारे सामने पधारो, तुम्हारे लिए हमारे मुख में श्रेष्ठ स्तुतियुक्त है ।।

टिप्पणी-- देवापित-- (देवापि)।

यास्क-- निरुक्त । "जोस्तुति और हवि आदि के दान के द्वारा देवताओं की सुमति की आप्ति (प्राप्ति) की आकांक्षा करता है, वह "देवापि" है । इस अर्थ के अनुसार "देव+ आप् (प्राप्त्यर्थक) + इ देवापि के रूप इसका निर्वचन है ।। सायण-- (ऋ0भा0) "हेदेवापे", वेङ्कट-- (ऋ0भा0) "देवबन्धो" ।, विल्सन--(ऋ0अ0)" Devapi "/"देवापित", ग्रिफिथ-- (ऋ0अ0) "Devapi "/"देवापित ग्रासमैन--(द ऋ0अ0) " Devapi /देवापित गेल्डनर-- (द ऋ0अ0) " Devapi /"देवापि".

इस प्रकार यह "देवापि " अर्थ में ही उचित है ।।

द्युमतीं--श्रेष्ठ।

सायण-- (ऋ0भा0) "दीप्तियुक्तां" वेङ्कट-- (ऋ0भा0) "दीप्तिमतीम्"। "अत्यन्त तेजयुक्त अर्थात श्रेष्ठ"।, विल्सन--(ऋ0अ0)" brilliant "तेज (श्रेष्ठ)"।, ग्रिफिथ -- (ऋ0अ0) " brilliant "/"श्रेष्ठ (तेजयुक्त)"।, ग्रासमैन --(द0ऋ0अ0)" glanzende "/ brilliant"/"श्रेष्ठ"।, गेल्डनर-

।द ॰ग्र०सं०। "glanzende "/"श्रेष्ठ"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "श्रेष्ठ" उचित है ।।

दधामि--- धारण करता हूँ;

दध् धातु लट् लकार उ त्तम पुरुष एकवचन ।, सायण- ।ॠ०भा०।
"अस्मदीयं", वेङ्•कट--।ॠ०भा०। "स्थापयामि"/-"स्थापित करता हूँ"।,
विल्सन--।ॠ०सं०। " have " / "धारण करता हूँ"।, ग्रिफिथ--।ॠ०सं०।
" put "/"रखता हूँ"।, ग्रासमैन--- ।द ॠ०सं०। " lege "/"धारण करता
हूँ"।, गेल्डनर--- ।द ॠ०सं०। " lege "/"धारण करता हूँ।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "धारण करता हूँ" उचित है ।।

प्रतीचीन--- हमारे सामने;

सायण--।ॠ०भा०। "प्रतीचीन: अस्मदभिमुख:"/"हमारे सम्मुख"।
वेङ्•कट--।ॠ०भा०। "अभिमुख:"/हमारे सामने ।, विल्सन- ।ॠ०सं०।
" turning towards " /"सामने घूमते हुए"।, ग्रिफिथ--- ।ॠ०सं०।
" turn thee "/"सामने घूमते हुए" ।

इस प्रकार इस शब्दका अर्थ "हमारे सामने" उचित है ।।

वाचम्---स्तुतिरूपी वचन

सायण--।ॠ०भा०। [वाचं स्तुतिरूपां", वेङ्•कट--- ।ॠ०भा०। "स्तुति-
रूपा"/"स्तुतिरूपीवचन", विल्सन--।ॠ०सं०। " eulogium "/"स्तुति
रूपी वचन"।, ग्रिफिथ--- ।ॠ०सं०। " language "/वचन [स्तुति]".

ग्रासमैन-- ।द ०ऋ०। "lied / "वचन"।, गेल्डनर -- द ०ऋ०। "Rede "/"वचन" ।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "स्तुति रूपी वचन" उचित है ।।

अस्मेधेहि द्युमतीं वाचमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।
यया वृष्टिं शंतनवे वनाव दिवोऽस्मो मधुमाँ आ विवेश ।।

अन्वय--बृहस्पते । अस्मे द्युमतीं वाचं आसन् धेहि, अनमीवाम् इषिरां यया शंतनवे वनाव वृष्टिं दिवः । अप्सः मधुमान् आ विवेश ।।

अनुवाद-- हे बृहस्पते । तुम हमारे मुख में श्रेष्ठ स्तोत्र स्थापित करो । वह स्तोत्र स्फूर्तियुक्त और स्पष्ट हो । हम उससे शन्तनु के लिए वृष्टि प्राप्त करें । मधुर जल की बूंदें प्रवेश करें ।।

टिप्पणी -- धेहि--धारण करो;

सायण--।ऋ०भा०। "धेहि स्थापय"/स्थापित करो"।, वेङ्कट -- ।ऋ०भा०। "धेहि"/ "धारण करो"।, विल्सन--।ऋ०अं०।" Put / "धारण करो", ग्रिफिथ --।ऋ०अं०। " deposit "/स्थापित करो", गेल्डनर व ग्रास मैन-- ।द ऋ०अं०।" leg "/धारण करो"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "धारण करो" उचित है ।।

अनमीवाम्-- रोगों से मुक्त,

सायण-- ।ऋ०भा०। "अनमीवाम्- अमीवारहिताम् । बाधोऽमीवा नाम बाह्-दादि दोषः"। वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "अमीवारहिताम्"/ रोगों

/रोगों से रहित", विल्सन— । पृ०सं०। " free from defect "/, "दोष से मुक्त", ग्रिफिथ—। पृ०सं०। " free from weakness "/"कमजोरी से मुक्त अर्थात् रोगमुक्त",।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "रोगों से मुक्त" उचित है।।

इषिरा— गमनशील;

सायण— । पृ०भा०। "इषिरा-गमनशीलाम्", वेङ्कट— । पृ०भा०। "गमनशीलाम्"/ गमनशील"।, विल्सन—। पृ०सं०। " prompt "/ "द्रुत" अर्थात् exact to moment "।, ग्रिफिथ— । पृ०सं०। " vigorous "/"युवा"।, ग्रासमैन—।द पृ०सं०। " Muntree "।, गेल्डनर—।द पृ०सं०। " gesunde "।,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "गमनशील" उचित है ।।

मधुमान्- मधुरता से परिपूर्ण;

सायण—। पृ०भा०। "माधुर्योपेत:" माधुर्यता से युक्त"।, वेङ्कट- । पृ०भा०। "मधुरस:"। "मधुरतापूर्णरस""।, विल्सन-। पृ०सं०। " sweet "/ "मधुर"।, ग्रिफिथ— । पृ०सं०। "meeth "/ sweat "/"मधुर"।, ग्रासमैन— ।द पृ०सं०। " susser/sweet "/" मधुर"।, गेल्डनर—।द पृ०सं०। suber /sweet "/"मधुर।,

इस प्रकार इसका अर्थ मधुरता से परिपूर्ण" उचित है ।।

द्रप्स:— जल की बूंद;

सायण—। पृ०भा०। "उदकस्यन्द:"/"जलकी बूंद"।, वेङ्कट— । पृ०भा०। "उदकम्"/"जल"।, विल्सन—। पृ०सं०। " drop "/बूंद"।, ग्रिफिथ- । पृ०सं०। " rich drop "/"जल की बूंद"।, ग्रासमैन—।द पृ०सं०। "

" Trop/drop /"बूँद।, गेल्डनर--द्र०अं०। " Trop/drop /"बूँद ।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जल की बूँद" उचित है ।।

आ नोद्रप्सा मधुमन्तो विशन्त्विन्द्र देह्यधिरथं सहस्त्रम् ।

निषीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान्देवापे हविषा सपर्य ।।

अन्वय-- नः द्रप्साः मधुमन्तः आ विशन्तु, इन्द्र। अधिरथं सहस्त्रं देहि ।

देवापे निषीद होत्रम्, ऋतुथा यजस्व देवान् हविषा सपर्य ।।

अनुवाद-- हमारे निमित्त वर्षा का जल प्राप्त हो, हे इन्द्र। तुम अपने रथ के द्वारा महान धन प्रदान करो । हे देवापि, हमारे इस यज्ञ में आकर विराजमान होवो और देवताओं का पूजन करते हुए हविरन्न से उन्हें तृप्त करो ।।

टिप्पणी-- अधिरथं--रथ के द्वारा।

सायण--।द्र०भा०। "अधिरथं- रथस्याध्युपरि वर्तमानं"।, वेङ्कट--।द्र०भा०।"अधिरथं"/ "रथके द्वारा"।, विल्सन--।द्र०अं०। " chariot-loads /"रथ के भार द्वारा।, ग्रिफिथ--।द्र०अं०।" lade wagons "/"रथ के भार द्वारा।"।,--ग्रासमैन--द्र०अं०। " wagenlasten "/"रथ के भार द्वारा।"।, गेल्डनर--।द्र०अं०। " einen-wagen "/"रथ के भार द्वारा।"।, इस प्रकार इसका अर्थ "रथ के भार द्वारा।" उचित है ।।

सहस्त्रं-- हजारों की संख्या में।

सायण-- ।द्र०भा०। "सहस्त्र संख्याकं धनं।"/"हजारों की संख्या में धन।।, वेङ्कट-- द्र०भा०।"सहस्त्रस्य"/"हजारों की संख्या में।"

विल्सन--।पृ०सं०।" thousand"/हजारों (की संख्या में)।, ग्रिफिथ-- ।पृ०सं०। " thousand "/"हजारों की (संख्या में) ।, ग्रासमैन-- ।द पृ०सं०। " thousand "।"हजारों"।, गेल्डनर--।द पृ०सं०। " tausend /thousand /हजारों "।,

इस प्रकार इसका अर्थ "हजारों की संख्या में" उचित है ।।

निषीद-- बैठो;

सायण--।पृ०भा०।"निषण्णो भव"। "बैठो"।, वेङ्कट- ।पृ०भा०। "निषीद/"बैठो"।, विल्सन--।पृ०सं०। " sit-down "बैठ जाओ"।, ग्रिफिथ--।पृ०सं०। " sit /"बैठो।, ग्रासमैन-- ।द पृ०सं०। " setze / sit /"बैठो"।, गेल्डनर--द पृ०सं०। " Trilt "/" sit "/"बैठो"।, गेल्डनर--।द०पृ०टि०।" इस प्रकार इसका अर्थ "बैठो" उचित है ।।

यजस्व-- पूजन करते हुए;

सायण--।पृ०भा०।"यजस्व- यष्टव्यान्"/पूजन करते हुए"।, वेङ्कट-- ।पृ०भा०।"यजस्व"/ "पूजन करते हुए"।, विल्सन- ।पृ०सं०। " worship/ पूजा करना" ।, ग्रिफिथ--।पृ०सं०। " worship duly "/पूजन करते हुए।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पूजन करते हुए" उचित है ।।

सपर्य-- तृप्त करो;

सायण --।पृ०भा०।"सपर्य परिचर। "तृप्तकरो", वेङ्कट--।पृ०भा०। "परिचय" /"तृप्तकरो ।, विल्सन--।पृ०सं०। " sacrifice "/"त्याग किया", ग्रिफिथ-- ।पृ०सं०। " serve "/"तृप्त किया"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "तृप्त करो" उचित है ।।

आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।

स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ।।

अन्वय— आर्ष्टिषेण देवापिः ऋषिः देव सुमतिं चिकित्वान् होत्रं निषीदन् ।

स उत्तरस्मात् अधरम् समुद्रम् अभिदिव्याः वर्ष्याः अपः असृजत् ।।

अनुवाद— देवापि ऋषि ऋष्टिषेण के पुत्र हैं। उन्होंने तुम्हारे लिए श्रेष्ठ स्तुति करने का विचार कर यज्ञ किया। तब वे अन्तरिक्ष रूप समुद्र से पार्थिव समुद्र में वर्षा का जल लाये ।।

टिप्पणी— आर्ष्टिषेण— ऋष्टिषेण का पुत्र ; यास्क— (निरुक्त) "ऋष्टिषेणस्य, व्यक्ति का पुत्रः (ऋष्टिसेन् + अण्)। अर्थात ऋष्टि (भाले) से युक्त सेना वाले व्यक्ति का पुत्र (ऋष्टियुक्तासेनायस्यतस्य)। पाणिनि—(व्याकरण) "ऋष्टि" की ऋ की वृद्धि होने के पश्चात् "आर्ष्टि" बनना स्वाभाविक है। किन्तु (यास्क) ने "इषितसेनस्यवा" कहकर इसका जो दूसरा अर्थ किया है वह अर्थ की दृष्टि से (इषिता गति शीलासेनायस्य तस्य—इस अर्थ) तो कदाचित ठीक हो सकता है, किन्तु "इषितसेन" का पुत्र "आर्ष्टिषेण" किस व्याकरण से होगा, यह समझ में नहीं आता। व्याख्याकारों ने "इषित" शब्द को "इष्" धातु से निष्पन्न भाववाचक शब्द माना है। परन्तु ऐसा शब्द तो "ऋष्टि" ही हो सकता है "इषित" नहीं । यदि "इषित" को "ऋष्टि" का विकसित (ऋष्टि) ऋषित इषित) रूप मानलिया, जो कि स्वाभाविक है, उक्त निर्वचन सम्भव है। सायण—(ऋ0भा0) "ऋष्टिषेणस्य पुत्र"/ "ऋष्टिषेण का पुत्र"। वेंकटमाधव—(ऋ0भा0) "ऋष्टिषेणस्य"/"ऋष्टिषेण का पुत्र"।

विल्सन--।ऋ०अं०। " the son of Rishteshena "/"ऋष्टिषेण का पुत्र"।, Rishteshena son

ग्रिफिथ-- ।ऋ०अं०। "rischtischena's sohn/ "/"ऋष्टिषेण का पुत्र"।,

ग्रासमैन--।दऋ०अं०। " Rischtisxhena's/Rishteshena sob /

"ऋष्टिषेण का पुत्र", गेल्डनर--।द ऋ०अं०। "Rstisena Sohn /Rishteshe-

na son /"ऋष्टिषेण का पुत्र" ।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "ऋष्टिषेण का पुत्र" उचित है ।।

ऋषि -- ऋषि,

औपमन्यव ।निरुक्त। "पहला निर्वचन दर्शन अर्थ वाली ऋष धातु से किया गया है ।- ऋष्यते ऽनेनेति, ऋषिः- अर्थात जो अपनी कान्ति दृष्टि से सभी भूत , भविष्यत् आदि का साक्षात्कार करता है, वह ऋषि कहलाता है। फलतः ऋषि ऋष् इ ऋषि । यह निर्वचन किया गया है इसके अनुसार ऋषि ने स्तोत्रों ।सूक्तों। को देखा, इसलिए वह ऋषि है। ।1। दूसरे निर्वचन में गत्यर्थक ऋष् धातु से इसकी निष्पत्ति का संकेत है । तपस्या करने वाले ऋषियों के पास स्वयम्भू वेद स्वयं आया। ।अभ्यानर्षत्। इसलिए वे ऋषि कहलाये । फलतः "ऋष्यते प्राप्यतेऽनेनेति ऋषि -- ऋष ।गत्यर्थक।+ इ ऋषि । सायण--।ऋ०भा०।"ऋषिः",- वेंकट--।ऋ०भा०।"ऋषिः", विल्सन-- ।ऋ०अं०। " Rishi (Devapi) "/"ऋषि"।, ग्रिफिथ--।ऋ०अं०। Rishi, "ऋषि" ।, ग्रासमैन-- ।ऋ०अं०।" Rischi "/"ऋषि"।, गेल्डनर-- ।द ऋ०अं०। " Rsi/Rishi /"ऋषि"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "ऋषि" उचित है ।।

अधर — नीचे स्थित;

यास्क — (निरुक्त) "इसका निर्वचन "अधस्" और रा के योग से माना गया है अर्थात जो नीचे की ओर जाये, वह "अधर है— न अधोराधीति "अधर:" फलत: —अधस्+ रा+ अधर । इसी प्रसंग में "नीचे" अर्थ वाले " अधस्" के निर्वचन का भी संकेत किया है । यास्क के अनुसार " न धावती-त्यध:" अर्थात् जो (ऊपर की ओर) न दौड़े, न जाये, नीचे ही पड़ा रहे- वह "अधस्" है— अ (24) + धाव् + असुन् अधाव् अधस् अर्थात् अधरम् । सायण— (ऋ०भा०) "अधर—अधोवर्तमानं"/ "नीचे की ओर स्थित"), — वेङ्कट— (ऋ०भा०) "अधरम्"), विल्सन— (ऋ०अं०)" towards the lower/ "नीचे की ओर", ग्रिफिथ—(ऋ०अं०) " down /"नीचे की ओर"),

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "नीचे स्थित" उचित है ।।

उत्तर — ऊपर उठा हुआ",

यास्क—(निरुक्त) "इस का निर्वचन "उद्गत" और तर (तप्) प्रत्यय के संयोग से माना है । जो अत्यन्त उद्गत (ऊपर उठा हुआ) हो, वह "उत्तर" है। फलत: "उद्गत + तर उद् + तर उत्तर।" सायण—(ऋ०भा०) "उपरिवर्तमाना"/"ऊपर की ओर स्थित",—वेङ्कट—(ऋ०भा०) "उत्तर", विल्सन—(ऋ०अं०) " upper"/"ऊपर-, ग्रिफिथ—(ऋ०अं०) ("Most lofty"/ "सबसे ऊँचा ",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "ऊपर उठा हुआ" उचित है ।।

(239)

अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।

ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ।।

अन्वय— अस्मिन् समुद्रे अधि उत्तरस्मिन् आप: देवेभि: निवृता: अतिष्ठन्।

ता: आर्ष्टिषेणेन् देवापिना सृष्टा: प्रेषिता: मृक्षिणीषु अद्रवन् ।।

अनुवाद— देवताओं ने अंतरिक्ष को आच्छादित किया है, देवापि ने इस जल को प्रेरित किया, उसमय उज्ज्वल पृथिवी पर" उचित है।।

अद्रवन्— प्रवाहित होने लगा,

सायण— ।सा0भा0। "अद्रवन् प्रवहन्ति", वेङ्कट— ।वे0भा0। प्रस्रवन्ति" /"प्रवाहित होने लगा", विल्सन— ।वि0अं0। " sent forth"प्रवाहित हुआ", ग्रिफिथ— ।ग्रि0अं0।" stood "प्रवाहित हुआ"।, इस प्रकार इसका अर्थ "प्रवाहित होने लगा" उचित है ।।

देवेभि:— देवताओं के द्वारा,

सायण— ।सा0भा0। "देवेभि:", वेङ्कट— ।वे0भा0। "देवै: निरुद्धा:"।, विल्सन— ।वि0अं0।" By the Gods"/ "देवताओं के द्वारा", ग्रिफिथ— ।ग्रि0अं0।" by deities obstrureted "/-"देवताओं के द्वारा ", ग्रासमैन -।ग्रा0जर0।" von Gottern /" By Gods । "देवताओं के द्वारा", गेल्डनर - ।गे0जर0। " von Gottern" / By Gods /"देवताओं के द्वारा",

इस प्रकार इसका अर्थ"देवताओं के द्वारा "उचित है ।।

यद्देवापि शतन्वेपुरोहितोहोत्रायवृत: कृपयन्नदीधेत् ।

देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत ।।

अन्वय— यद् देवापि: शतन्वे पुरोहित: होत्राय वृत: देवश्रुतम् । वृष्टिवनिं अदीधेत् रराण: बृहस्पति: अस्मै वाचम् अयच्छत् ।।

अनुवाद— जब शान्तनु के पुरोहित देवापि यज्ञ करने के लिए तैयार हुये तब उन्होंने जल का उत्पादन करने वाले देवताओं का स्तोत्र रचा, जिससे प्रसन्न होकर बृहस्पति ने उनके मन में श्रेष्ठस्तोत्ररूप वाक्यों को भर दिया ।।

पुरोहित— पुजारी (पुरोहित)

यास्क (निरुक्त) "चूंकि लोग यज्ञ अथवा युद्ध आदि में इस (पुरोहित) को आगे (पुर:) रखते हैं, इसलिए इसे "पुरोहित" कहा जाता है, स्पष्ट है इसका निर्वचन "पुरस् + धा + क्त पुरोहित है । सायण— (ऋ०भा०) "पुरोहित:", वेङ्कट—(ऋ०भा०) "पुरोहित", विल्सन— (ऋ०अ०) " Purohit "/"पुरोहित", ग्रिफिथ— (ऋ०अ०) " priest /"पुरोहित",- ग्रासमैन—(द ऋ०अ०) " Priester"/ "पुरोहित", गेल्डनर—(द ऋ०अ०) " Purohita "/"पुरोहित",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "पुजारी (पुरोहित)" उचित है ।।

देवश्रुत्— देवताओं का स्तोत्र

यास्क—(निरुक्त) " इस का निर्वचन" देव+ श्रु + क्त (क्विप्)" तथा देवश्रुतम् देव+ श्रु + क" स्पष्ट है । इनकी व्याख्या जो की है उन्हें पुलिंग विशेषण मानते हैं। परन्तु ये किसको विशिष्ट करते हैं, यह उन्होंने

स्पष्ट नहीं किया । प्रसङ्ग के अनुसार ये दोनों ही "वाचन" के विशेषण प्रतीत होते हैं और फलतः लिङ्ग विपर्यय के कारण पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त है । सायण— ।ऋ०भा०। "देवा एवं शृण्वन्तीति देवश्रुतं" किया गया है । वेङ्कट— ।ऋ०भा०। "देवा एनं शृण्वन्तीति", विल्सन—।ऋ०अं०। "Gods listen "/ "देवताओं के द्वारा सुना" ग्रासमैन—।द ऋ०अं०। " Gott-erhorte , गेल्डनर—।द ऋ०अं०। " Gott-erhorte ".

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "देवताओं का स्तोत्र" उचित है ।।

रराणः— प्रसन्न होकर,

यास्क ।निरुक्त। "रा" धातु जिसका अर्थ दान देना है का अभ्यस्त या दुहरा रूप माना जाता है स्पष्ट है, उनका संकेत रा+ आन रराण इसका निर्वचन भी है । सायण— ।ऋ०भा०। "रममाणः" ।" प्रसन्न होकर", वेङ्कट— "रममाणः" /"प्रसन्न होकर", विल्सन—।ऋ०अं०। " solicited /"विनय सहित प्रार्थना करता" , ग्रिफिथ—।ऋ०अं०।" pleased "/"प्रसन्न होकर", ग्रासमैन—।द ऋ०अं०। "lied गेल्डनर—।द ऋ०अं०।" verlieh ।,

इस प्रकार इसका अर्थ "प्रसन्न होकर" उचित है ।।

शन्तनु— शन्तनुः

यास्क— निरुक्त।"।1। हे तनु ।शरीर। तेरा शम् ।कल्याण हो।, ।11। तनु ।शरीर। के द्वारा तेरा कल्याण हो, स्पष्ट है दोनों अर्थों में इसका निर्वचन "शम्+तनु, शन्तनु" होगा ।। विल्सन—।ऋ०अं०। " SANTANO /"शान्तनु", ग्रिफिथ—।ऋ०अं०। " Santanu "/"शन्तनु", ग्रासमैन— ।द ऋ०अं०। "santanu/"शन्तनु".

इस प्रकार इसका अर्थ "शान्तनु" ही उचित है ।।

यं त्वा देवापि: शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्य: समीधे ।

विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमान: प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ।।

अन्वय--[हे] अग्ने, यं त्वा शुशुचान: मनुष्य: आर्ष्टिषेण: देवापि: समीधे विश्वेभि: देवै: अनुमद्यमान: पर्जन्यं वृष्टिमन्तं प्रईरय ।।

अनुवाद-- हे अग्ने । [ऋष्टिषेण पुत्र]देवापि ने तुम्हें प्रज्वलित किया है, अत: तुम देवताओं का सहयोग प्राप्त करके जलवृष्टि वाले मेघ को प्रेरित करो ।

टिप्पणी-- शुशुचान-- प्रज्वलित किया है।

सायण--।ऋ०भा०। "स्तोत्रेण ज्वलन", वेङ्कट-- ।ऋ०भा०। "ज्वलन्"/ "प्रज्वलित किया है", विल्सन -- ।ऋ०अ०। " kindled "/"प्रज्वलित किया है"।, ग्रिफिथ-- ।ऋ०अ०। "kindled " /"प्रज्वलित किया है"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ " प्रज्वलित किया है" उचित है ।।

विश्वेभि:-- समस्त,

सायण--।ऋ०भा०। "विश्वेभि: सर्वै", /"सभी", वेङ्कट--।ऋ०भा०। "विश्वै:" /"सभी", विल्सन--।ऋ०अ०। " all "/"समस्त", ग्रिफिथ-- ।ऋ०अ०। " all "/"समस्त", ग्रासमैन-- ।द ऋ०अ०। " allen "/"all "समस्त",

इस प्रकार इसका अर्थ " समस्त" उचित है ।।

वृष्टिमन्तं -- जल वृष्टि वाले,

सायण-- ।ऋ०भा०। "वृष्टिमन्तम्--वर्षणवन्तं"/"जलवृष्टिवाले",

वेङ्कट-- (ऋ०भा०) "वृष्टिमन्तम"/" जलवृष्टि वाले"), विल्सन--
(ऋ०अ०)" Rain laden "/"जलवृष्टि वाले, ग्रिफिथ-- (ऋ०अ०) " sender
of the Rain "/ "जल को भेजने वाले",

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "जल वृष्टि वाले" उचित है ।।

प्रईरय-- प्रेरित करो",

सायण--(ऋ०भा०)"प्रईरय-- गमय"/"प्रेरित करो", वेङ्कट--
(ऋ०भा०)"प्रईरय"/"प्रेरित करो"), विल्सन--(ऋ०अ०) " send down ",
प्रेरित करो", ग्रिफिथ--(ऋ०अ०) " urge "/"प्रेरित करो");

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "प्रेरित करो" उचित है।।

त्वां पूर्वऋषयो गीर्भिरायन् त्वामध्वरेषु पुरुहूतविश्वे ।

सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ।।

अन्वय-- (हे अग्ने) प्राचीन ऋषियों ने स्तुति करते हुए तुम्हारे पास आगमन
किया। तुम बहुतों द्वारा बुलाये गये हो, अतः वर्तमानकालीन यजमान अपने
यज्ञ में स्तुतियों सहित तुम्हारी ओर गमन करते हैं। शान्तनु राजा ने जो
दक्षिणा दी है, उसमें रथ सहित सहस्रों पदार्थ थे। हे अग्ने, तुम रोहिताश्व
भी कहाते हो, हमारे यज्ञ में आगमन करो ।।

टिप्पणी-- गीर्भि-- स्तुतियों सहित,

सायण-- (ऋ०भा०)"स्तुतिभिः"/ "स्तुतियों के द्वारा", वेङ्कट--
(ऋ०भा०)"स्तुतिभिः") स्तुतियों के द्वारा", विल्सन--(ऋ०अ०)"

" with hymns /" स्तुतियों के साथ", ग्रिफिथ--।ु०सं०। " with their songs "/" अपनी स्तुतियों के सहित"।;

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "स्तुतियों सहित" उचित है ।।

रोहिदश्व-- रोहिताश्व; ृअग्निृ;

सायण-- ।ु०भा०। "रोहिदश्व", वेङ्कट--।ु०भा०।", विल्सन --।ु०सं०। " Lord of red horses /"लाल घोड़ों के स्वामी अर्थात् अग्नि", ग्रिफिथ--।ु०सं०।" Lord of red horses /"लाल घोड़ों के स्वामी"/ अर्थात् "अग्नि"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "रोहिताश्व ृअग्निृ उचित है ।।

आयन्--आगमन किया;

सायण--।ु०भा०।"आगच्छन्"/"आगमन किया"।, वेङ्कट-- ।ु०भा०। "आयन्"/"आगमन किया"।, विल्सन--।ु०सं०। " approached "/ "पहुँचे",-ग्रिफिथ--।ु०सं०। " approached "/"पहुँचे"।,

इस प्रकार इसका अर्थ "आगमन किया" उचित है ।।

अध्वरेषु-- यज्ञ में;

सायण--।ु०भा०।" यज्ञेषु"/"यज्ञ में", वेङ्कट-- ।ु०भा०।"यज्ञेषु"/ यज्ञ में" विल्सन--।ु०सं०। " at sacrifices /"यज्ञ में"/, ग्रिफिथ--

^। " at sacrifices"/ "यज्ञ में"

^र इस शब्द का अर्थ "यज्ञ में" उचित है ।।

एतान्यग्नेनवतिर्नवत्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।

तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वीर्दिवोनोवृष्टिमिषितोरिरीहि ।।

अन्वय— अग्ने! अधिरथाः नवतिः नव एतानि सहस्रा त्वे आहुतानि, तेभिः पूर्वीःतन्वः वर्धस्व नः दिवः वृष्टिम् इषितः रिरीहि ।।

अनुवाद— हे अग्ने! रथों सहितनिन्यानवे हजार पदार्थ प्रदान किये गये हैं। तुम उनके द्वारा प्रसन्न होकर हमारे कल्याणके निमित्त आकाश से जल वृष्टि करो ।

टिप्पणी— नवतिर्नव— निन्यानवे;

सायण—।ऋ0भा0।" नवतिः नव च"/" निन्यानवे", वेङ्कट—।ऋ0भा0। "नवतिः नव च"/"निन्यानवे", विल्सन—।ऋ0अं0।" Ninety & nine/"निन्यानवे।, ग्रिफिथ—।ऋ0अं0। " nine and ninety"/"निन्यानवे" ग्रासमैन—।द ऋ0अं0। "neunundneun /" निन्यानवे हजार।"

इस प्रकार इसका अर्थ "निन्यानवे" उचित है ।।

आहुतानि— प्रदान किये गये हैं;

सायण— ।ऋ0भा0। "आहुतानिसमर्पितानीत्यर्थः"/"समर्पित किये गये हैं; वेंकट— ।ऋ0भा0। "आहुतानि"/प्रदानकिये गये हैं"।, विल्सन—।ऋ0अं0।" have been offered "/"प्रदान किये गये हैं" ।, ग्रिफिथ—।ऋ0अं0।" have been offered"/" प्रदान किये गये हैं"।,

इस प्रकार इसका अर्थ" प्रदान किये गये हैं" उचित है ।।

रिरीहि— वृष्टि करो;

सायण--।ऋ0भा0।"पूरय"/ "पूरित करो", वेङ्कट-- ।ऋ0भा0। "प्रेषित"/"भेजो", विल्सन-- ।ऋ0अं0। "sendus "/"भेजो", ग्रिफिथ-- ।ऋ0अं0।" sendus /"भेजो"।, इस प्रकार इसका अर्थ "पूरित करो" उचित है।

वर्धय-- आगे बढ़ाते हुए;

सायण-- ।ऋ0भा0।"वर्धय"/"आगे बढ़ाते हुए" वेङ्कट-- ।ऋ0भा0। "वर्धयन्"/" आगे बढ़ाते हुए" विल्सन--।ऋ0अं0।" nourish ", ग्रिफिथ-- ।ऋ0अं0।" Increase"/"आगे बढ़ाते हुए",

इस प्रकार इसशब्द का अर्थ "आगे बढ़ाते हुए" उचित है ।।

दिव:-- आकाश से ;

सायण-- ।ऋ0भा0। "दिव: द्युलोकात्"/"आकाश से," वेङ्कट-- ।ऋ0भा0। "दिव:"/ आकाश से; विल्सन--।ऋ0अं0।" from heaven "/ आकाश से," ग्रिफिथ-- ।ऋ0अं0।" from heaven "/ " आकाश से"।,

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ"आकाश से" उचित है ।।

एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम् ।

विद्वान् पथ ऋतुशो देवयानानप्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ।।

अन्वय-- अग्ने । एतानि नवतिं सहस्राणि वृष्णे इन्द्राय भागम् सं प्र यच्छ । देवयानान् पथ: विद्वान् ऋतुश: औलानम् अपि देवेषु धेहि ।।

अनुवाद-- हे अग्ने, नब्बे हजार आहुतियों द्वारा इन्द्र का भाग उन्हें प्रदान करो । तुम सब देवताओं के ज्ञाता हो । अत: शान्तनु को समय आने पर देवताओं के मध्य अधिष्ठित करना ।।

टिप्पणी-- प्रयच्छ-- प्रदान करो;

सायण-- ।ऋ०भा०। "तत्त्रीत्यष्टं पिन्ध प्रदेहि" वेङ्कट--।ऋ०भा०। "प्रयच्छ"/ "प्रदान करो", विल्सन--।ऋ०अ०। "Give " /"प्रदान करो", ग्रिफिथ-- ।ऋ०अ०। "Give "/"प्रदान करो", ग्रासमैन--।द ऋ०अ०। " diese ; ग्रासनर--। द ऋ०अ०। "diese ;।

इस प्रकार इसका अर्थ "प्रदान करो" उचित है ।।

वृष्णे-- आहुतियों द्वारा ;

सायण--।ऋ०भा०। "वर्धित्रि"/ "आहुतियों द्वारा," वेङ्कट--।ऋ०भा०। "वर्धित्र"/ "आहुतियों द्वारा," विल्सन--।ऋ०अ०। " showers", ग्रिफिथ-- Bull ।ऋ०अ०। " "/"आहुतियों द्वारा,"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "आहुतियों द्वारा " उचित है ।।

देवेषु-- देवताओं में, देव सप्तमी बहुवचन, सायण--।ऋ०भा०। "देवेषु--मध्ये" /"देवताओं के मध्य", वेङ्कट--।ऋ०भा०। "देवेषु"/"देवताओं में," विल्सन-- ।ऋ०अ०।" amongst the gods /"देवताओं के बीच में", ग्रिफिथ - ।ऋ०अ०। " on a mighty"/"देवताओं में,"

इस प्रकार इसका अर्थ "देवताओं में" उचित है ।।

पथः-- मार्ग;

सायण--।ऋ०भा०। "मार्गान्"/"मार्ग, वेङ्कट--।ऋ०भा०।"मार्गान्" "रास्ता", विल्सन--।ऋ०अ०।" Paths "/"रास्ता".

इस प्रकार इसका अर्थ "मार्ग" उचित है ।।

अ[illegible]यमुक्तीहि दुर्गहाणीहास्मरताभिषेध ।
अस्मास्यृयाभुक्षीविवीनोऽस्मा भुवानुरनः कृषेह ।।

अन्वय-- अग्ने । दुर्गहा वि बाधस्व, अमीवाः अपसेध । रक्षांसि अप अस्मात् समुद्रात् बृहतः दिवः अपान् भूमानं इव उप सृज ।।

अनुवाद-- हे अग्ने । शत्रुओं के दृढ़नगरों को तोड़ डालो । रोग रूप व्याधियों को भगाओ । महान अन्तरिक्ष से तुम अतिवृष्टि जल को लेकर आगमन करो ।।

टिप्पणी-- दुर्गहा-- दृढ़ नगरों को;

सायण--।ऋ०भा०। "दुर्गहाणि"/दृढ़ नगरों को; विल्सन--।ऋ०अं०। " strong holds "/"दृढ़ नगरों को;" ग्रिफिथ-- ।ऋ०अं०।" foes "/ "दृढ़ नगरों को;"

इस प्रकार इसका अर्थ "दृढ़नगरों को" उचित है ।।

बाधस्व-- तोड़डालो।,

सायण--।ऋ०भा०।"बाधस्व"/"तोड़ डालो", वेङ्कट--।ऋ०भा०। "बाधस्व"/"तोड़डालो;" विल्सन-- ।ऋ०अं०। "Demolish "/"नष्ट कर दो, ग्रिफिथ--।ऋ०अं०।" drive afar"/"तोड़ डालो;"

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "तोड़ डालो" उचित है ।।

समुद्रात्-- समुद्र से;

सायण-- ।ऋ०भा०। "समुद्रस्थानात्"/"समुद्र से;" वेंकट -- ।ऋ०भा०। "समुद्रात्" /"समुद्र से", विल्सन-- ।ऋ०अं०। " from this ocean " इस समुद्र से;" ग्रिफिथ--।ऋ०अं०। " from this air "/"इस समुद्र से;" ।

इस प्रकार इस शब्द का अर्थ "समुद्र से" उचित है ।

सरमापणि [10-108]

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः ।

कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत् कथं रसाया अतरः पयांसि ॥ 1 ॥

अन्वय - किम् इच्छन्ती सरमा प्र इदम् आनट् दूरे हि अध्वा जगुरिः पराचैः का अस्मेऽहितिः का परितक्म्या आसीत् कथम् रसायाः अतरः पयांसि ॥

अनुवाद- [पणियों ने सरमा को देखकर कहा] क्या चाहती हुई सरमा [इन्द्र की दूती] इधर [हमारी तरफ] आ रही है, क्योंकि मार्ग बहुत दूर, उलझा हुआ तथा गमनागमन से रहित था, हममें तुम्हारा कौन सा स्वार्थ निहित है, तुम्हारी यात्रा कैसी थी, कैसे नदी रसा को पार किया ॥

टिप्पणी - आनट्- आयी है: एक वचन " आङ्‌पूर्वो नशि व्याप्तिकर्मा, तस्य लुङि " मन्त्रे घस्" [पा० 2-4-80] इत्यादिना च्लेर्लुक् "छन्दस्यपि दृश्यते [पा० 6-4-73] इत्याडागमः कदाचिद्व्यनाग्ममपि ॥ सायण ॥, विल्सन- [अ०] " has come " [आयी है], ग्रिफिथ- [अ०] " hath brought " [आयी गई है], ग्रासमैन- [जे० अ०] " was gesandt " [भेजी गई] गेल्डनर [जे० अ०] " gekommen " [प्रविष्ठ], गेल्डनर- [जे० अ०] " erschienen " [भेजी गई है]। अतएव इस शब्द का अर्थ "आयी है" उचित है ।

अतएव इसका अर्थ " यात्रा" उचित है ।

रसाया: — रसा नामक नदी को; शब्दकल्पद्रुम: "रस शब्दे" (भ्वा0प0) इत्यस्मात्सर्वधातुभ्योऽटाप् रसतीति रसा नदी।

सायण- "रसाया: शब्दायमानाया अन्तरिक्ष नद्या योजनशतविस्तीर्णाया यानि उदकानि अतर: तीर्णवत्यसि" ।, वेंकट -(ऋ0) "रसाया:" विल्सन- (ऋ0भा0) " of RASA " रसा को ग्रिफिथ - (ऋ0) " Rasa's " रसा को "। ग्रासमैन -(ऋ0) " Reise " रसा "।, गेल्डनर -(ऋ0) " der Rasa " रसा को । ग्रिफिथ ने इसको ऐसी नदी बताया है कि जो वातावरण और पृथ्वी के चारों ओर बहती है । अन्यत्र " It tobe a river of Punjab, probably an affluent of sindhu. (The new vedic selection (103-1 पृ0 173) । दुर्गाचार्य- " सार्धयोजनविस्तारायाः"। (नि0भा0 भाष्ये पृ0 480) ।, अतएव इसका अर्थ "रसा नामक नदी को" उचित है ।

जगुरि:— उन्नत हुआ,

निरुक्तमेव सायण- (ऋ0भा0) "जगुरि: उद्गूर्णः, महता प्रयत्नेनापि गन्तुं शक्यत् इत्यर्थः । गृ निगरणे (तुदादि) आदृगमहन (पा0 3-2-171) इत्यादिनाकिन्प्रत्ययोलिट्वद्भावादित्यम् "बहुलं छन्दसि (पा0 7-1-103) इत्युत्वम् स्वरतं च तादृशोऽप्यपूर्व्या दूरे हि विप्रकृष्टः जगु । यहा। वेंकट—"अप्रगम्यः, विल्सन- (ऋ0भा0) " difficult to be traversed " पार पाने में अनुपयुक्त",

Auftrag
अस्माकं नियतम्।, ग्रासमैन- {दo ग्रo} "was ist dein ∠ " {तुम्हारा}
कौन सा स्वार्थ निहित है}, गे॰ड॰-- " was bedeutet die sending
zu uns./. {उसमें तुम्हारा कौन सा स्वार्थ है ?

इस प्रकार इसका "इनमें {तुम्हारा} कौन सा स्वार्थ निहित है ?"
अर्थ उचित है ।

इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि, मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः ।
अतिष्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि ।।

अन्वय- {हे, पणयः} इन्द्रस्य दूतीः {तेनत्वम्} इषिता {अहं} वः महः
निधीन् इच्छन्ती चरामि । अतिष्कदः - भियसा तत् नः आवत् । तथा
रसायाः पयांसि -अतारम् ।।

अनुवाद- {हे पणियों !} इन्द्र की दूती {उसके द्वारा} भेजी गई {मैं} तुम
लोगों के प्रभूत धन की इच्छा करती हुई घूम रही हूँ । {मेरे}
कूदने के भय से उस {रसा के जल} ने मेरी सहायता की, इस प्रकार
रसा के जल को मैंने पार किया।

टिप्पणी- इषिता-- भेजीगई, इष " भेजना -अर्थ में" + क्त प्रत्यय, स्त्रीलिङ्ग
एकवचन, सायण -"प्रेषिता", विल्सन - "appointed = "नियुक्त"
"नियुक्त" या "प्रयुक्त" । ग्रिफिथ - "appointed = "नियुक्त"।
गे॰ड॰ व ग्रासमैन -" komm "भेजी गई" वेङ्कट -- "प्रेषिताः
भेजी गई। स्कन्दस्वामी 396 पेज "इषितः प्रेषितः अतिष्टो वा

254)

(अध्येषितः) वोवुत्थैस्पत्यास्माकम् ।

इस प्रकार इसका अर्थ "भेजी गई" उचित है ।

वरामि- विवरण करती हूँ, वर धातु "विवरणे" के अर्थ में, लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन । निरुक्तभाष्ये पेज 384 - " सर्वाणि स्थानान्यनुसंचरत" इत्यर्थः । भाष्यकारीयस्तेनात्मनेदं वरतेस्तृतीया पुरुषादपि दर्शितः ।।, विल्सन -ऋ0अ0। " come " "आयी हूँ ।, ग्रिफिथ - ऋ0। " come " "आती हूँ । ग्रासमैन- ऋ0। " komm " come " आती हूँ, गेल्डनर - ऋ0। " komm " come " आती हूँ । सायणभाष्यकार- ऋ0अ0। "आगच्छति" ।।

इस प्रकार इसका "विवरण करती हूँ" अर्थ उचित है ।।

अतिष्कदः भियसा- कूद कर पार जाने के भय से; ABL. infinitive in अस् from स्कद " to leap' governed by the prposition अति;

इसका निर्माण (इसकी रचना) "भियसा" शब्द के साथ होनी चाहिए ।

सायण- ऋ0। "अतिष्कदः स्कन्दगतिशोषणयोः । भावेक्विप् । अतिष्कन्दनादति क्रमणाज्जातेन भियसा भयेन"। विल्सन - ऋ0अ0। " through the fear of being crossed the(water), कूद कर पार जाने के भय से ", ग्रिफिथ- ऋ0। " from the fear of crossing "पार कर जाने के भय से । ग्रासमैन--ऋ0। " fordernd aure grosseh "पार कर जाने के भय से । गेल्डनर - ऋ0। " vor dem spring-schatzen.. "पार कर जाने के भय से ", गेल्डनर -ऋ0। " an half ele uns [illegible] " पार कर जाने के भय [illegible] ",

जोहेन वर्ग- " afraid of the leap " कूदने के भय से ।

इस प्रकार "कूदकर पार करने के भय से " अर्थ उचित है ।

आविद् -- रक्षा की; अब "रक्षा" के अर्थ में; सायण- ।ऋ०सं० । " अरक्षद्" "रक्षा की"; विल्सन- ।ऋ०ऋ० । " helped " (सहायता किया",

ग्रिफिथ-- ।ऋ० । " hath preserved ", लुडविग -- " made a way for me "" मेरे लिए रास्ता बनाया", पिशेल -- " made a way for me " मेरे लिए मार्ग बनाया" ।,

इस प्रकार इसका "रक्षा की" अर्थ उचित है ।

तद्-- उसने (नदीजल ने); सायण-।ऋ०सं० । नदीजल" । वि० - ।ऋ०ऋ०सं० ।

" The " "उसनेअर्थात् (नदीजल ने) ; ग्रिफिथ - ।ऋ० । " This "

इसने"।, गेल्डनर-- As an adverb of time supplying understood as the subject ।, पीटर्सन --।ऋ० । "यह " That " कर्ता के रूप में on प्रयुक्त किया है । और इसे Parenthetical conjuncti/ माना है ।

इस प्रकार इसका अर्थ "उसने" उचित है ।

अतरम् -- पार किया;

सायण- ।ऋ०सं० । "तीर्णवत्यस्मि" "तैर कर पार किया", विल्सन- ।ऋ०ऋ०सं० । " passed over " पार कर लिया " ।, ग्रिफिथ-- ।ऋ० ऋ० । " have made my way " मैंने रास्ता बना लिया"

अतएव इसका अर्थ "पार किया" उचित है ।

कीदृङ्ङिन्द्रः सरमे का दृशीका, यस्येदं दूतीरसरः पराकात् ।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति ॥

अन्वय — (हे) सरमे, कीदृङ् इन्द्रः, का दृशीका, यस्य दूती (त्वम्) पराकात् इदम् असरः । आ च गच्छात् (वयम्) एनम् मित्रं दधाम । अथ नः गवां गोपतिः भवाति ।

अनुवाद— (हे) सरमा (!) इन्द्र कैसा है, उसकी दृष्टि कैसी है, जिसकी दूती (तुम) दूर से यहाँ आई हो ? अगर वह आवे, हम उसे मित्र बनायेंगे, तब वह हमारी गायों का संरक्षक होगा।

टिप्पणी - गोपति - गायों का स्वामी, गवाम् संरक्षयति इति गोपतिः, तत्पुरुष समास, (षष्ठ्यार्थवर्त्यै) (पा० VI 2.18)। गौवों का संरक्षक बनाने के अर्थ में "इन्द्र" के लिए "गोपतिः" शब्द का प्रयोग हुआ है । सायण- (भा०) "गवां स्वामी", वेङ्कट - (भा०) "गोपतिः", विल्सन- (ऋ०भा०सं०) " lord of our cattle हमारे पशु का स्वामी" । ग्रिफिथ— (भा०) " herdsman of our cattle "हमारे पशुओं का प्रमुख"। (T.V.S.>-108-3) page 176—" Tatpurusa compd generally accents the second member, but when the second member is the word

" पति" it accents the first —" इन्द्र से मित्रता का इच्छुक और अपने गायों का संरक्षक बनाने की कामना करता है ।

उचित है।

भवाति-- होगा भू धातु होने के अर्थ में, subju उत्तम पुरुष एकवचन;

सायण-- ।ऋ०सं०। "भवतु"। वेङ्कट- ।ऋ०सं०। "भविष्यति"।, विल्सन

-।दे०ऋ०। " let be "होगा" । ग्रिफिथ -- ।ऋ०। " shall

be made "बनेगा"

अतएव इसका अर्थ होगा उचित है ।

पराकात् -- अत्यन्त दूर से;

सायण--" अतिदूरात्" ।, वेङ्कट--।ऋ०। "दूरात्" ।, विल्सन-

।दे०ऋ०सं०। " from afar "बहुत दूर से" ।; ग्रिफिथ --।ऋ०सं०।

" from afar " "बहुत दूर से " ।; आल्मेन -- ।ऋ०सं०।

" Fern herliefst "अत्यन्त दूर से " ।; गेल्डनर - ।ऋ०।

" fernе hierher " बहुत दूर से ।;

इस प्रकार"अत्यन्त दूर से" अर्थ उचित है।

नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स, यस्येदं दूतीरसरं पराकात् ।

न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा, हताइन्द्रेणपणयः शयध्वे ॥

अन्वय-- अहं तं दभ्यं न वेद [अपितु] सः दभत्, यस्य दूतीः [अहं] पराकात्

इदम् असरम् । स्रवतः गभीराः तं न गूहन्ति [हे] पणयः, हताः

[यूयं] शयध्वे ॥

अनुवाद-- मैं उसको कष्ट पहुँचाया जाने वाला नहीं समझती; [अपितु] वह

[आपको] भी [कष्ट देता है], जिसकी दूती मैं बहुत दूर से यहाँ

आई हूँ। बहती हुई गहरी जल वाली नदियाँ उसको छिपाती नहीं

है (रुकती है), इन्द्र द्वारा मारे जाकर तुम लोग, (हे) पणियों (पृथि-
वी पर) शयन करोगे (मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे) ।।

टिप्पणी — गूहन्ति - छिपाती है; "गुहु" धातु लट् लकार प्रथम पुरुष बहु-
वचन; सायण -- (ऋ0भा0 । "संवृण्वन्ति" "आच्छादयन्ति"
"गुहूसंवरणे" भौवादिकः ।; वेङ्कट — "प्रच्छादयन्ति ।
विल्सन—" conceal " "छिपाना"।, ग्रिफिथ - " hide "
"छिपाना" ।; ग्रासमैन - (ऋ0। " unter " "छिपाना" ।;
गेल्डनर- (ऋ0। zudecken "छिपाती है" ।; ।।

अतएव इसका अर्थ "छिपाती है"उचित है ।

पणयः— हेपणियों (व्यापारियों)।; यास्क - (निरुक्त। "पणयः का अर्थ
है व्यापारियों।; "पणि" शब्दस्य, प्रथमा बहुवचन । "पणिर्वि-
णिग् - भवति"। "पणि का निर्वचन व्यवहार (लेनदेन) अर्थ वाली
पण धातु से किया है । वह पणन (व्यवहार) करता है इसलिए
पणि है पण + इ पणि । सायण — (ऋ0भा0। "हे पणयः" ।;
वेङ्कट-- (ऋ0भा0। "पणयः"।; विल्सन -(ऋ0ऋ0भा0। " Panis
पणियों" ।; ग्रिफिथ - (ऋ0। " Panis " हे पणियों"।;
ग्रासमैन - (ऋ0भा0। - Pani's "पणियों ।; गेल्डनर- (ऋ0।
" Pani's पणियों"।; ।।

अतएव इसका " हे पणियों" अर्थ उचित है ।

शयध्वै — शयन करोगे ।

पाश्चमेदादिनिपात: ।"— वैद्-कट — ।भ०। "विनीत्त"।; विल्सन- ।टि०भ०। " subdues " "अधीन रखना"।; ग्रिफिथ- ।भ०। can punish "कष्ट दे सकता है" ।; गेल्डनर- ।भ०। "betort "मारना।कष्ट पहुँचाना।, ग्रासमैन-।भ०। doch "रास्ट्र पहुँचाता है"।;

अतएव इसका अर्थ "कष्ट पहुँचाता है" उचित है ।

इमा गाव: सरमे या ऐच्छ: परि दिवो अन्तान्त्सुभगे पतन्ती ।
कस्ते एना अव सृजादयु ध्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा ।।

अन्वय- ।हे। सुभगे सरमे, दिव: अन्तान परिपतन्ती इमा: गाव:, या: ।त्वम्। ऐच्छ:, एना: ते क: अयुध्वी अव सृजात । उत अस्माकम् आयुधा तिग्मा सन्ति ।।

अनुवाद-- हे सरमा, आकाश की छोर तक चारों तरफ घूमती हुई इन गायों को, जिनकी तुमने इच्छा की है, हे सौभाग्यवती, तुमसे से कौन इसे बिना युद्ध किये हुए मुक्त करा सकता है ? और हमारे शस्त्र भी तीक्ष्ण हैं ।

टिप्पणी- ऐच्छ: — इच्छा की है।,

"इच्छ" धातु "इच्छा करने" के अर्थ में, मध्यम पुरुष एक वचन, , notunaccented because preceded by या: ।, (ए.स.व.ग ।page 179 ।) ।; सायण- ।भ०सं०। कामयसे"।; वेङ्-कट + ।भ०। "ऐच्छ:"।; विल्सन-।टि०भ०। " demandest " "माँग की है।; ग्रिफिथ- ।भ०। " thou acceptest "तुमने इच्छा की है।,

ग्रासमैन— (पु0) "begehrtest" "इच्छा की है" ।;

गेल्डनर — (पु0) "suchtest" "इच्छा की है ।

अतएव इसका अर्थ "इच्छा की है" उचित है ।

तिग्मा — तीक्ष्ण, अर्थात तेज; Nom बहुवचन (नपुंसकलिंग)

temination नि is often dropped (ब्रा० सू० Pan VII 1.31); सायण— (पु0) "तीक्ष्णानि" ।; वेङ्कट— (पु0) "तिग्मानि" ।; विल्सन— (व0पु0) "sharp" "नुकीले या तेज "।; —ग्रिफिथ— (व0पु0) "sharp pointed" "तेज अग्रभाग वाले" ।; ग्रासमैन— (पु0) "sharp" "तीक्ष्ण" ।; गेल्डनर— (पु0) "scharfe" "नुकीले या तेज " ।;

अतएव इसका अर्थ "तीक्ष्ण" उचित है ।

अयुध्वी— बिना युद्ध किये;

यह "संग्रहारण, gerund in त्वी, त्वा का प्राचीन रूप; नञ् तत्पुरुष समास ।, (T.N.V.SP.179) ।; सायण— (पु0) अयुद्ध्वा; युधेः क्त्वाप्रत्यये "स्नात्व्यादयश्च" इति निपातितः। नञ्समासत्वात् ल्यबादेशाभावः । नञः प्रकृति स्वरत्वम्" ।; वेङ्कट— (पु0) "अयुद्ध्वा "।; विल्सन— (व0पु0) "without a contest" "बिना युद्ध किये हुए" ।; ग्रिफिथ— (पु0) "without a battle" "बिना युद्ध के " ।, ग्रासमैन— (पु0) "kampf gewehren" "बिना युद्ध के" ।; गेल्डनर (पु0)

"kampf perausgeben ? " " बिना युद्ध किये हुए" ।;

अतएव इसका "बिना युद्ध किये" उचित है ।

अवसृजात्— मुक्त करा सकता है;

सृज धातु + अव, " मुक्त कराने" के अर्थ में, उत्तम पुरुष एकवचन।;

{T.N.V.S-179 page}. सायण-{पृ0} "अस्मात् पर्वता-दवसृजेद् ।

विनिर्गमयेद्। वृजैलेंटिल्पद्.।; पेह्-कट - {पृ0} "अवसृजत्" ।;

विल्सन—{पृ0पृ0}" will give up " "छोड़ेगा" ।; ग्रिफिथ-

{पृ0} " will loose " "मुक्तकरेगा ।; गेल्डनर- {पृ0पृ0}

"mocht " "मुक्त करने के अर्थ में ।, ग्रासमैन -{पृ0} " ohne"

"छोड़ना" ।;

अतएव इसका अर्थ "मुक्त करा सकता है" उचित है।

अलेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः ।

अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पति व उभया न मृळात् ।।

अन्वय—{हे} पणयः, वः वचांसि अलेन्या । {युष्माकं} पापीः तन्वः अनि-

षव्याः सन्तु:, वः पन्थाः एतवे अधृष्टः अस्तु, {किन्तु} बृहस्पतिः

वः उभयान मृळात् ।

अनुवाद— {हे} पणियों, तुम्हारे वचन शस्त्र के आघात से सुरक्षित, तथा

पापी शरीर बाणों के निशान से बचने वाले हो सकते हैं, तुम्हारे

पास पहुँचने के लिए मार्ग अगम्य हो सकता है, किन्तु किसी {भी}

प्रकार से बृहस्पति दया नहीं करेंगे ।

टिप्पणी- असेन्या - शस्त्र के आघात से सुरक्षित; सायण- (90) "असेन्या असेन्यानि । सेनार्हाणि न भवन्ति । सेनाशब्दात् तदर्हतीत्यर्थे "छन्दसि च" इति यत्प्रत्ययः । समासः ।, "ययतो चातदर्थे, पा०सू०6•2•156) इत्युत्तरपदान्तोदात्तत्वम्" । वेङ्•कट - (90) "असनीयानि" ।; विल्सन-5(80)01 " not in the place of armies "सेना की जगह में नहीं"।; ग्रिफिथ- (90) " weak for wounding " "घायल होने के लिए ग्रासमैन- (90) " eure worte''ready with weapobs' " "शस्त्र के साथ तैयार" ।; गेल्डनर -(90) " keine soldaten' unsoldierly or not inimical "शस्त्र के आघात से सुरक्षित ।; ओल्डेनबर्ग- (90)" Proof agaibst darts' "पीटर्सन - (90) " immune from (the blows of) weapons "हथियार से सुरक्षित " ।; रॉथ- " not pitting' not wounding.not/ dangerous " जो मारा न जाय, घायल न हो खतरनाक न हो" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "शस्त्र के आघात से सुरक्षित " उचित है।

अनिषव्या— बाणों के निशान से सुरक्षित ।,

सायण- (90) "इषव्याणि न सन्तु- पराक्रमरहितत्वेन । पूर्ववद् यं प्रत्ययः । "ओर्गुणः (पा०सू० 6•4•146) इतिगुणः । स्वरश्च तद्वत् । वेङ्•कट-(90) " नह बाणान् तथा अवेधितव्या"।; विल्सन -7(90) " not be equal to arrows "बाणों की

सानने नहीं किया जा सकता" ।; ग्रिफिथ - ।0। " arrow proof वाणों से सुरक्षित ।; ग्रासमेन- ।0। " cure boseb वाणों के आघात से सुरक्षित "।; गेल्डनर -" Mogen ewe वाणों से सुरक्षित "

अतएव इसका अर्थ (वाणों के निशान से सुरक्षित " उचित है ।।

बृहस्पतिः -- बृहस्पतिदेवता;

निरुक्त (1-7)-- "वाणी का पति" अर्थात्बृहतो वाणीनांपतिः बृहस्पति है । इसके प्रथम घटक "बृहद्" का "पति" के साथ समास होने की स्थिति में "द्" का लोप और "स्" का आगम हो जाता है। "बृहत" का निर्वचन यास्क ने उस बृह धातु से माना है (बृह+ अत बृहद्) जिससे ब्रह्म और ब्रह्मा शब्द निष्पन्न होते हैं । सायण- ।0। बृहस्पतिः इन्द्रप्रेरितः ।; " वेंकट - ।0 भा0। बृहस्पतिः"।, विल्सन- ।50।0। " Brihaspati " "बृहस्पति"।; ग्रिफिथ- ।50।0। " Brihaspati " "बृहस्पतिः"; ग्रासमेन- ।0। " Brihaspati " "बृहस्पतिः"।; गेल्डनर- ।0। " Brihaspati " "बृहस्पति" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "बृहस्पति (देवता) उचित है ।।

युगमव" (पा०सू० 6-2-5) इति धातोः प्रत्ययस्य च युगमदस्तव्यन्।
तन्नेतुमाह।" वेङ्कट- (पु०भा०) "तव्यौ" "पहुँचने के लिए" ।;
विल्सन - (ह०पु०) "to follow " अनुसरण करने के लिए "।,
ग्रासमैन -(पु०) " such him "जहाँ तक पहुँचने के लिए " ।;
गेल्डनर- " such zu " पहुँचने के लिए"।;

इस प्रकार इसका अर्थ "जाने के लिए" उचित है ।।

अयंनिधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः ।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ ।।

अन्वय - (हे) सरमे, गोभिः अश्वेभिः वसुभिः न्यृष्टः अयं निधिः अद्रिबुध्नः।,
तं (निधिं) पणयः, ये सुगोपाः (सन्ति), रक्षन्ति । (त्वं) रेकु
पदम् अलकम् आ जगन्थ ।।

अनुवाद-- हे सरमा, गायों , अश्वों तथा निधियों से भरा हुआ यह खजाना
पर्वतों से ढका हुआ है। पणि, जो कुशल रक्षक हैं, इसकी रक्षा
करते हैं, तुम व्यर्थ में इस खाली स्थान पर आई हो ।।

टिप्पणी - अद्रिबुध्नः-- पर्वतों से ढका हुआ है, सायण- (पु०) "बन्ध बन्धने"
बन्धेर्ब्रधि- बुधी च" (उ०सू० 3-5) इति नक्प्रत्ययो बुध- इत्यादिशः
अद्रिबन्धको यस्य तादृशः ।" वेङ्कट - (पु०) "ऊर्मिभिः निहितः"।;
विल्सन- (ह०पु०) " secured in the mountain
पर्वतों में सुरक्षित "।; ग्रिफिथ- (पु०) " paved with the
rock "पर्वतों या चट्टानों से सुरक्षित "।; ग्रासमैन- (पु०)

" watchful keepers " पूरी तरह से नजर रखने वाले"।;

ग्रासमैन- ।पृ0। " gute wachter"

"कुशल रक्षक"।; गेल्डनर- ।पृ0। " watchful guards'

"कुशल रक्षक "।; gute wachter 'watchful guards

अतएव इसका "कुशल रक्षक" अर्थ उचित है ।

रेकु — (रिक्त या खाली),

सायण- ।पृ0। " रेकु शङ्कितम् । औणादिक उप्रत्ययः । शङ्कित "।,

मेकडानेल — (S.E.Dic) rek-u a vrik empty, deserted

place); वेङ्कट- ।पृ0। "रिक्तम्" ।, "खाली"।;

विल्सन- ।वि0पृ0। " lonely " "एकान्त" ।;

ग्रिफिथ- ।पृ0। " lonely " "एकान्त" ।;

ग्रासमैन- ।पृ0। " lev " एकान्त ।;

इस प्रकार इसका वास्तविक अर्थ "रिक्त" ही हुआ ।।

रक्षन्ति — रक्षाकरते हैं; "रक्ष धातु, लट्लकार प्रथम पुरुष

बहुवचनसायण- ।पृ0। "पालयन्ति" ।; वेङ्कट- ।पृ0। "रक्षन्ति" ।;

विल्सन-।वि0पृ0। " protect" " रक्षा करते हैं" ।; ग्रिफिथ-

।पृ0। " guard " " सुरक्षा करते हैं।; ग्रासमैन - ।पृ0। "

gute guard " " रक्षा करते हैं ।; गेल्डनर — ।पृ0। "

gute guard " रक्षा करते हैं ।; अतएव इसका अर्थ "रक्षा

करते हैं" उचित है।।

लुङ् इति जातौ लुङ् । नुमागमः । लीये गान्तस्य लोपः । षष्ठा ।

लिङ्•ल्पनुं । स्वरःछान्दसः ।; वेङ्•कट ।अ०। "वमन्त्येव" ।;

विल्सन— ।द०अ०। "will retract "उगलनापड़ेगा।; ग्रिफिथ

।अ०।"will unspoken " "आकथन करना पड़ेगा ।;

ग्रासमैन— ।अ०। "gereuen " "उगलना पड़ेगा ।;

गेल्डनर— ।अ०। "entjawen " निकालना पड़ेगा ।;

अतएव इसका अर्थ " उगलना पड़ेगा" उचित है ।"

विभजन्त — बाँट लेंगे।

वि+ भज् "सेवकतौ, लुङ्• लकार, आत्मनेपद, उत्तमपुरुष बहुवचन ।;

सायण— ।अ०। "विभागं कुर्युः । अत्रापि पूर्ववत् सार्वकालिको

लुङ्• ।;" वेङ्कट— ।अ०। "वि अभजन्" ।; विल्सन — ।अ०।

" will partition "बाँट लेंगे ।; ग्रिफिथ— ।अ०। "

will part " बाँटेंगे ।;

इस प्रकार इसका बाँट लेंगे" अर्थ उचित है ।

गोनाम् — ।गायों के ।;

सामान्यतया "गो" का बहुवचन "गवाम्", परन्तु जब वह पद के

अन्त में आवे तो इसको "गोनाम्" किया जाता है। । गोः

पदान्ते – पाणिनि 7–1–57। ।; सायण— ।अ०। "गोः पदान्ते

इति छन्दसि नुडागमः ।; विल्सन — ।अ०। " of cattle.

"गायों के " ।; ग्रिफिथ ।अ०। " of cattle , "गायों के " ।;

वास्तविक
इस प्रकार इसका अर्थ " गायों के" हुआ ।।

आगमन्— (आयेंगे)।

आ, गम् धातु, लुङ् लकार उत्तमपुरुषबहुवचन ।; सायण— (पृ०) "आगच्छेयुः । गमेः "छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः इति सार्वकालिको-लुङ् लृदित्वाच्च्लेरङ् । आगत्य ।", वेङ्कट —(पृ०) "आ अगच्छन्"।; विल्सन – (पृ०पृ०) "will come "आयेंगे" ।;

ग्रिफिथ— (पृ०) "will come " "आयेंगे"

ग्रासमैन— (पृ०) "werden kommen will come "आयेंगे" ।;

गेल्डनर— (पृ०) " werden kommen, 'will come, आयेंगे" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "आयेंगे" उचित है ।

एव च त्वमरमे आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन ।

स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम ।।

अन्वय— (हे) सरमे, दैव्येन सहसा प्रबाधिता एव त्वं च आजगन्थ, त्वा स्वसारं कृणवै, पुनः मा गाः । (हे) सुभगे गवां ते अप भजाम ।

अनुवाद— इस प्रकार, सरमा, अगर तुम देवताओं की शक्ति से पीड़ित की गई आई हो, तो हम तुम्हें बहन बनाते हैं, फिर मत जाओ । हम, हे सौभाग्यवती, तुम्हें गायों का अलग हिस्सा देंगे ।

टिप्पणी — आजगन्थ— आई हो; आ, गम् "जाने के अर्थ में, लिटलकार मध्यमपुरुष एकवचन ।; (V.G.V.S page 183)

सायण— (पृ०) "आगतवत्यसि ।, "गमेर्लिटि थलि इ..." इतीट-नि-षेधाभावः । ... "..." ...

योग विभागाद् समास: । "तिङि॰ चो॰दा॰त्तवति" इति गतेर्निघात:

निस्स्वर: ।; वेङ्॰कट- ।ऋ0। " आजगन्थ ।; विल्सन--- ।ऋ0ऋ0।

" hast come , "आई हो।; ग्रिफिथ --- ।ऋ0। " hast come

" " आई हो" ।; ग्रासमैन--- ।ऋ0। " bist kommen

host come "आई हो"।; गेल्डनर -।ऋ0। " bist kommen

" । "आई है ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "आई हो" उचित है ।।

प्रबाधिता--- पीड़ित की गई; बाध + क्त, "पीड़ित करने के अर्थ में,

स्त्रीलिंग, एकवचन ।; (N.T.V.S 185) सायण--- ।ऋ0।

"प्रबाधिता यथा तथा बल्बूरं प्राप्य तत्र स्थिता गा दृष्ट्वा

पुनरागच्छेति तेन प्रपीडिता ।; वेङ्॰कट - ।ऋ0। "पीडिता", ।

"पीड़ित की गई" ।; विल्सन - ।ऋ0ऋ0। " constrained

बाध्य किया गया ।" ।; ग्रिफिथ - ।ऋ0। " forced

"बाध्य किया गया ।;

अतएव इसका अर्थ "पीडित की गई" उचित है ।।

कृण्वै --- बनाते हैं;

कृ "बनाने के अर्थ में" आत्मनेपद प्रथमपुरुष एकवचन (लाक्षणिक अर्थ

में) सायण- ।ऋ0। "करवै । समुच्चायकपदेकवचनम् ।; वेङ्॰कट ---

।ऋ0। "कुर्व:" ।; विल्सन--- ।ऋ0ऋ0। " will make

"बनायेंगे"।; ग्रिफिथ - ।ऋ0। " shall be " "होगा" ।;

गेल्डनर--- ।ऋ0। " will machen । " बनायेंगे ।;

इस प्रकार इसका अर्थ " बनाते हैं" उचित है ।

सकलादिव्येन— देवताओं की शक्ति से; सायण- ।ऋ0। "देवसम्बन्धिनाबलेन"। देवताओं के बल से" ।; वेङ्कट- ।ऋ0। "दिव्येन बलेन" । "देवताओं के बल से।; विल्सन- ऋ0ऋ0। " by divine power / "दिव्य शक्ति द्वारा ।; ग्रिफिथ - ।ऋ0। " By celestial Right/ दैवीय अधिकार द्वारा"।; गेल्डनर- ।ऋ0। " gerotight gewalt "दैवीय शक्ति द्वारा"।; ग्रासमैन- ।ऋ0। " gewalt der Gotter "देवताओं की शक्ति द्वारा "।;

इस प्रकार इसका अर्थ - "देवताओं की शक्ति से" उचित है ।

गा:— जावो;

। T.V.R.S 185। से " जाने के अर्थ में, sub मध्यम पुरुष, एक वचन । सायण- ।ऋ0। "गच्छ"/"जावो"।; वेङ्कट - ।ऋ0। return "गा:" / "जाओ" ।; विल्सन - ।ऋ0ऋ0। " return "वापस हो" ।; ग्रिफिथ— ।ऋ0। " turn /"वापस हो" ।; ग्रासमैन— ।ऋ0। " geh/go "जाओ" ।; गेल्डनर— ।ऋ0। geh/go "जाओ ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "जावो " उचित है ।।

भजाम— हिस्सा लेंगे

भज "बाँटने के अर्थ में, sub उत्तम पुरुष एक वचन ।; "भज विभक्तायाम्" ।; सायण—।ऋ0। "विभागं करवामेत्यर्थ ।; वेङ्कट — ।ऋ0। "भजाम इति " ।; "बाँट लेंगे " ।; विल्सन—

ग्रिफिथ--।द०। " will give / देंगे " ।; ग्रासमैन--।द०।

wir geben/will given "देंगे" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ जिस्ता लेंगे, अर्थ उचित है।।

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः ।

गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः ।।

अन्वय-- अहं भ्रातृत्वं न वेदः नो स्वसृत्वम्, इन्द्रः घोराः अङ्गिरसश्च विदुः

यद् [अहम्] आयम्, [ते] मे गोकामाः अच्छदयन् । अतः [हे] पणयः,

वरीयः अप इत ।।

अनुवाद-- मैं न तो भाईपना जानती हूँ, न बहनपना; इन्द्र तथा भयानक

अङ्गिरस इसको जानते हैं। जब मैं आई, वे गायों की इच्छा करने

वाले मालूम पड़े । अतः हे पणियों, [इसकी अपेक्षा] किसी

विस्तृत स्थान पर चले जाओ ।।

टिप्पणी --

अच्छदयन् - मालूम पड़े;

छद् "मालूम" के अर्थ में; caus-impf उत्तमपुरुषबहुवचन/

सायण--।द०। "पुरुषदीयं स्थानमाच्छादयन्ति ।"छद अपवारणे" ।;

ग्रिफिथ- ।द०। " seemed " / मालूमपड़े।; ग्रासमैन- ।द०। "

schienen / " मालूमपड़े" ।; गेल्डनर - ।द०।- " schienen /

"मालूमपड़े ।;

अतएव इस शब्द का अर्थ "मालूम पड़े" उचित है ।।

आयय् — आई;

सायण- ।७। " इन्द्रादीन्प्राप्नवत् । "अय पय गतौ"। लङि·-त्मनू"।; वेङ्कट- ।७।"आयम"/ "आई ।; विल्सन- ।८०७। came / "आई।; ग्रिफिथ- ।७। "departed /"पहुँची"।; गेल्डनर- ।७। "ging = "गई अर्थात् पहुँची" ।; ग्रासमैन - ।७। " ging /"गई" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ "आई" उचित है ।।

वरीय: — किसी विस्तृत स्थान पर,

सायण- ।७। उरु ,(विशाल)+ ईयसुन्, उरु का वर आदेश अर्थात् वर + ईयसुन् प्रत्यय = वरीय: ।, प्रियस्थिर: । प्रभृतानि(र) देशं गच्छत । वेङ्कट- ।७। "अस्मात्स्थानाद् दूरम् "/इस स्थान से दूर " ।; विल्सन- ।८०७। "to a distant spot"दूरस्थान को" ।; ग्रिफिथ- ।७। " into distance "/ " दूरस्थान में" ।; गेल्डनर-।७। von dannen / दूरस्थान में ।;

अत: इसका अर्थ "किसी विस्तृत स्थानपर" उचित है ।।

घोरा: — भयंकर; विशेषण,

सायण- ।७। "शत्रुणां भयंकरा:।,

वेङ्कट-।७। "घोरा:"। "भयंकर" ।; विल्सन- ।८०७।" terrible /"भयानक" ।; ग्रिफिथ- ।७। "dread । "भयंकर।;

ग्रासमैन- (जo) " grausen " (भयंकर) ; यह अङ्गिरस ऋषि का विशेषण है ।।

अतएव इसका अर्थ "भयंकर" उचित है।।

दूरमित पणयो वरीय उद्गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन ।

बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळ्हाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः ।।

अन्वय— (हे) पणयः (यूयं) वरीयः दूरम् इत । गावः ऋतेन मिनतीः उद् यन्तु निगूळ्हाः याः (गाः) बृहस्पतिः अविन्दत् सोमः ग्रावाणः विप्राः ऋषयः च (अविन्दन्) ।।

अनुवाद— हे पणियो, (इसकी अपेक्षा) किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ, छिपी हुई गायें जिनको बृहस्पति ने पता लगाया है। (जिनको) सोम ने, पत्थरों ने तथा बुद्धिमान ऋषियों ने (पता लगाया है, चट्टानों के आवरण को) तोड़ती हुई, सत्यनियम के अनुकूल बाहर निकलें ।।

टिप्पणी— मिनती - चट्टानों को तोड़ती हुई; मि- "नष्ट करने" के अर्थ में + शतृ + ङीप् बहुवचन । (T. H. V., 8 page 188)

सायण- (जo) मिनतीः "मिनत्यो द्वारस्य पिधायकं पर्वतं हिंसत्यो विदारयन्त्यः उद् यन्तु तस्मादुद्गच्छन्तु । यद्वा । मिनतीः व्यत्ययेन कर्मणि शतृ, मीयमाना युष्माभिः बाध्यमानाश्च गावः उद्यन्तु । इति ।। वेङ्कट- (जo) "पातालाद्

तादादिकः तस्मात् "छन्दसि लुङ्-लङ्-लिट" इति भविष्यदर्थे लङ् । "सेनुपापीनाम्" इति नुमागमः।; वेङ्कट- ।पृ0। "अविन्दत्" । "खोज निकाला है"।; विल्सन - ।पृ0पृ0। " have found / पता लगाया है।, ग्रिफिथ- ।पृ0। have found / "पता लगाया है" ।; गेल्डनर- ।पृ0। " fond/found /"पाया है" ।;

इस प्रकार इसका अर्थ " खोज निकाला है" उचित है ।।

उत्यन्तु - बाहर निकलें,

सायण- ।पृ0। "पर्वतादुद्गच्छन्तु"।; इ "जाने " के अर्थ में, impv उत्तम पुरुष बहुवचन।; विल्सन- ।पृ0पृ0। " come forth / बाहर निकलें ।; ग्रिफिथ- ।पृ0। " come forth, बाहर निकलें।, ग्रासमैन- ।पृ0। " kommen / "बाहर आवें ।; गेल्डनर - ।पृ0।-kommen / बाहर आवें"।; ।

इस प्रकार इसका अर्थ "बाहर निकलें" उचित है।।

तृतीय-भाग

मन्त्रानुक्रमणिका

शब्दानुक्रमणिका

316-	निगुनबा	10/108/11	278
317-	अविचद्	•	278
318-	उमेन्द्र	•	279

19- The Students's Sanskrit-English Dictionary — V.S. Apte — Motilal Banarsidass Delhi, Patna, Varanasi

20- शतपथ ब्राह्मण

21- ऐतरेय ब्राह्मण

22- प्राचीन भारतीय साहित्य — विन्टरनित्स — मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली वाराणसी पटना

23- ऋग्वेद-संहिता — N.S. Sontakke — वैदिक संशोधन मण्डल तिलक मेमोरियल पूना-2

24- ऋग्वेद: — विश्वबन्धु — विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर पंजाब

25- Original Sanskrit Text — J. Muir [हिन्दी-अनुवाद]

26- संवाद सूक्तों का विनियोग — डा० चतुर्वेदी [नागपुर-विश्वविद्यालय]

27- The Vedic Selection — Macdonald

28- The Vedic Selection — Peterson

29- Harward Oriental Series — Geldner

30- The Hymns of Rigved — Griffith

31- The Hymns of Rigved — Grassmann